

मुहूर्त्तकल्पद्रुम भाषा

जिसमें

ज्योतिष शास्त्रानुसार, यज्ञोपवीत, बिवाह, यात्रा, गृहारंभ और कूपादि खोदनेके मुहूर्त्त अच्छे प्रकार छन्दोंमें कहेगये हैं

जिसको

श्रीमहाराजअचलसिंहजी की आज्ञानुसार कवि कुलाग्रगण्य शिवनाथ त्रिपाठीने निर्मितकिया वही लक्ष्मण पुरान्तर्गत मुहल्लानरही निवासि पण्डित भगवान्दीन उपरोहितके द्वारा वाजपेयि पण्डित रामरत्नके प्रबन्धसे

प्रथमबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ानेमें छपा
फरवरी सन् १८९२ ई०

मिताक्षरासटीकका विज्ञापन ॥

संसारमें मर्यादा स्थितरखनेके अभिप्राय और सर्बसाधारण के उपकारदृष्टिसे भगवान् याज्ञवल्क्यने अनेकप्राचीनआचार्यों और महर्षियों के मतलेकर मिताक्षरा नामक धर्मशास्त्र "आचार" "व्यवहार" और "प्रायश्चित्त" नामक तीनभागोंमें निर्माण कियाथा। यह "याज्ञवल्क्य स्मृति" भारतवासी मात्र चतुर्वर्णों का मुख्य धर्मशास्त्रहै और इसी के अनुसार यहांके निवासियोंके धर्मसम्बन्धी समस्तकार्य होते चलेआतेहैं॥

"आचाराध्याय" नामक प्रथमखण्ड में गर्भाधानसेलेकर मरणपर्यन्त के समस्त संस्कार चतुर्वर्णों और विविध जातियोंकी उत्पत्ति ब्राह्मण आदि चतुर्वर्णों और ब्रह्मचर्यादि चतुराश्रमोंके धर्माचरण, साधारण शिक्षा, आठप्रकारके बिवाहोंके लक्षण-- भक्ष्याभक्ष्य पदार्थोंका विवेक, दान लेने देनेकी विधि, सर्व प्रकारके श्राद्धोंका निर्णय, नवग्रहोंकीशांति राजाओं के धर्म आचारादि अनेक विषय विस्तारपूर्वक वर्णन कियेगये हैं॥

"व्यवहारकाण्ड" में न्यायसभानिरूपण, सबप्रकारके दीवानी और फौजदारी मुक़द्दमोंके निर्णय करने की विधि, भूमि सम्बन्धी झगड़ोंका विस्तार, ऋणलेने, देने, गिरवीरखने और ब्याजलगानेकी विधि धरोहर का विवाद, साक्षियोंके सत्यासत्य का विचार और दण्ड, दस्तावेजों का विचार, खरे, खोटे और कमतौल वस्तुओंका विचार, विष देनेवाले का विचार, नाते-दारीका वृत्तान्त, हिस्सा बांटकी विधि, संस्कारविहीन भाई बहिनें। के संस्कारके अधिकार और औरविधि, १२ प्रकारके पुत्रोंका वर्णन, वारिस होनेका विचार, दत्तकलेने की विधि, स्त्रीधन और कन्याधन का निर्णय, सीमा के झगड़ों का निपटारा, पशुव्यतिक्रमविचार, परधन, परस्त्रीहरण आदि का विचार, देय अदेय



मुहूर्त्तकल्पद्रुम भाषा ॥

दोहा ॥

सघनअघनकेदलनको तुवसमानकोहोहि । हरज विनायककोहरैविघनविनायकतोहि १ छविकदंबलखि अंबकेउमड़तमोदअखण्ड । कलरवकरिकरिवरबदनफेर तशुण्डादण्ड २ अतिसुदेशमयआचरणदेशनकोशिरताज । सबसुखकनबगिसरनगर वैसनृपतिकोराज ३ अमलचरिततिहिदेशकेज्योंसुरसरिकोसेतु । तहांधरमआचारसुखदिनादिनदूनोंदेतु ४ प्रगटभयोतिहिदेशमेंजाको वेशप्रभाउ । अरिदलमरदनसुखसदनमरदनरैयाराउ ५ तिहिमरदानेरायतेप्रगटभयेअचलेश। जसकदंबजाकेविमलवरणिसकेनहिंशेश ६ जैतपत्रजगाजिनलयोशत्रुनसुयशनशाइ। निजबशकरितुरकानदलकसौमुठीमेंआइ ७ सभामध्यबैठेहुतोएकसमयअचलेश। तिनकविशंभूनाथ सोंकीनोयहैनिदेश ८ जैसेजातकचंद्रिकाकरिदीनीकरिनेहु। त्योंमुहूर्तचिंतामण्योभाषामेंकरिदेहु ९ तिनकोआयसु पाइकैतबकविशंभूनाथ । गणपतिगिरिजागिरिशकोगुरु

कोनाग्योमाथ १० संवतबीतिगयेतहांअगिनिव्योमवसु चन्द। तबमुहूर्त्तकल्पद्रुमोप्रगटकरयोसानन्द ११ मेटनवारोकौतुहहैजोनृपशासनहोइ। मैंभाषाज्योतिषकरयो बिलगुनमानौकोइ १२ यदपिकाव्यदूषणरहितदुरजन दूषततताहि॥ बिगरोदेतबनाइहैसजनसाधुसमौराहि १३ अथतिथीशाः॥ अगिनिब्रह्मगिरिजागणपअहिषटमुखदिनराज। शिवदुर्गायमराजकहिविश्वदेवाशरताज १४ विष्णुकामशिवचंद्रमाकहेतिथिनकेकन्त। पितरअमावसके कहेजेजगबड़ेमहन्त १५॥ अथ तिथीनांसंज्ञाफलानि॥

अग्नि	ब्रह्मा	गौरी	गणेश	सर्प	षटमुख	रवि	शिवा	दुर्गा	यम	विश्व	विष्णु	काम	शिव	शशि	पितर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०

परिवाछठिएकादशीइनकोनन्दानाम। शुक्रयोगतेंयोग ह्वैजातासिद्धिअभिराम १६ द्वीजसप्तमीद्वादशीभद्राइहू बखानि। येहोतीबुधकोमिलेसकलसिद्धिकीखानि १७ येसबजयाकहावतींआठेंतेरसितीज। सफलहोतकुजके मिलेजोकछुकरियेबीज १८ नौमीचौथिचतुरदशीयेरि- क्तातिथिआहिं। होतसिद्धिजो शनिकहूंमिलेआनिइनमाहिं १९ दशमी पांचे पूर्णिमा इन्हें पूर्णा जानि। येऊमिलिगुरुबारसोंह्वैजा तींसुखदानि २० नन्दारविकुजको मिलेभद्राशाशिभृगुबार। गुरुरिक्ताबुधकोजयाशनिपूर- णाउदार २१ अमृतयोगयाकोकहैंजेपंडितपरवीन।

नंदा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा
१	२	३	४	५
६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५
शु०	बु०	भौ०	श०	गु०

कोऊकोऊकहतहैंमृत्युयोगप्राचीन २२ प्रथमभाग में
अशुभयेदूजेमध्यमजानि । तीजेशुभ सितपक्षमें पं-
डितकहतबखानि २३ शुभऔमध्यमअशुभयेजानिअ
ध्यारमाह । ज्योतिषकोमतसमुभिकैकहतकविनकेनाह
२४ ॥अथदग्धयोग ॥ भरणीचित्राउत्तराषाढ़धनिष्ठाजानि ।

नंदा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा
सू० मं०	शु० चं०	बुध	गुरु	शनि

बहुरि उत्तरा जेसठा पूषानखतब
खानि २५ दग्धयोगह्वैजातयेरब्या
दिककोपाइ । हैंनिषिद्धशुभका
जकोकहतकाविनकेराइ २६ ॥ अथक्रकचयोग ॥ योगक्रियेति
थिबारकोजहाँत्रयोदशिहोइ । क्रकचयोगताकोकहैंकवि
पंडितसबकोइ २७ ॥ अथअधमयोग ॥ होइप्रतिपदाबुधको

र	चं	मं	बु	बृ	शु	श
भ	चि	उ	ध	उ	ज्ये	रे

सातैंकोदिनराज । अध
मयोगयाकोकहैं गणकन
केशिरताज २८॥अथदंतधावनेनिषिद्धा॥ अमा षष्ठी प्रतिपदा
ये तीनोंतिथिमाह । बर्जनीय दात्योनि हैं कहत कविनके
नाह २९ छठिआठैंचौदशिऔअमा। तेलमांसमुंडनऔ
बामा ॥ क्रमतेछोड़िदीजियेचारि । पंडितसज्जनकहत
विचारि ३० तेरसिबहुरिहैजदशमीको ।उबटनछुयेहोत न
हिंनीको॥सातेंनवैंअमावसआये। हैंनिषिद्धअँवरासोंन्हा-
ये ३१॥दोहा॥रविशिवपांचेंतीजछठिआठैंनौमीपाइ।रब्या-
दिककेबारकोदग्धयोगह्वैजाइ ३२ वेदअंगनगद्वीजबसु
नवनगबरणतलोग । रब्यादिककोजोमिलैप्रगटहोतवि-
षयोग ३३ रविरसनगबसुनन्दऔदिशामहेशगनाइ ।
येरब्यादिककोमिलैअगिनियोगह्वैजाइ ३४ मघाबिशा-
खाशंभुऔमूलकृत्तिकापाइ । रोहिणिकरअर्कादितेयम-

घंटकह्वैजाइ ३५ ॥ अथमासेशून्यातिथयः ॥ चौपाई ॥ चैतमास आठेनवखंडित । ब्याधवमेंदुवासिकहिपंडित ॥ पौषचौथिपंचमीबखानी । द्वीजतीजसावनमेंजानी ३६ परिवा द्वीजभाद्रपदकही । क्वारयकादशिदशमीचही ॥ नगआठेमारगकेमास । दुहूंपक्षकीकहौंप्रकास ३७ अबहौंसुकुल पक्षकीभाषत । ज्येष्ठमासतेरसि अभिलाषत ॥ सातैं हैअषाढ़मेंजानो । चौदशि कातिक मासबखानो ३८ षष्ठीमाघतीजफागुनकी । येहैंशून्यसदाबिनगुनकी ॥ कृष्णपक्षकीभाषत हौंहठि । चौदशिजेठअसाढ़मासछठि ३९ कातिकमाघपंचमीऊनि । फागुनचौथिकहतकविशूनि ॥ शून्यतिथीइहिभांतिजनाइ । शुभकर्मनमेंकामनआइ ४० ॥

र	चं	मं	बु	बृ	शु	श	वाराः
१२	११	५	३	६	८	९	दग्धयो
४	५	७	२	८	९	७	विषयो
१२	६	७	८	९	१०	११	अग्नियो
म	वि	आ	मू	कृ	रो	ह	यमघंट

अथतिथिमिलितनक्षत्रशून्यानि ॥ दंडका ॥ परिवाकोऊषाअनुराधा द्वीजपंचमीकोमघातीन्योउत्तरातृतीयाकोबखानिये । एकादशी छठिको विरंचिको नखत शून्य द्वादशीको उरग हियेमेंअनुमानिये ॥ तेरसिको चित्रास्वाती मूलकरसप्तमी कोनवमीको कृत्तिकाप्रगटपहिचानिये । अष्टमीकोपूर्वभाद्रपदजोपरे तौ दुखदायकसकलशुभकाजनमेंजानिये ४१ ॥

अथमासनक्षत्रशून्यानि ॥ चौपाई ॥ ह्वयरोहिणिऔचित्रास्वाति । पूर्वाषाढ़पुष्यशुभजाति । बहुरिपूर्वाबासवसुनो । उतराषाढ़ श्रवणपुनिगुनो ४२ शतभिषऔरेवतीबखानहु । पूर्वभा-

द्रपदअगिनिभजानहु ॥ चित्रामघाविशाखाईश। हस्त अश्विनीकहतकवीश ४३ श्रवणमूलइंद्रभऔभरणी। यहनक्षत्रजातिहमबरणी ॥ चैतआदिदेंइंद्रतारे। शून्यहो तहँऋषिनविचारे४४ ॥दोहा॥वरणेतिथिनक्षत्रजेशून्यहो तजिहिमास। कर्मनकौनौकीजियेइनमेंबित्ताबिनास४५॥

चै	बै	ज्ये	आ	श्रा	भा	का	का	मा	पौ	मा	फा	मासाः
८ ९	१२	१३	७	२ ३	१ २	११ १०	१४	७ ८	४ ५	६	३	शु.ति
८ ९	१२	१४	६	२ ३	१ २	११ १०	५	७ ८	४ ५	५	४	कृ. ति
अ रो	चि स्वा	पू.प. पुष्य	पू ध	उ.षा श्र	श रे	पू.भा कृ	चि म	त्रि आ	ह अ	श्र मू	ज्ये भ	नक्षत्र शु.प
कु	मी	वृ	मि	मे	क	वृ	तु	ध	क	म	सिं	लग्नशु

अथशून्यलग्नानि ॥कुंभमीनवृषमिथुनऔमेषकन्यकाजौन। वृश्चिकघटधनकर्कमृग बहुरिप्रबलगजदौन ४६॥ चौपाई ॥ येलगनैंअपनेमनआनहु। चैतआदिदैशून्यबखानहु ॥ पुनिप्रतिपदकोतुलामकरकहि। बहुरितीजकोसिंहमकरलहि ४७ पांचैंमिथुनकन्यकासही। सातैधनुषकर्कहैकही ॥ कर्कटसिंहकहीनौमीको। धनुषमीनकहियकादशीको४८तेरसिकोवृषमीनकहीजै।शुक्लकृष्णक्रमतेगानिलीजै॥येलगनैंविषमातिथिपाइ।होताशून्यकहतकविराइ ४९॥ दोहा ॥ मध्यदेशमेंशून्यये मनेकरतकविराज॥ औरोंदेशनमेंकछुक करतदोषकेकाज ५०॥ अथ तिथिबारनक्षत्रमिलितदोषमाह॥ पद्धरी ॥ जोहस्तअर्कपंचमीहोइ।

१	३	५	७	९	११	१३	विषमांत.
तु	सिं	मि.	ध	कं	ध	वृ	शुक्ल
म	म	कं	क	मिं	मी	मी	कृष्ण

मंगल अश्विनि सातैसमोइ। छठि चंद्रवार मृगशिरहिपाइ॥ बुधमित्रअष्टमी मिलहिआइ ५१ भृगुरेवतीजुदशमिससमेत। गुरुपुष्यनवैसोहोइहेत॥ एकादशीजुशनिविधिनक्षत्र। यहदोषपुजकोहैअमत्र ५२॥ दोहा॥ गृहप्रवेशकुजअश्विनी गमनमंदविधियोग। पुष्यवृहस्पतिव्याहको बरजतपंडितलोग ५३॥ अथ आनंदादियोगा॥पद्धरी॥ आनंदकालदंडोबखान। धूम्राक्षधातपुनिसौम्यजान॥ पुनिध्वांक्षकेतुश्रीवत्सनाम। पुनिवज्रकह्योमुद्गरअकाम ५४ पुनिछत्रमित्रमानससरोज। पुनिकहतलुंबजेबुद्धिओज॥ उत्पातमृत्युओकाणजानि। पुनिसिद्धशुभोमृतमुशलमानि ५५ कहिगदाबहुरिमातंगरक्ष। चरथिरप्रवर्द्धकाविहुदक्ष॥ येआठबीसहमकहेयोग। निजनामरूपफलकहतलोग ५६॥ तारक॥ रविकोहयतेशशिकोमृगलीजे। कुजबारभुजंगमतेकहिदीजे॥ बुधकोकरतेमनमें अभिलाषौ। गुरुके दिन मित्रभ गनिभाषौ ५७ भृगुउत्तराषाढ़हिलैगनियेजू। शनिकेदिनरोहिणीतेभनियेजू॥ इनबारनमेंमिलिजाहिंयेतारो। तेहिद्योसमेंआनन्दयोगबिचारो ५८॥ चौपाई॥ जोनाहिंपरैनखतयेआइ। ताकोमैंअबकहतउपाइ॥ दोहा॥ पुनिप्रधाननक्षत्रैदिनतारा

तिथि वार नक्षत्र मिश्रित दोष॥

सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श
ह	मृ	अ	ऽनु	पु	रे	रो
५	५	७	८	९	१०	११

गनिलेहु । होइअंकतेबूझिकैआनन्दादिकहिदेहु ५९ ॥
चौपाई॥ध्वांक्षवज्रमुद्गरकेपांच।चारिपादमुलुंबोकेहिसाँच॥
घटिकासातगदामेंकही । धूमूकाणमुशलोइकलही ६०
रक्षमृत्युउतपातोकाल । सकलत्यागकहिबुद्धिविशाल ॥
जोअट्ठाइसयोगविचारै । सोपण्डितकबहूंनाहिंहारै६१॥
पद्धरी ॥ नखवेदविश्वनवरसखचन्दगुनि । इमिहोइभानु
तेशशिनक्षत्रपुनि ॥ सबहरतदोषयाकोसुनामसुनि ।रवि
योगपाहिभाषतउदारमुनि ६२ ॥ अथसिद्धियोगरूपमाल ॥
मूलउत्तरपुष्यअश्विनीभानुकोकरहोइ । रोहिणीश्रुतिमि
त्रचंद्रभरहैचंद्रसमोइ ॥ भौमउत्तरभाद्रअश्विनिअग्नि
सर्पसमेत। मित्रविधिकरअग्निचन्द्रभबुद्धसोंकरिहेत६३
रेवतीहयमित्रपुष्य पुनर्वसोगुरुयुक्त । अंत्यमित्रपुनर्व
सोश्रुतिअश्विनीभृगुयुक्त ॥ रोहिणीश्रुतिमंदकेदिनयुक्त
होइसमीर। सिद्धियोगप्रसिद्धभाषतसिद्धपंडितधीर६४॥
अथउत्पातादियोग ॥दोहा ॥बीसपूरबाषाढ़बसुरेवेब्रह्मबखानि ।
पुष्यउत्तराभानुतेउतपातहिजियजानि६५मित्रउत्तराषा-
ढ़सतअश्विनिमृगअहिहस्त । मृत्युयोगकहिभानुते पं
डितजनकरिकस्त ६६ ॥पद्धरी॥ इंद्रभअभिजितअरुपूर्व-
भाद्रपद । यमशंभुपितरचित्राकविंदवद । रवितेबखा
नियतकाणयोग । यहनिपटअशुभकहिजानलोग ६७
दोहा ॥ मूलश्रवणपुनिउत्तराभाद्रकृत्तिकाजान । अदिति
पूरबास्वातियेरवितेसिद्धिबखान ६८ येकुयोगतिथिवार
तेतिथिनक्षत्रहैंजौन ॥ हूणबंगखसदेशमेंवर्जनीयहैंतौन
६९ ॥ सवैया ॥ सूरसोंऔनिशिनायकसोंजिहिंअक्षमेंराहु
अठानसीठानत। छोड़ियेसोशुभकाजनकोभयेपूरणग्रास

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
०	आ	का	धू	धाता	सौ	ध्वां	के	प्रो	व	मु	छ	मि	मा	प	लुं	उ	मृ	का	सि	शु	आ	मु	ग	मा	र	च	स्थि	प्र
र	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र	ध	श	पू	उ	र
चं	मृ	आ	पू	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो
मं	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु
बु	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ
बृ	अ	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	त्रि
शु	उ	अ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	त्रि	अ	ज्ये	मू	पू
श	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	त्रि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र	ध

छमास्यलौंमानत ॥ तीनिमहीनलौंश्रधोग्रसेतिहिश्राधेकोमासलौंजानेहैजानत । पूरबश्रौंपरके दिनतीनिलौंयाविधिपंडितराजबखानत ७० ॥ दंडक ॥ चन्द्रकेलगनकूरखेचरसमेतहोइपरैंकेलगन करखचरकेश्रंशमें। सातदिनपरउतपातकेभयेतेपुनिग्रहनकेतीनिदिनरहेशशिसिंहमें॥दशदशपल

महानिशादुपहरहमें पूरबऔपरपरिहरोनिरशंसमें।ग्रहबु

अथ उत्पातादि योग चक्रम् ॥

र	चं	मं	बु	बृ	शु	श	बार
वि	पु	ध	रे	रो	पु	उ	उत्पात
अ	उ	श	अ	मृ	श्ले	ह	मृत्यु
व्य	अ	मू	भ	आ	म	चि	काण
मू	अ	उ	कृ	पू	पू	स्वा	सिद्धि

द्धपातग्रहनभको छमामास छोड़ौ कहतसुजानजपिमल्ल निजवशमें ७१ ॥दोहा॥ जन्म ऋक्षतिथिमासऔ व्यतीपा तऔविष्टि।वैधृतिबहुरिछपा हदिन कहतकविनकीसृष्टि ७२ हानिवृद्धितिथिजानिये न्यूनमासअधिमास । कुलिकपातप्रहरार्द्धऊयेसबदोष प्रकास ७३ वज्रयोगविष्कुम्भकी घटिकातीनिनिषि द्ध । पंचशूलआधोपारिघषटआतिगंडप्रसिद्ध ७४ न वनाड़ीव्याघातकीषटगंडौआतिगंड । शुभकारजको अशुभहैं पंडितकहतअखंड ७५ चौथिअंगआठैन वैरविचौदशिकेदंड । आठनन्दमनुतत्त्वदशरसताजिग नकअखंड ७६ ॥ गीतिका ॥ मनुभानुदशवसुअंगवेद भुजाघटीजबबीतई।रविआदिदैतबकुलिकयोगउदारपं डितचीतई॥ वसुअंगवारिधिनैनचौदहभानुऔदशभा- नुतैं । घटिकागयेतबकालवेलाहोतजीमहँजानुतैं ७७ दशअष्टरसवारिधिभुजासुरपतिदिनाधिपजानिये। यम घंटयोगदिनेशतेदुखकरसदाअनुमानिये॥ रसवेदलोच नइन्द्रसूरजककुभनागबखानिये । रविआदिदैयहयोग कंटकअशुभताकोखानिये ७८ ॥ दोहा ॥ रव्यादिक केअंकयेकहेसकलनिरधारि। योगहोतकुलिकादिहै स तकविकहतविचारि ७९ ॥ नरेन्द्र॥ कुलिककालवेलायम घंटककंटकचारोयोग । मंदबुद्धगुरुमंगलतेये दुगनक

हतसबलोग ॥ गनियेताहिरीतिउलटीसोंउपजैजोकुछ अंक। जानिलेहुयेदुष्टमुहूरतकहतसुकविनिश्शंक ८० दोहा ॥ हैइनचारोयोगको द्वैघटिकापरमान। यात्रामंगलकाजमें दुष्टबखानतजान ८१ ॥अथ रव्यादीनांमुहूर्त्तदोषाः॥ चौपाई ॥ रसमुनिदशवसुचौदहजानों। येरविकेदिनअंक बखानों॥वेदअंगवसुनवरसभाषे॥विश्वइंद्रशशिदिनअभिलाषे ८२ नैनरामश्रुतिअंगदिशाकहि। मंगलकेवासरमेंयेलहि॥नैनवेदबसुनवदशजेहैं। बुधकेदिनयेअंकक हेहैं ८३ द्वैरसभानुइन्द्रतिथिआहीं। येजानोगुरुकेदिन माहीं ॥ वेदपंचरसनवदशभानु। चौदहयेभृगुकेदिनजा नु८४इंदुनैनवसुरसभवसुनौ। बारहऊशनिकेदिनगुनौ॥

र	चं	मं	बु	बृ	शु	श	बार
१४	१२	१०	८	६	४	२	कुलिक
८	६	४	२	१४	१२	१०	काल
१०	८	६	४	२	१४	१२	यमघंट
६	४	२	१४	१२	१०	८	कंटक

रविहिआदिजेभाषेअंक। खलमुहूर्त्तये करतअतंक ८५ ॥दोहा॥ दुष्टक्षणकंटककुलिक कालसमययमघंट। अर्द्धयामषटयोग येज्योंकुसुमनमेंकंट ८६ इनहींअंकनमेंसदाजानकहतसबजानि। येछदोषकेजात हैंनिपटअमंगलदानि८७॥चौपाई॥ऐरावतीशतद्रापुहकर। निकटपिपासाकेकहिबुधवर ॥ आठहोलिकाकेदिनरहे। सबशुभकाजमनेकविकहे८८॥दोहा॥ मृत्युक्रकचदग्धादि मिटिजातबलीशशिहोइ । विफलहोतइकयामकेगयेक हतकविकोइ ८९ एकद्योसमेंजोकहूंहोइसुयोगकुयोग। हनतसुयोगकुयोगकोकहतसयानेलोग ९० शुभग्रहसों तत्कालकीलग्नसहितजोहोइ। नाशतअमितकुयोगसो

कहतसयानेलोइ ९१ द्वादशघटिकामृत्युकीयमघंटक कीआठ। आधेदिनलोंऔरकहिजिनकेपोथीपाठ ९२ तिथिभवारतिथिअशुभजेतारवारमिलियोग। हूण वंग खसदेशमेंमनेकरतसबलोग ९३ ॥अथभद्रा ॥ चौपाई॥ कृष्णपक्षकीदशमीतीजो। उत्तरदलमेंविष्टिकहीजो॥ सातैं बहुरिचतुरदशिरही। तामेंपूरवदलमेंकही ९४ शुक्ल चतुर्थीएकादसी। उत्तरदलमेंभद्राबसी॥ बहुरिअष्टमी पूरणमासी। पूरवदलमेंहोतिविलासी ९५ ॥अथभद्रापुच्छ॥ दोहा॥भइषुभानुनखचौथितेदंडतीनिपरिमान। भद्रपुच्छ यहतीजतेउलटोजानतजान ९६॥अथभद्रादिवास ॥जलशिखिशशिरक्षसगिरिशयमसमीरपुरहूत। दिशावासकहि चौथितेपंडितबड़ेसपूत ९७ दिशिसंख्यातेवदनकहिवी तेयामप्रमान। पंचघटीलोंअशुभहैजानतबड़ेसुजान ९८ मेषमकरवृषकर्ककोचन्द्रहोइतबसर्ग। मिथुनतुलाधन कन्यकानागलोककहिगर्ग ९९ कुम्भमीनअलिसिंहमें मानवपुरमेंविष्टि। जहाँवासतहँअशुभहैकहतकविनकी सृष्टि१०० वासरविष्टिपरार्द्धजानिशिकोपूरवजात। याही विधिसोंशुभकहतजिनकीमतिअवदात१ ॥दंडक॥ बावरी अरामतालकूपगृहारंभ व्रतउत्सरगवधूगृहआनिबोऔ दानविधि। यज्ञमुंडनादिव्याह पौसराप्रथमदीबोउपवीतदेवताकोथापनोजोदेतसिधि॥ अपूरवदेवतीर्थजानदरशनकोदीक्षाबेधश्रवणअगिनिथापनोसमिधि। बालवृद्ध अस्तसितगुरुभये ऊनमासअधिकमासमेंनकछुकरतउदारनिधि२॥दोहा॥चतुरमासव्रतभूपकोदरशनऔसंन्यास। राजाकोअभिषेकनाहिंकीजेभाषतव्यास३ सिंहअस्त

औमकरकेदेवपुरोहितहोइ। ब्याहादिकशुभकर्मजेपण्डितकहतनकोइ ४ सिंहमकरकेजीवमेंकब्रहूंकरतनजान। देतरतनमयआभरणहैयहविदितजहान५सुरगुरुबासरनाथऊहोहिंएकहीधाम। तेरहदिनकेपाखमेंउचितनहीं शुभकाम६॥ अथसिंहस्थेगुरुपरिहारत्रयमाह॥ सवैया॥ सिंहकेसिंहकेअंशमेंजोगुरुहोहिंतौभूलेहुब्याहनकीजे। मेषकेसूरजहोहिंतौकीजियेभाषतपंडितसोसुनिलीजै॥गोदावरीअरुगंगकेबीचमेंमेषहूकेरबिमेंनकहीजे। पंडितएककहैगुणमंडितजीमेंबिचारजनेउनदीजे ७॥अथवक्रातिचारेपरिहारमाह॥ दोहा॥ ज्योंमृगपतिऔमकरकेत्योंबक्रीअतिचार। एकैपंडितकहतहैंनिजमतिकेअनुसार ८ होहिंबृहस्पतिजोकहूँबक्रीकैअतिचार। अट्ठाइसदिनमानियेकहतसुकबिसरदार ९ दूजेसप्तमग्यारहेंकौत्रिकोणकेभौन। यदपिबक्रअतिचारगुरुदोषमानियेतौन१० रेवाकीपूरवदिशागंडककीपरओर। उत्तरदक्षिणशोणकेकहतसुकबिशिरमोर ११ नीचबृहस्पतिकोकछूकोऊकरतनरोष। कौंकणमगहरगौड़औसिंधुदेशमेंदोष १२॥ नरेन्द्र॥ अजवृषकुंभमीनकोपरिहारिऔरराशिकोपाइ। जोकबहूंसुरनिकरपुरोहितअतीचारकोजाइ॥ पुनिप्रतीपह्वैपूर्वराशिमेंवसैनहींठहराइ। हानिहोइतबसंवतूसरकीकहतसुकबिसमुदाइ१३॥ दोहा॥ होइजुकालहिपाइकेसंबतसरकीहानि। सोनिंदितशुभकाजकोकहतजानजियजानि १४॥ अथवारप्रवृत्ति॥ दंडक॥ रेखातेजहाँलौंहोतजोजनगुनैतेएकचरणसोंहीनकीजैताकोपलजानिकै। पंचदशघटिकामेंजोरियेधरैयेतेपाइचिमऔपूरवकोक्रमअनुमानिकै॥ अंकरू-

पजैसोदिनदलमेंघटैतौ दिनचढ़ेवारलागैसबकैहैहितठा
निकै। धरि दिनदलतौनिशाकेरहेलागैजोकहावतहौजा-
नजानिलीजैइतआनिकै १५ ॥ दोहा ॥ सितपर्वतऔपर्ज
ईवत्सगुल्मऔलंक। गर्गराटसरकन्यकाकांचीकहतनि
शंक १६ कुरुक्षेत्रउज्जैनिपुनिमेरुसहितजगमाह। कह
तमध्यरेखाइन्हेंसकलकविनकेनाह १७ जो रेखाजिहिदे
शतेनिकटहोइसोलेउ। जिहिगणनाकोचाहियेसोगणना
कहिदेउ १८ ॥ अथकालहोरा ॥ दोहा ॥ दुगुनकीजियेगतघ
टीजबतेलागैबारु। पंचभागजोपाइयेतातेकरौबिचारु
१९ जादिनमेंजोबारुहैताहीतेगनिलेहु। रबिसितबुध
शशिमंदगुरुमंगलगतकहिदेहु २० जेरव्यादिकवारके
कविनबखानेधर्म। तौनकालहोराबिषेकीजतुहैसबकर्म
२१ जो नकहेनक्षत्रकेताकोपतिजोआहि। तासुमुहूरत
मेंसबैकरियतहैंचितचाहि २२ तिहिछिनमेंदिकशूलको
चिन्तनकैकहुजाइ। परिघदंडनांघेबिनालहैलक्षिसमुदा
इ २३ ॥ अथमन्वादिः ॥ चौपाई ॥ क्वारमासनवमीउजियारी।
कातिकमेंदुवासिनिरधारी ॥ माधवमाँदोतीजबखानी।
सावनकीआमाजियजानी २४ एकादशीपोषकीकही।
हैअषाढ़कीदशमीसही ॥ वरणीमाघमासकीसातैं। भा-
दौंअसितअष्टमीतातैं २५ जेठअषाढ़चैतफागुनकी।
कातिकपंचदशीशुभगुनकी ॥ येचौदहमन्वादिकहावें।
इनमेंदियेअक्षयफलपावें १२६ ॥

इतिश्रीमहाराजकुमारअचलसिंहाज्ञयात्रिपाठीशंभुनाथकृते
मुहूर्त्तकल्पद्रुमशुभाशुभप्रकरणम् १ ॥

अथ नक्षत्रप्रकरणम्॥

दंडक॥

अश्विनीकुमारयमअगिनिविरंचिविधुमहादेवअदितिसुरेशगुरुअहिवर। पितरऔभगअरयमारवित्वष्टापुनिमारुतअनलऔसुरेश मित्रपुरन्दर॥ रक्षससलिलविश्वदेवविधिहरिबसुपासीअजपादअहिर्बुध्नपूषापर। आठबीसकहतनखतउडुगणनकेबड़ेबुधिवन्तजे हैं ज्योतिषीविचारकर १॥ अथध्रुवादिसंज्ञा॥ चौपाई॥ रोहिणितीनिउत्तराभानु। इन्हैंध्रुवस्थिरजीमेंजानु॥ इनमेंगृहबागफुलवाई। थिरकारजकीन्हेंसुखदाई स्वातिअदितिश्रवणत्रयचन्द। चरबलसुकविकहतसानन्द॥ गजादिआदिबाहनजेकहे। चढ़ियेगमनकियेसुखलहे ३॥ दोहा॥ तीनिपूरबाऔमघाभरणीमंगलबार। क्रूरउग्रइनकोकहेजे पंडितसरदार ४ शठताबुधविषकर्मकीकीजैशास्त्रविधान। छलबलताईकीजियेजानिकहतसबजान ५॥ चौपाई॥ अग्निविशाखाबुधकोबार। मिश्रसाधारणकहतउदार॥ अगिनिकर्मऔमित्रकोकाज। वृषउत्सरगकहतकविराज ६ हस्तपुष्यअभिजितअश्विनी। सुरगुरुक्षिप्रबहुरिलघुगिनी॥ इनमेंमहाज्ञानरतिकीजै। भूषणशिल्पकर्मसुनिलीजै ७ मृगरेवतिअनुराधाचित्रा। भृगुमृदुमैत्रसुनोंरेमित्रा॥ गीतकर्मअम्बरआभूषन। केलिमिताईभाषतबुधजन ८ मूलरुद्रइन्द्रभअश्लेखा। शनितीक्षणदारुणअवरेखा॥ अरिआभिचारघातऔभेद। उग्रकर्मभाषतहैंवेद ९॥ अथ अधोमुखादिनक्षत्र॥ भर-

णीमूल मघाअश्लेखा अगिनिद्विदैवपूरवापेखा ॥ येन-
वनखतअधोमुखअहैं। इनकेगुणपंडितसब कहैं १० ॥

ध्रुवादि चक्रम् ॥

ध्रुव स्थिर रवि	चर चल चंद्र	क्रूर० उग्र० मंगल	मिश्रसाधा० बुध	क्षिप्रलघु गुरु	मृदुमैत्र शुक्र	दारुणतीक्ष्ण शनि
उत्तरा ३ रोहिणी	स्वा० पु० श्र० ध० श०	पू० ३ भ० म०	कृ० वि०	ह० पु० अ० स्वा०	मृ० रे० चि० अनुराधा	मू० आ० ज्ये० श्ले०

वापीतालखनैयेकुवां। खाईखातखेलियेजुवां ॥ धनगा
ड़ियेकरौतहखाने। एतेकर्मकविनअनुमाने ११ ॥ दोहा ॥
विधिहरगुरुश्रवणत्रयीबहुरिउत्तरातीनि। ऊरधमुखजि
यजानिकैभाषेसुकविनवीन १२ ॥ चौपाई ॥ वारणध्वजा
प्रसादबनैये। कोटअरामभवनउठवैये ॥ युद्धछाहनरपति
अभिषेक। भाषेसुकविनसहितविवेक १३ ॥ दोहा ॥ अश्वि
निमित्रकरत्रयीअदितिरेवतीऔर। मृगसुरेशातिर्यक्व
दनकहतसुकविशिरमौर १४ महिषमेषखरऊंटऊवृषतु
रंगगजराज। गाड़ीयंत्रकश्वानहलइनमेंकीजैकाज १५ ॥

अधोमुखादि चक्रम् ॥

अधोमुख	ऊर्ध्व मुख	तिर्यङ्मुख
भ० मू० म० श्ले० कृ० वि० पू०भा० पू०षा० पू०फा	ऽश्वि० आ० पुष्य० श्र० ध० श० उ०फा० उ०षा० उ०भा	अश्वि० अनु० ह० चि० स्वा० पुन० रे० मृ० ज्ये० श्रा०

अथ भूषणवसन परिधान ॥ दंडक ॥ हेमरदवसनप्रवालशंखधारि

बेकोरिकताश्रौचंदमंदमंगलनलीजिये। पूषाकरपंचक तुरंगध्रुवबासवश्रादितियुगराईउडुगनकहिदीजिये॥ मंगलकोश्ररुणवसनजोपहिरियेतौदोषनकछूहैमेरेवैननपतीजिये। पुष्यध्रुवश्रदितिमेंसुभगासोंकहियेजूभूषणवसनपरिधानकोनकीजिये १६ ॥ दोहा ॥ द्विजशासनश्ररु व्याहमेंभूपदियोजोहोइ। नखतवारकोदोषनहिंवसनपहिरियेसोइ १७॥ दंडक ॥ कीजैनवभागसानुरागनयेवसनकेतामेंचहकोनश्रमरनकोश्ररामुहै। मध्यकेविभागराकसनकोनिकेतनरजौनभौनरहेतामेंरचतमुकामुहै॥ जामें दागपरैंजरैंकटैंफटैंताकोफलुश्रमरनरनश्रंशसुखनकोश्रामुहै। राकसजहाँहैतहाँश्रशुभसबनश्रंशश्रंतमेंपरेतेहोतकन्तकोविरामुहै १८॥ श्रथलतावृक्षारोपण ॥ दोहा ॥ ध्रुवमृदु वरुणद्विदैवलैमूलबहुरिकहिक्षिप्र। लतावृक्षरोपणकिये

दे०	रा०	दे०
म०	रा०	म०
दे०	रा०	दे०

सिद्धिकहतहैंविप्र १९॥ श्रथनृपदर्शन॥ क्षिप्रबहुरिमृदुध्रुवश्रवणवासवमेंजोकोइ। महीपालकोजोमिलैसकलसंपदाहोइ २०॥ श्रथमद्यारंभ॥ मघाभरणित्रयपूरवामूलइंद्रश्रौरुद्र। पुनि श्रहिमेंमदुखाइयेजोपीवतहैंक्षुद्र २१॥ श्रथगवांकूयविकूय॥ क्षिप्रश्रंत्यश्रौकृत्तिकाइन्द्रपुनर्वसुईश। सततवसुक्रयविक्रयकहतगाइनकोसबईश २२॥ श्रथपशूनांस्थाननिःकारण॥ कवित्त॥ राशीशुभखगनकीश्राठवोंसदनशुद्धजौनजाकी योनिश्रौचरनखतगायेहैं। ऐसेसमयसदनमेंपशुनको राख्योजिनदिनदिनतिनहींश्रशेषसुखपायेहैं। रिकता दरश श्राठे मंगलश्रवणध्रुवचित्रामें सदनतेजोबाहिर पठाएहैं॥ पायेसबसुखतिनइनहींमेंराखेजिमतिननिज

जीकोभूरिशोकउपजायेहैं २३ ॥ अथभैषज्यकर्म ॥ दंडक ॥
श्रवणतेतीनिस्वातीअदितियुगलकर चित्रापूषाअश्वि
मृगमूलअनुराधामें।शशिबुधभृगुजीवहोहिंद्व्यंगराशिन
केसुनोमहाराजऐसोमुहूरतसाधामें॥भौमशनिजनिभअ
शुभतिथी परिहरिसातोंआठोंबारहोंसदनशुद्धकाधामें।
ऐसेमेंजोरसनबनावेकैं असनकरैंवसनपरैंसोनरुरोगन
कीबाधामें २४ ॥ हाटबैठिबेकोमुहूर्त्त ॥ दोहा ॥ अनुराधाध्रुव
क्षिप्रमें शुभतिथिमेंकरिठाट। रिक्तामंगलकुंभबिन मुदि
तबैठियेहाट २५ दशमग्यारहेंबारहें शुभतनुमेंसितचंद।
मृत्युबारहोंक्रूरबिन दिनदिनहोतअनंद २६॥ अथबेचिबेको
मुहूर्त्त ॥ द्वीशअगिनिभरणीभुजग तिनिहूपूरवामाह। केंद्र
कोणमेंशुभखचर कहतकविनकेनाह २७ त्रिषटग्यारहें
अशुभग्रह छोड़िकुंभकुजवार । हाटबैठिकेबेचिये जोहै
वस्तुअपार २८॥ अथगजवाजीकर्म ॥ नरेंद्र॥ हस्तअश्विनीपु-
ष्यपुनर्वसुमृगस्वातीवसुलीजे। शिवशतभिषारेवतीइन
मेंवाजिकर्मसबकीजे ॥ रिक्तामंगलबिनाकहतअबगज
नकेकर्म। मृदुचरक्षिप्रनखतलैभाषतजेजानतहेमर्म २९
अथआभूषणबनाइबो ॥ दंडक ॥ ध्रुवचरक्षिप्रलैत्रिपुष्करअखि
लवारकीजियेअरंभउरआनँदबढ़ाइये।तीक्ष्णऔंउग्रमें
दिनेशकुजवारतिनहींकीजौनराशीजोजवाहिरमढ़ाइये॥
क्षिप्रचरध्रुवमृदुशुक्रचन्द्रमाकेदिन मोतिनमिलाइछबि
अछतकढ़ाये। गोतुलाकरकजबऐसेमुहूरतमें होइजाको
लहनोतौगहनोगढ़ाइये ३० ॥ अथशस्त्रकर्म ॥ दोहा ॥ मूल
मघाभरणीभुजग अगिनिविशाखाइंद्र। तीनिपूरवाशिव
तुरग मृगशिरकहतकविंद्र ३१ सूरजमंगलमंदको तो

नांलीजैवार । रिक्ताछोड़िगढ़ाइये इनहींमेंहथियार ३२ अथसूचीकर्म ॥ अदितिमृगशिराअश्विनीवासवचित्रामित्र । इनमेंसूचीकर्मकहि जेज्योतिषीविचित्र३३॥ अथक्रयाविक्रय ॥ रेवतिचित्राशतभिषाश्रवणाअश्विनीवात । इनमेंवस्तुखरीदियेकहतसुकविअवदात ३४ भरणीकृतिकाशक्रअहि बहुरिविशाखामाह । तीनिपूरवामेंकहत विक्रयपंडितनाह ३५ क्रयनखतमेंजोकरै विक्रयजीमेंजानि । विक्रयउडमेंक्रयकिये होतहालहीहानि ३६ ॥ अथसांनेरूपेकाभाजनबनाइबो ॥ चित्रारेवतिमृगअदिति मित्रअश्विनीस्वाति । हस्तपुष्यश्रवणत्रयी बहुरिलेउध्रुवजाति ३७ विधिसोंलीजैशुभतिथी औलीजैशुभवार । रजतहेमभाजननमें भोजनकरतउदार ३८ ॥ अथटकसारकामुहूर्त्त ॥ नरेंद्र ॥ अदिति युगलरेवतीयुगलध्रुवमृगीकत्रयलीजै । श्रवणआदिदै तीनिलीजिये अनुराधाकहिदीजे ॥ जयापूरणातिथीलीजिये चंदमंदविनवार । कहतजानज्योतिषीलीजै ऐसेदिनटकसार ३९ देवपुरोहितभारगो इनकोअस्तनहोइ । खेटपरैशुभलगनमें कहतसयानेलोइ ४० ॥ अथवस्त्रधुवावैकोमुहूर्त्त ॥ अदितियुगलकरपंचवसु लैअश्विनिसानंद । षष्ठीरिक्तापर्वविन श्राद्धयोसबुधमंद४१॥अथवस्त्रधारण॥ नरेंद्र॥ मृगरेवतीरोहिणीचित्रा अनुराधाकरआनो । अदितियुगलअश्विनीउत्तरा शक्रविशाखाजानो ॥ रविसितजीवलगनथिरलीजै रिक्ताविनकहिदीजै । तेगभल्लसंनाहशरासन क्षुरिकाधारणकीजै ४२॥ अहा ॥ थिरलगनेनिशिनाथजो शुभसोंलखियतहोइ । शुभखेचरकंटकपरै कहतसुकविसबकोइ ४३ ॥ शय्याद्यारोहण ॥ गीतिका ॥ मृगरेव-

तीकरअश्विनीचित्रानुराधालीजिये। ध्रुवपुष्यश्रवणपुनर्वसौभरणीसुसामिलकीजिये॥ शय्यासुआसनपादुकादि कुरंगचरमहिआदि। उपभोगइनकोकीजियेसोकहतमुनि गर्गादि ४४॥ अथांधादिनक्षत्रज्ञानम्॥ कवित्त॥ उत्तराप्रथमद्वीजपूर्वाविशाखावसुरेवतिपुष्यरोहिणीयेअंधअनुमानेहैं। हरनीभुजंगदूजीउत्तरावरुणकरिमित्रअश्विनीयेमंदनैन करिजानेहैं॥ भरणीमहेशमघाचित्राअभिजितशक्रतीजीपूरवाकोमध्यकहतसयानेहैं। पूरवाअदितितीनोंउत्तराअनलमूलस्वातीश्रुतिसातोयेसुलोचनबखानेहैं ४५॥ दोहा॥ अंधमंददृगमध्ययेबहुरिसुलोचनचार। क्रमते कहतसुजानये रोहिण्यादिविचार ४६ हरीवस्तुजोअंध में तुरतमिलैसोआइ। मंदनैनमेंपाइये कीन्हेकछूउपाइ॥ ४७ लागैखोजनपाइये मध्यनैनजोहोइ। मिलैसुलोचन मेंनकछु कहतसुकविसबकोइ४८॥ अथथातीकोधरिबो॥तोमर॥ शिवमूलशक्रभुजंग। भरणीमघाध्रुवसंग॥ अनलौविशाखामाहिं। त्रयपूरवाजेआहिं ४९ भद्राबहुरिव्यतिपात। थातीधरैधनुजात॥ यहसाँचेमानहुबोल। इनमें नदीजेओल ५०॥ अथवापीकूपकोमुहूर्त्त॥ कवित्त॥ पूरवाद्वितीयमित्रध्रुव करवसुमघाशतभिषपूषापुष्यमृगशिरलीजिये। पायनिरबलसुरगुरुबुधलगनमेंशुक्रलैकेंदशयेंभवन आनिदीजिये॥ मकरकोउतरअरधमीनकलशकोहोइ निशिनायकसकलसुखजीजिये। नरवरहेतसबकहतविबुधसरवरबावलीकुवांकोदरदीजिये ५१॥ अथकूपचक्रनरेंद्र॥ सुरनखततेचंदनखतलोंगनिइकठोरीकीजे। तीनिमध्य दैंदिशाआठहूतीनितीनिपुनिदीजे॥ जिहिदिशिपरैचंद

कोतारातबबिचारिफलुकहिये। मध्यअगिनिरक्षसकुवेर दिशिवरुणपरेसुखलाहिये५२॥ अथनृत्यारंभ॥ दोहा॥ मघा पूरवाछोड़िकै कीजैशक्रसमेत। होतजलाश्रयके नखत नृत्यकर्मकेहेत ५३ परेसाधुग्रहसुखसदन मिथुनयुवति कोचंद। कीन्हेंनृत्यअरंभके दिनदिनबढ़ैअनंद ५४॥ अथराजसेवा॥ चित्रामित्राकरअश्विनी पूषापुष्यकुरंग।शुक्र बृहस्पतिचन्द सुत लीजैबहु रिपतंग ५५ दशयेंरविकुज ग्यारहें तनुमें साधुसमेत। योनिमित्रताहोइतौ सदानिरखहैहेत ५६ स्वामीसेवकराशिपति होहिंपरस्परमित्र। तऊप्रीतिदि नादिनबढ़ै पंडितकहतबिचित्र ५७॥ अथसेवाचक्रम्॥ सेवकजनकेनखतते स्वामीलोंगनिलेहु। सातनखत उतमंगमें लैस्वामीकेदेहु ५८ सातदीजियेपीठिमें देहु उदरमेंसात। सातैदीजैचरणमें कहतसुकविअवदात ५९ लाभहोतशिरउदरमें पीठिचरणमेंहानि। यह मतऔरेग्रंथको मैंलिखिदीनोंजानि ६०॥ अथलेवादेईको मुहूर्त्त॥ आदितियुगलश्रवणात्रयी चित्रामित्रकुरंग।स्वाति बिशाखारेवती लीजैबहुरितुरंग ६१ पापनहोहिंत्रिकोण में अष्टममेंनहिंकोइ। दीजैद्रव्यउधारजो बलिचरलग नहुहोइ ६२ संक्रमदिनरविभौमको हस्तवृद्धिमेंलेइ। ताकेऋणदिनदिनबढ़ै कहौकहाँतेदेइ ६३ बुधकोदेतउ धारजे तेपीछेपछितात। बहुरिनआवतहाथज्यों गिरे

अन्धादिचक्रम्॥

अंधाक्ष	मंदाक्ष	मध्याक्ष	सुलोचन
रो० पु०	मृ० श्ले०	म० आ०	मू०फा०पु०उ०
उ० फा०	उ० षा० घ०	भ० चि०	भा० स्वा०
पूष० वि० ध०	ह० ऽनु०	ऽ.भ० ज्ये०	कृ० अ०
रे०	घृ०	पू० भा०	मू०

तरुनकेपात ६४ ॥ अथहलकर्म ॥ अश्विनिश्रवणकरत्रयी अदितियुगलमृगमित्र । स्वातिरेवतीध्रुवबहुरि मूलविशाखापित्र ६५ रिक्ताषष्ठीअष्टमी बिनादिवाकरमंद। कीजैहलकोकर्मजो दिनदिनबढ़ैअनंद ६६ तुलामकर अजकर्कघट सिंहलग्नमेंकोइ । प्रथमकरैहलकर्मजो तौ विनाशकरहोइ ६७ अबलपायजलराशिकेअंशबलीश शिहोइ । उदितशुक्रगुरुलगनमें कहतसुकविसबको इ ६८ ॥ अथहलचक्रम् ॥ तीनितीनिपुनितीनिशरतीनि पंचगुणदोइ। सूरजगतनक्षत्रते हानिवृद्धिक्रमसोइ ॥ ६९ ॥ अथखेतबंवकोमुहूर्त्त ॥ नरेंद्र ॥ हयमृगमूलमघाअनुराधा पुष्यउत्तरातीनो । चित्रापूषारोहिणीकर वसुस्वाती कहतप्रबीनो ॥ मंगलविनारहितरिकतासो कूरशत्रुभव तीजै। कंटककोनसाधुखगआवे बीजबवनतबकीजै ७०

अथहलचक्रम् ॥

३	३	३	५	३	५	३	२
हा०	वृ०	हा०	वृ०	हा०	वृ०	हा०	वृ०

दोहा ॥ द्वादशाषोडश बीसवों चौबिसतेजे चारि । राहुनखत तेआठलों येनिषिद्धनिरधारि ७१ ॥ अथखेतकटाइवेकोमुहूर्त्त ॥ तोटक ॥ शिवमूलमघाकरलैहरणी। श्रवणत्रयपुष्यभऔ भरणी ॥ अजपादसमीरभचित्रहिलै । पुनिउतराआनि अश्लेषमिलै ७२ घटवृश्चिकऔवृषसिंहलहौ। रिकता विनमंगलमंदकहौ ॥ कृषिवन्तनकेसुखपावनको। कहिये दिनखेतकटावनको७३॥ अथस्थापन ॥ मूलपूरवाभाद्रपदवरुणउत्तराजानु । बहुरिविशाखारोहिणीमेंधरियेखरिहानु ७४॥ अथमर्दन ॥ तीनिमघातेमूलश्रुति शक्ररेवतीमित्र। कणमर्दनकोरोहिणी पंडितकहतविचित्र७५ दुहूँकाजको

छोड़िये रिक्तामंगलमंद। तौकिसानकेभौनमें दिनदिन बढ़ेअनंद ७६॥ अथवायुसोंशोधिबो॥ भरणीमघाशिवकृत्तिका भुजगविशाखालेहु। तीनिपूरवाछोड़िकै औरनखत कहिदेहु ७७ कर्कतुलाअजछोड़िकै लेहुशुभग्रहबार। कीजैशुद्धिसमीरसों अन्नकहतसरदार ७८ पुष्यचरध्रुव अश्विनितुंगविशाखाइंद्र। इनमेंलीजैराशिको भाषतसबै कविंद्र ७९॥ अथराधरमोक्षण॥ रोहिणीमृगकरश्रवण अनुराधापुष्यसमेत। इन्द्रवरुणचित्रातुरग मरुतनखतजे लेत ८० रविमंगलगुरुवारमें सीरखुलावेकोइ। ताकी थोरेदिननमें देहनिरोगीहोइ ८१॥ अथवमनाविरेचनकोमुहूर्त॥ रुधिरकढ़नकेनखतलै बुधशनिवारविहाइ। बमनविरेचनजोकरै सोअरोग्यह्वैजाइ ८२॥ अथयज्ञादिकर्मकोमुहूर्त्त॥ मित्रचरध्रुवक्षिप्रलै रविसमेतशुभवार। यज्ञादिककीजै करम कहतसुकविसरदार ८३ गुरुबुधकेषटवर्गमें परैलगनततकाल। जीवपरैजोलगनमें सिद्धिलहौतोहाल ८४ अथशांतिकर्म॥ गीतिका॥ अदितिध्रुवश्रवणात्रयी हयहस्तपुष्यसमेत। रेवतीकविकहतमारुतमित्रपित्रसमेत॥ कर्मसुखमेंपरेरविचन्द्रयेग्रहहोइँ। जीवजोतनुभावमेंगुरुशुक्र अस्तनहोइँ ८५॥ दोहा॥ शांतिकर्मजेहैंबड़ेबहुरिकहैनैमित्य। तेनकीजियेअस्तमें करौऔरजेनित्य ८६॥ अथ अग्निवास॥ गीतिका॥ शुक्लादिलौतिथिवारसों पुनिएकताहि मिलाइये। हरिभागतामहँचारको पुनिशेषजोकछुपाइये॥ शशिकेरहेनभप्राणहानिपतालश्रीछितिह्वैरहै। गुणशून्यसोभुवलोकबाड़वसुखदसबपंडितकहै ८७॥ अथ आहुतिविचार॥ दोहा॥ रवितेशशिकेनखतलौंतीनितीनिकहि

देतु।रविबुधभृगुशनिचंदकुजजीवराहुऔकेतु ८८ जोख
लमुखआहुतिपरैकरैंमहादुखदंद। परैवदनशुभखगनके
दिनदिनबढ़ैअनंद८९॥ अथवारदोधक॥ अत्रणत्रयीअरुस्वा
ति कुरंगिनि मि
त्रकरत्रयपुष्यतु
रंगिनि॥ लहुपुन
र्वसुभौमविनाश

३	३	३	२	३	३	३	३	३
सू	बु	भृ	श	चं	मं	बृ	रा	के
अ	पु	पु	च	पु	च	पु	अ	अ

नि। नन्दातिथीमधुपौषविनाभनि ९०॥ दोहा॥ परैआ
नितनुभावमेंसाधुखगनमेंकोइ। तबनवान्नजोकीजियेसक
लसंपदाहोइ ९१॥ नौकाकोमुहूर्त्त॥ तीनिभरणितेशिवमघा
सर्पविशाखाइंद्र। इन्हैंछोड़िसबलीजिये कहतकविन
केइन्द्र ९२ साधुपरैतनुभौनमें भृगुदिनेशगुरुवार। इन
मेंनावबनाइये कहतसुकविसरदार ९३॥ अथरोगीस्नान॥
अदितियुगलथिरअहिमघा रेवतिवरुणविहाइ। सोम
भारगवचारहैयेऊदेहुबराइ ९४ लीजैरिक्तातिथनमेंअ
बलचन्द्रजबहोइ। रोगीतबअन्हवाइये कहतसुकविसब
कोइ ९५ केंद्रकोणमेंशुभखचरहोहिंग्यारहेपाप। यावि
धिवरणतज्योतिषीजिनकीबुद्धिअमाप९६॥ अथशिल्पकर्म॥
लहुमृदुध्रुवक्षिप्रचरबुधसुरेशगुरुवार। तनुदशयेंबुधजो
परैजीवलगनआगार॥ गुरुबुधकेषटवर्गमेंपरौनिशाको
नाथ। शिलपकर्मजोकीजियेतौधनआवेहाथ ९८॥ अथसंधि
कोमुहूर्त्त॥ प्रथमउत्तरापुष्यऔअनुराधाशुभवार। बहुरि
अष्टमीद्वादशीतैतिलकरणउदार ९९ परैलगनमेंशुक्र
जोअथवादेखतहोइ। तादिनकीजैसंधिसबकहतसयाने
लोइ १००॥ अथसुवर्णादिपारिखकोमुहूर्त्त नरेंद्र॥ श्रवणज्येष्ठाहस्त

पुनर्वसुबहुरिशतभिषालीजै। जन्ममासऔराशिअष्टमी
चौदशिपरिहरिदीजै॥ जन्मनखतआठोर विहिमकरयेऊ
दीजैछोड़ि। द्विस्वभावचरमेंकरिपारिख देवनअंजुलिबो
ड़ि १॥ अथरोगोत्पत्तिविचार॥ शक्रभस्वातिपूरवातीन्यों शिव
अहिमेंजरुआवै। निहचैमरणजानियेताको यदपिसुधा
रसप्यावै॥ अनुराधारेवतीनखतमें बहुदिनरोगसतावै।
भरणीश्रवणशतभिषाचित्रा गेरहदिनदुखपावै २ हस्त
विशाखाबहुरिधनिष्ठा पंद्रहहोहिंउपास। अश्विनिमूल
कृत्तिकाहूमें नवदिनरहेउदास॥ आदिअंतउत्तरारोहिणि
पुष्यपुनर्वसुहूमें। रोगीरहेरोगसोंपीड़ित पांचद्योसऔदू
में ३॥ दोहा॥ मध्यउत्तरामृगशिरा बहुरिपूरवाषाढ़॥
इनमेंवासरतीनिलों रहेरोगकीबाढ़ ४॥ अथविशेषरोगोत्पात्ती
पद्धरी॥ अहिरुद्रशक्रवासवकृशान। शतभिषद्विदैवभरणी
बखान। जोसहितपूरवापापवार। रिक्ताछठिहरिवरणतउ
दार ५॥ दोहा॥ इनवारनइनतिथिनको इननखतनको
पाइ। जाकोउपजैरोगसो छिप्रशमनपुरजाइ ६॥ अथ
विषधरनक्षत्र॥ मघाविशाखाकृत्तिका अहिशिवभरणीमू
ल। श्वानसर्पइनमेंडसै तेहियमहनौंत्रिशूल ७॥ अथपं
चकपद्धरी॥ जबकुंभमीनकोचंदहोइ। तबप्रेतदाहकीजोन
कोइ॥ तृणकाठकर्मशय्यावितान। दिशिदक्षिणकोकरिये
नजान ८॥ अथईंधनधरिबेकोमुहूर्त्त॥ कवित्त॥ सुरजनखततेलैता।
केतरदीजैषटतासोंषटरसचारुव्यंजनबनतहैं। शीरष
युगलपैंशवकोदहनहोत मध्यपैंभीतियुगभोगीकीधन
तहैं॥ पूर्वादिचारिचारिदीजियेचहूँघामित्र मिलैकाथरो
गभयसोंगनिभनतहैं। ईंधनधरनकाजयाहीविधिमुहूरत

भुदितकैमहाजानपंडितकहतहैं ९ ॥ अथत्रिपुष्करयोग नरेंद्र ॥ अदितिउत्तराषाढ़विशाखांबहुरिउत्तराजानो। पूरभाद्रपदबहुरिकृत्तिकारविकुजमंदबखानो ॥ भद्रातिथिमिलिहोतत्रिपुष्करपंडितराजबतावे। हानिलाभकोजननमरनकोतीनिबारफलपावे १० ॥ अथनारायणबलिकामुहूर्त्त दंडक ॥ सितकुजमदनंदाभूतआमातेरसिभरनिमघारेवति अहिमूलशततारको। शंभुतीनोंपूरवासुरेशभत्रिपुष्करअधिकमासहीनमास भद्राभयकारको ॥ व्यतीपातवैधृति अशुभशशितारावलहीनकारोपाखक्षयदिनशुभहारको। गुरुभृगुअस्तमेंप्रशस्तनपरनसरकहतअमर मुनिवरयोगधारको ११ ॥ अथमूलविचार ॥ अश्विनिअश्लेषामघाशक्रभमूलाजान।बहुरिरेवतीसोसहितयेषटमूलबखान १२ अथअभुक्तमूलदंडक ॥ शक्रभअंतकीवेदघटीअरुमूलकीआदिमेंचारियेजानत। अंतभुजंगमकीकहीचारि मघाहुकीआदिमेंत्योंअनुमानत ॥ जोइहिअंतरजातकहोइ तौत्यागकरैनहिंमंदिरआनत। त्यागनहोइतौसम्बतआठनदेखियेआननग्रंथबखानत १३ ॥ दोहा ॥ प्रथमचरणपितुनाशकहि जननिदूसरैजानि। धनक्षयतीजेकविकहै चौथोशुभदबखानि १४ जनकमरैदिनकेभये जननिरातिजोहोइ। आपुमरैसंध्यासमय कहतसुकविसबकोइ १५ अथमूलवासदोहा ॥ भादौंआश्विमाघअरु आषाढ़मूलआकास। सावनकातिकपौषमें भूमिलोकमधुमास १६ जेठमार्गवैशाखमें फागुनमूलपताल। जहांबसैतहँदोषहै पंडितकहतरसाल १७ पातशूलव्याघातऔ परिघगंडअतिगंड। व्यतीपातवैधृतिकुहू संक्रमद्यौसअखंड १८

कृष्णाचौदशिबज्रयमघंटकदग्धबखानि। मृत्युविष्टिगं-
डान्तमें उपजैबालकआनि १९ सोदरऔजननीजनक
इनकेनखतहिपाइ। इंद्रभहूमेंहोइतौ कीजैशांतिउपाइ
२०॥ अथमूलवृत्तबिचार दंडक॥ जेतीघरीमूलकीजनमसमय
बीतेतेतीमूलतरुलिखिकेबिचाररसदीजिये। सातदीजि-
येमूलआठस्तंभत्वचामेंदशशाखनमेंईशरविपातनमेंकी
जियै॥पुष्पमेंपांचफलचारिऔशिखामेंतीनिक्रमहीतेमूल
नाशजानिफलल्लीजिये। बंशनाशजननीकलेशनाशमा
तलकोभूपमंत्रीलक्ष्मीमरणकहिदीजिये २१॥ अथअत्यंत
मूलाबिचार॥ चौपाई॥ मूलघटीजेबीतीहोइ। तिनतेमासक
रोसबकोइ॥ माथेपंचपरेमहिपाल। मुखमेंसातपिताको
काल २२ चारिकंधबसुबाहुनबली। हाथतीनिहत्यारो
छली॥ हृदयनंदमंत्रीसमअहै। नाभीदोइब्रह्मबितकहै
२३लिंगपरैदशकामीहोइ। जंघनषटअतिमातिसोलोइ॥
जोषटपरैचरणमेंआइ॥ होतैसोयमकेपुरजाइ २४॥
अथअश्विन्यादिस्वरूपउदयम्॥ तीनितीनिरसपंचपुनि तीनिचंद
औचारि। तीनिपंचऔपंचद्वै द्वैशरपंचबिचारि २५
चंद्रवेदऔवेदपुनि रामईशऔराम। लोचनतीनिउती-
निपुनि कहतसुकविगुणधाम२६ वेदसातद्वैद्वैबहुरि बत्ति
सकहतउदार। उदयअंकयेजानिये अश्विन्यादिकतार
२७ तुरँगबदनऔयोनिक्षुर शकटमृगीमुखजानु। मणि
मंदिरशरचक्रगृह मंचकशय्यामानु २८ करमुक्ताविद्रुम
बहुरितोरणबलिआकार। कुंडलपुच्छमृगेंद्रकी कहिग
जदंतउदार २९ मंचकबहुरित्रिकोणकहि त्रिपदमृदंग
समान। वर्तुलमंचकजमलसे नौकासदशप्रमान ३०॥

नक्षत्रउदयस्वरूपचक्रम् ॥

अ०	भ०	कृ०	रो०	मृ०	आ०	पु०	पु०	श्ले०	म०	पू०	उ०	ह०	चि०
३	३	६	५	३	१	४	३	५	५	२	२	५	५
अश्व मुख	योनि मुख	क्षुरा	शकट	मृगी मुख	मणि	गृह	बाण	चक्र	गृह	मंच	शय्या	कर	मोती
स्वा०	वि०	अ०	ज्ये०	मू०	पू०	उ०	अ०	श्र०	ध	श०	पू०	उ०	रे०
१	४	४	३	११	३	२	३	३	४	१	२	२	३२
मृगा	तोरण	बलि	कुंडल	सिंहपुच्छ	गज दंत	मंचक	त्रिकोण	त्रिपद	मृदंग	वर्तुल	मंचक	मुरिहा	नाव

अथदेवजलाशयप्रतिष्ठा दंडक ॥ देवताकोथापनोआरामजलाश्रय जेतेउत्सवउत्तराअयनाहीमेंकीजिये। चंदगुरुभृगुकेउद-यमेंशुक्लपक्षमृदुचरक्षिप्रध्रुवनखतयेलीजिये ॥ रिक्ताऔ मंगलरहितरिपुतीजे भवअशुभखगनहिमकरहूकोदीजि ये। जौनुजिहितिथिकोनखतकोजोदेवहोइथापियेसोतामें तौसकलसुखजीजिये ३१ ॥ दोहा ॥ साधुआठवोंबारहों मंदिरदोइविहाइ। जहाँपरैतहँसुखदहै कहतसुकविसमु दाइ ३२ सिंहकुंभकन्यामिथुन क्रमहीतेसुखपाइ। रवि कवियमशिवथापिये कहतसुकविसमुदाइ ३३ क्षुद्रदेव चरलगनमें थापनकहतसुजानु। चंद्रादिकग्रहपुष्यमें हस्तनखतमेंभानु ३४ पुष्यश्रवणअभिजितजबै तबथा पोसुरदोइ। शारदपतिऔनाकपति बड़ीसंपदाहोइ ३५ अनुराधामेंयक्षपति स्वामिकारतिकआनि। दुर्गाथापन मूलमें कहतसुकविसुखमानि ३६ लक्ष्मीव्यासअगस्त्य औ बालमीकऋषिराज। इनकोथापनपुष्यमें कहतसुक-विशिरताज ३७ गणपयक्षकाकोदरौ प्रेतादिकजेआ

हिं। इनकोथापनकहतहैं सुकविरेवतीमाहिं १३८ ॥

इतिश्रीमहाराजकुमारअचलसिंहाज्ञयाशंभुनाथकृतमुहूर्तकल्पद्रुमे नक्षत्रप्रकरणं समाप्तम् ॥

अथसंक्रांतिप्रकरणम् ॥ घनाक्षरीकाविच्त ॥ रविमेंश्रौउग्रनखत नमेंजोसंक्रमण घोराताकोनामदेतशूदनसकलसुख। चंद्रमामेंलघुनमध्वंक्षीवनिकनसुख भौमचरमहोदरीचौरन कोराखेरुख ॥ मंदाकिनीबुधमेंश्रौमित्रमें नृपनसुखगुरु थिरमंदाहारेद्विजगणकेकलुख। भृगुमिश्रमिश्रापशुमंद श्रौ तीक्षणमेंराकासीसुपंचसुखीरहतप्रसन्नमुख १ ॥ अथ कालवशात्फलं दंडक ॥ बासरकेप्रथमत्रिभागमेंजोसंक्रमणाहन तनृपनदूजेभूसुरनकेनिकर। तीजेविटनिशामुखशूदनको नाशहोतनिशाकेप्रहरमध्यनशतपिशाचशर ॥ दूसरेप्रह रमध्यराक्षसविकलहोततीसेरमें नटचौथेयामपशुपालन-र। दिनकरउदयमेंश्रखंडजेपयखंडीतेविकलहोतमासए-कभाषतसुकविबर २॥ इतिसंक्रान्तिप्रकरणम् ॥ अथश्रयन॥ दोहा॥ जे

संक्रांतिनामानि ॥

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०
पू० पू०पू० भ० म०	ह०पु०अभि० अ०	अ०ध०श० पु०स्वा०	मृ० रे० अनु० चि०	उ०उ०उ० रोहिणी	कृत्तिका विशाखा	मू०आ० ज्ये०श्ले०
घोरा	ध्वांक्षी	महोदरी	मंदाकिनी	मंदा	मिश्रा	राक्षसी
शूद्रसुख	वैश्यसुख	चोरसुख	नृपसुख	विप्रसुख	पशुसुख	चंडालसु०

अथसमय चक्रम् ॥

दिनके त्रिभाग १	दुसरे त्रिभाग	तीसरे त्रिभाग	निशामुख	रात्रिके १ पहर	दुसरे पहर २	तीसरे पहर ३	चौथे पहर ४	सूर्य्यके उदय
नृपनाश	विप्रनाश	वैश्यनाश	शूद्रनाश	पिशाच नाश	राक्षस नाश	नटनाश	अहिर नाश	पाखंडी नाशकही

षटराशीमकरते उदकअयनकहिताहि। रहींकर्कतेषटति
न्हेंदक्षिणकहतसराहि ३ जाकेजन्मनक्षत्रमें भानुसंक्रमण
होइ। रुजकलेशसोमासभरि लहैकहतसबकोइ ४ धनुष
कन्यकामीनकोमिथुनराशिकोपाइ। कहतसकलषडशीति
मुखइनकोपंडितराइ ५ तुलामेषकोविषुवती विष्णुपदीये
चारि। पंचाननऔकलशऊबृषवृश्चिकनिरधारि ६ सोर
हसंक्रमकालते घटिकादूनोंओर। पुण्यकालसोजानियो
सकलसुकविशिरमोर ७ महानिशातेओरइहि जोरविसं
क्रमहोइ। तौपूरबदिनकोयुगल दलपुनीतकहिलोइ ८
महानिशाकीओरवहि संक्रमकरेदिनेश। तौपरदिनको
प्रथमदल उत्तमगनतनरेश ९ संक्रमहोइदिनेशको जो
पूरणअधरात। तौपूरवपरदिनदुवो पुण्यकालसरसात
१० जोपूरवरविउदयते कर्कसंक्रमणहोइ। तौपहिलोदि
नपुण्यतम कहतसुकविसबकोइ ११ मकरसंक्रमणअ
स्तते होइकहूँउहिओर। पुण्यकालपरदिनकहत सुक
विनकेशिरमोर १२ तीनिदंडनिशिकेरहे कहियतसंध्या
काल। तीनिदंडदिनलौंकहै पंडितगुणीरसाल १३ या
हीभाँतिप्रदोषमें जानिलेतसबजान। तीनिमुहूरतकहत
हैं याकोहैपरिमान १४ जोप्रभातसंध्याबिषे कर्कसंक्रम
नहोइ। तौसिगरोदिनउदयते अतिपुनीतकहिलोइ १५
जोप्रदोषसंध्याबिषे होइमकरसंक्रांति। तौप्रथमहिरवि
अस्तते दिनपुनीतबहुभांति १६ विष्णुपदिनमेंकर्कमें
षोडशघटिकाआदि। अतिपुनीतहैदानको बरणतमुनि
गर्गादि १७ आदिआठऔअंतकी आठैघटीप्रमान।
तुलामेषकीपुण्यतम जानतहैंसबजान १८ मकरबहुरि

षडशीतिमुख इनसंक्रांतिनिमाह । उत्तरकीषोड़शघटी कहतकविनकेनाह १९ ॥ नरेंद्र ॥ शतभिषभरणीस्वाति आरद्रापौरंदरअश्लेखा॥बृहतनामदशपांचमुहूरतअन्नम हैंगकरिलेखा ॥ अदितिविशाखातीनिउत्तरा रोहिणिक हतजघन्य । पैंतालिसइनमेंसमर्घअति कहतसुकविबर धन्य २० ॥ दोहा ॥ इनमेंजेबाकीरहे समकहिपंद्रहतार।

बृहत नाम	जघन्या	सम नाम
श० भ० स्वा० आर्द्रा० ज्ये० श्लेषा०	पुनर्व०विशाखा०उ०उ०उ० रोहिणी	अश्व०कृ०मृ० पुष्य० म०पू० ह०चि०अनु० ध०रे० मू०अ०
अन्नमहर्घ०	अन्नसमर्घ	मोलस
मुहूर्त १५	मुहूर्त ४५	मुहूर्त्त ३०

तीसमुहूरतमोलसम बरणतबुद्धिउदार २१ मोदक ॥रवि तेदशविंशति नागदिवाकर । वसुचंद्रअठारहऔरकहे सुर ॥ क्रमहीतेकुलीरकोसंक्रमजानहु। विसवाँइमिसंबत केपहिचानहु २२ ॥ अथकरणज्ञानम् ॥ दोहा ॥ बवबालवकौ लवबहुरि तैतलगरअनुमान। बणिजविष्टियेसातहैं इन्हें करणजियजान २३ शकुनिचतुष्पदनागऔकिंस्तुघ्नये चार। येऊमिलिगेरहकहैं पंडितराजबिचार २४ दुगुण कीजियेगततिथी हरोसातकोभाग । शेषबवादिकजानि ये पंडितकहतसभाग २५ कृष्णाचौदशिउदकदल शकु निहोतहैआइ । होतचतुष्पदनागहू अमादुवोदलपाइ २६ शुक्लप्रतिपदाप्रथमदल किंस्तुघ्नहुततहोत।जानन वारेजानिहैं कहतकविनकेगोत २७॥ अथसुप्तादिज्ञानं॥गीतिका॥ तैतिलनागचतुष्पदमेंरविसंक्रमहोइतोसोवतजानो॥बैठ-

सू०	सू०	सू०
तैतिल० नाग० चतुष्पद०	गर० वणिज० विष्टिबव० बाल०	कौलवकिंस्तुघ्न० शकुनि०
सूक्ष्मवर्षण	बैठअन्न समर्घ	ऊर्ध्वसमफल

तपंचगयेदिकमेंरविऊरधऔरनमेंअनुमानो।सोवतमेंवर्षै नपयोधरऊरधमेंनकछूफलमानो। बैठमेंसूरजसंक्रमवेतौ सबअन्नमहाकुशलातबखानो२८॥अथबाहनादिकफलविचार॥ गीतिका॥सिंहव्याघ्रवराहरासभ नागकासरजानिये।अउव कूकुरमेषगोचरणायुधौपहिचानिये॥ येबवादिकजानिबा हनवस्त्रअवअनुमानिये। श्वेतपीतहरेसुपांडुररक्तश्याम बखानिये २९ असितचित्रितबहुरि कम्मर नग्नऔघन रंग। कहतहैंवहथ्यारजानहु समुझिज्योतिषअंग॥ तुप कऔरगदाकही असिदंडचापरुतोमरौ। कुंतपाशबखा निअंकुश अस्त्रशायकजीधरौ ३० कहतभोजनभातुपा यस भीषऔपकवान। दूधऔदधिचित्रअन्न गुड़ौबखा नतजान ३१ क्षौद्रऔघृतशर्कराऔकहतलेपनजानि॥ मृगनाभिकुंकुमचारुचंदन मृत्तिकामनआनि ३२ धेनु रोचनऔअलक्तजावादिऔहरदीकही। सुरमाअगरक र्पूरये अबजातिसोकहिहैरही॥ देवभूतभुजंगऔखग परशुमृगाद्विजराज।क्षत्रीविशैऔशूद्रसंकरकहतहैकविरा ज ३३ पुन्नागजातीवकुलकेतकअर्कदूबसरोज। म ल्लिकापाटलजयाके फूलकहिमतिवोज॥ बालाकुमारीब हुरिमुग्धा यौवनाप्रौढ़ाकहे। प्रौढ़ारुवृद्धीबांझबंध्या सु तायुतापतिव्रतगहे ३४॥ दोहा॥हेमरूपताबोबहुरि लो हशीशऔजस्त। कांससमानौदारुमत बंशकहैकरिक

अथसंक्रान्तिचक्रम् ॥

ब०	बा०	कौ०	त०	गर०	व०	विष्टि०	श०	चतु०	नाग०	किंस्तु०	करण०
सिंह	व्याघ्र	मृग	खर	गज	भैंसा	अश्व	श्वान	मेष	गौ	मुरगा	वाहनानि
श्वेत	पीत	हरि०	पाण्डु	रक्त	श्याम	श्याम	चित्र	कंबु	नग्न	मेछुच	वस्त्र
भुशुंडी	गदा	खड्ग	दंड	धनु	तोम	कुन्त	पाश	अंकु	अस्त्र	बाण	हथियार
भातु	पाय	भीख	पकवान	दुग्ध	चित्रतान्न	गुड़	मधु	घृत	खांड़	दधि	भक्ष्य
कस्तूरी	कुंकुम	चंदन	मृड	गोरोचन	अलक्त	जबाद	हरदी	सुरन	अगर	कपूर	लेपन
देव	भूत	सर्प	पक्षी	पशु	मृग	द्विज	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	शूर	जाति
पुन्नाग	चमेली	वकुल	केतकी	बेल	अर्क	दूब	कमल	मल्लिका	पाटल	जया	पुष्प
बाल	कुमार	मुग्ध	युवा	प्रौढा	प्रगल्भा	वृद्धा	बंध्या	बंध्या	पुत्रवती	पतिव्रता	स्त्री
हेम	रूप	ताम्र	लोह	सीस	जस्त	कांस्य	पाषाण	काष्ठ	मृत्तिका	बांस	भाजन

स्त ३५ कहेबवादिकसाजई बाहनादिपरकाश। जामें सूरजसंक्रमै ताकेहोतविनाश ३६ ॥ नरेंद्र ॥ संक्रमगतन क्षत्रआदिदै जन्मनखतलौंगनिये। तीनिगमनरसहोत बहुतसुख तीनिकष्टतनजानिये ॥ रसजेऔरहेतिनहीं में द्रव्यलाभबहुमानिये ३७॥ दंडक ॥ सूरजबलीतौकी जैनृपतिकोदरशन चन्द्रमाबलीतौशुभकारजकीजिये। मंगरकोसंगरऔरबुधकोपठनग्रंथ जीवकोविवाहकरिस बसुखजीजिये ॥ शुक्रकोगमनकीजैअतिसुखरसभीजैर विसुतदिक्षाकेकर्मरसभीजिये। ग्रंथऔधारिनिजमनमें बिचारिमतिकोठरी उघारिसबहीसोंकाहिदीजिये ३८ ॥ दोहा ॥ यदपिचंद्रमाअतिबली तारानिरबलहोइ।तौअशु भैफलजानिये कहतसुकविसबकोइ ३९ जादिनसूरज

संक्रमे ताहिबलीजोचंद ॥ मासएकभरिप्रजनको दिन दिनबढ़ैअनंद ४० ॥ अथमलमासविचार ॥ जोसूरजकासंक्रमणहोइनहींजिहिमास ॥ तौनुमासमलमासहै सज्जन कहतप्रकास ४१ द्वैसंक्रांतीहोईँजो एकमासमेंआइ । तौनमासक्षयहोतहै कहतसुकविसमुदाइ ४२ ॥

इतिश्रीमन्महाराजकुमारअचलसिंहाज्ञयासंक्रांतिप्रकरणम् २ ॥

अथगोचरप्रकरणम् ॥ मत्तगयंद ॥ तीजेछठेदशग्यारहें सूरजकेतुशनीचरमंगलराहौ । आनिपरैंजनिराशितेयेतब देतभलोभलजोचितवाहौ ॥ नंददिवाकरवारिधिपांचये खेटभयेउपजैंदिनदाहौ । जोउलटोगनियेतौभलोफलु भाषतश्रीपतिलल्लवराहौ १ ॥ दंडक ॥ दशमसहजलाभप्रथमछयेंऔसातोंचंद्रमा निपटनीकोकहतउदारहै । चौथोऔनवमआठेपंचमादिनेशदूजेहोइ जोखचरदेतदुखनकेभारहैं ॥ दूजेचौथेछठेअरुआठवेंदशमलाभहोइ हिमकरसुतसुखदअपारहै । पंचमसहजनवप्रथमऔबसुअंत्यपरैनखचरतोसकलसुखसारहै २ दूसरेऔग्यार

सू.	मं.	श	रा.	के.
३	६	१०	११	शु
९	१२	८	५	के.

गुरुको बेध

२	११	९	५	७	१०
१२	८	१०	४	३	४

चंद्रमाको बेध

३	११	१	६	७	बे	बे
९	८	५	१२	२	ध	ध

शुक्रका बेध

१	२	३	४	५	८	९	१२	११
८	७	१	१०	९	५	११	६	३

बुधका बेध

२	४	६	८	१०	११	बे	बे	बे
५	३	९	१	८	१२	ध	ध	ध

हेंनवमसुतसातयेंमें जीवजोपरैतोहोतपरमसहाईहै । प

रैव्ययनिधनदशमसुखतीसरेखचरकोऊ आनिकहौकोंने
कलपाईहै ॥ प्रथमतेपांचलौंनिधननिधिअंत्यईशउश
नाभयेतेनिधिमंदिरमेंआईहै। बसुनगइंदुनभनंदसरसा
ईसरसतीजैजानखेटतौअमेटसुखदाईहै ३ ॥ दोहा ॥
कह्योपांचहूको प्रथमबामबेधजिहिभांति। त्योंइनहूकोजा
नियोकहेकविनकीपांति ॥ सबखेटनकोमानियेकह्योकवि
नजोबेध। पितापूतकेबेधकोकहियतुहैननिषेध ४ शुद्ध
बेधनिजराशितेकहतकविनकेगोत ॥ बामबेधग्रहराशिते
नवोखगनकोहोत ५ अशुभखेटकोजोकहूंउलटेलागत
बेध ॥ तौवहशुभफलकोकरैहरैअनेकनिषेध ६ धनत्रि
कोणसितपक्षमेंजोनिशिनायकहोइ ॥ रसबसुचौथेजोख
चरबेधनमानतकोइ ७ ॥ दंडक ॥ जन्मनखतमेंग्रहणश
शिसूरजकोहोइ जाकेताकोनिजमरणबताइये। जनम
कीराशिमेंशरीरपीड़ादूजे बसुनाशतीजेबसुचौथेदेहदुख
पाइये ॥ पांचयेंतनुजचिंताछठेसुखसातयेंतियाकोदुख
आठयेंमरणनियराइये । नवेंमानहतदशएकादशसुख
लाभबारहेंमरणवाकोश्रवणसुनाइये ८ ॥ दोहा ॥ जप
सुबरणगोदानतेअशुभौशुभह्वैजात ॥ अशुभभयेनहिंदे
खियेसूरसुधाधरपात ९ ॥ मत्तगयंद ॥ पापसमेतह्वैपापके
अंतरपापतेसातयेंजोशशिआवे। ताहिकेहेबलहीनमहा
कविसोनभलोफलदानिकहावे ॥ तौशुभहोतभलोफल
देतमहाबलीसोसबकेमनभावे १० ॥ दोहा ॥ शुक्लप्रतिप
दाकोबलीजाकोहिमकरहोइ ॥ सोसुखदायकपक्षभरिकह
तसुकविसबकोइ ११ कृष्णप्रातिपदाकोअशुभआवेहिम
करजाहि ॥ मनबांछितफलदेतुहैपन्द्रहादिनलौंताहि १२

दण्डक ॥ कनीमृगुपूरुवमुकुतशशिआगनेयभौमहितद-
क्षिणप्रवाललालधरिये । नैऋतमेंतमेतमधेनुमेंदश
निवारुणीमेंनीलीकेतुवैद्भवरजवाइवमेंजरिये ॥ गुरु
हितपुष्कराजउत्तरदिशामें बुधशंभुदिशिबैनतेयपविआ
निभरिये । रविहितमानिकधरेजोमध्यमुद्रिकामेंअशुभौ
खचरतौअचलसुखकरिये १३ ॥ सवैया ॥ सूरजऔधर-
णीसुतजोप्रतिकूलतौविद्रुमलैतनुराखिये। सोनकेभूषण
सोमजकोगुरुकोमुक्ताहलमंजुलभाखिये ॥ चन्द्रकोऔ
भृगुनंदनकोरूपेकेमंदकोलोहोसदाअभिलाखिये । राव
टीराखियेराहुकेकेतकोतौदुखदुगानदीनदनाखिये १४॥
अथताराविचार ॥ दोहा ॥ चन्द्रनखतजनिनखततेगनिकीजै

ईशान० बुध० पवि०	कु० शुक्र कनी	चंद्र० आग्ने० मोती० मानी
उत्तर गुरु० पुष्कराज	मध्य सू० त्रिमा० मि०	भौम० दक्षिण मूंगा
केतु० बैडूर्य्य वायव्य०	पश्चिम० शनि० नीलमणि	राहु गोमेद नैऋत्य

इकठाइँ ॥ शेषरहैनवभागकेंतेताराह्वैजाइँ १५ जन्म
सम्पदाविपतिऔक्षेमसुप्रत्यरिमानि॥ साधकबधऔमि
त्रअतिमित्रनवोयेजानि १६ प्रथमतीसरीपांचईसतईहै
प्रातिकूल ॥ शेषरहेजेऔरतेसदाहोतअनुकूल १७ ॥
विरुद्धतारादानम् ॥ बधतारामेंहेमतिलविपदामाहँगुड़ादि ॥
प्रत्यरिमेंदीजैलवणजन्मदेहुशाकादि १८ विपदाप्रत्यरि
मीचुयेप्रथमखंडजबहोत॥तौनिषिद्धहैंसर्वथाकहतकवि

नकेगोत १९ होतदूसरेखंडजबविपदाप्रत्यरिमीचु॥ पहिलोचौथोतीसरोचरणहोतहैनीचु २० विपदाप्रत्यरिमीचुजब होततीसरेमाह ॥ सुखदहोतचारोंचरणकहत कविनकेनाह २१ ॥ अथचन्द्रद्वादश अवस्था ॥ अश्विन्यादिक गतनखतसठगुनकीजैजानि॥ वर्त्तमानकीगतघरीजोड़ दीजियेआनि २२ पैंतालिसकेभागसोंपैयेजेकछुअंक॥ बारहसोंअवशेषियेलीजैजानिनिशंक २३ कहिप्रवास औनाशपुनिमरणजयाअरुहास ॥ रतिक्रीड़ापुनिसुप्त औभुक्ताकहीप्रकास २४ ज्वराबहुरिकंपितथिराबारहु दईगनाइ॥तिनमेंभरमतचन्द्रहैनामसदृशफलदाइ२५॥ अथग्रहविरोधऔषधी स्नानको ॥नरेंद्र ॥ लज्जावन्तीकूटबरियारी कखिर्नीमोथमेंगैये। सेरसोंश्वेतहरदसरफोंकालोधोंआनिपिसैंये॥येऔषधीसजलपढ़िमंत्रनिरोगीकोअन्हवैये। जबप्रतिकूलहोंहिंरव्यादिक सानुकूलफलुपैये २६ ॥ अथ द्रव्यादीनांदानम् ॥ रविकोधेनुशंखहिमकरको भौमअरुणवृषदीजे।बुधकोहेमपीतअम्बरगुरुहेतसमर्प्पणकीजे॥ भृगुकोतुरगश्वेतकृष्णागौरविसुतहेतदिवैये। तमकोतेगकेतुकोमेढ़ादियेपरमसुखपैये २७ ॥ सवैया ॥ पंचरक्षो दिनसूरजकेकुजआठबुधौभृगुसातप्रमानहै। तीनिघरी शशिराहुत्रिमासतेमंदछमासतेकीन्हींबखानहैं ॥ जीव कोमासरहैद्वखानिये पौबोफलकोजोविधानहै। आगिलीराशिकेवाकीरहै यहजानतजेजगजाहिरजानहैं २८॥ अथदानम्॥दंडक ॥ खोटेयोगकारजकरौतौसुवरणदीजैचन्द्रमाकोशंखदैकैदोषनिहरतहैं । करणकोधानतिथिहूको देततंडुलऔ खोटेबाररतनदैआनँदभरतहैं॥ विप्रनबो

ल्लाइजेवेदेतपूजियोंइभुवनेवे चिरकालराजाराजहिकरत है। नखतकोधेनुकुघरीकोसुबरणतारारतनदियेतेसबपातकजरतहै २९ ॥ दोहा ॥ रविश्रौमंगलआदिमें मध्यपुरोधादोइ ॥ अंतचंदमंदौसदाफलदायकबुधहोइ ३० ॥ जनिनक्षत्रजिहिमासमेंपरैश्रानिजिहिबार ॥ ताकोफलख्यादितकहतसुकविसरदार ३१ गमनश्रन्नपुनिश्रगिनिभयसुमति बसनसुखवृंद ॥ दुःखहोतरव्यादिते कहत सुकविसानंद ३२ ॥

इतिश्रीमुहूर्त्तकल्पद्रुमेगोचरप्रकरणम् ॥

अथसंस्कारप्रकरणम् ॥ तत्रप्रथमरजोदर्शनम् ॥ छप्पय ॥ विष्टिपातसंक्रमणद्योसउपरागकालगुणिरिक्ता षष्ठीश्रमाछोड़िआठेहुवासिपुनिमाघफाल्गुणजेठसावनकुवारमह। मारगमाधवशुक्लपक्षदिनसाधुबारकहमृदुक्षिप्रस्वातिध्रुवश्रवणतेतीनिनखतजबलौंपरहि ॥ जोहोइरजोदर्शनप्रथमतियनसकलमंगलकरहि १ ॥ दोहा ॥ रोगश्रागमनमेंनशत सोवतश्रौव्यतिपात॥ पहिरैजोसितवसनतन सुखसमूहसरसात २ ॥ अथस्नानकामुहूर्त्त ॥ छप्पय ॥ हस्तस्वातिश्रश्विनिब्रह्मुरिबसुमित्रमृगीध्रुव । शक्रसहितशुभतिथीवारऋतुवतीश्रन्हानहुव ॥ जोकब्रह्मूमृगपूषस्वातिकरश्रश्विनिरोहिनि । इनमेंहोइततूकालगर्भपावैमनमोहिनि॥कंटकत्रिकोणशुभखचरयुत पापलाभश्ररिसहजघर। इमिकहतसकलपुस्तकनिरखि पंडितराजविचारवर ३॥ अथगर्भाधानं ॥ मूलश्रश्विनीभरनिरेवतीमघानलीजै । बधताराश्रौजन्मव्यतीपाताहिनपतीजै ॥ दिनछपाहगंडांतबह्वुरिउतपाततारमें ।द्वैसंध्यापरिहरोभौमशनिभानुबार

में ॥ वसुवेदअंगचौदशिअमालगनआठईपरिहरौ। पुनिपंचपर्वउपरागमें गर्भधारणामतिकरौ ४ ॥ दोहा ॥ कर मृगतीनौउत्तरा मित्ररोहिणीस्वाति॥ लेहुबहुरिश्रवणत्रयीकहतसुकवियाभांति५ साधुकेइनवपाँचयें लाभसहज रिपुपाप ॥ भौमभानुगुरूलगन विषमकेअंश ६ ॥ अथपुंसवनसीमंतकर्म ॥ छप्पय ॥ जीवभानुअरुभौमश्रवणमृगशिरकर लीजै।मूलअदितिअरुपुष्यसहितसीमंतहिकीजै॥ आमा छठिआठैदुवासिरिकतापरिहरिये।गर्भमासप्रतिबलीछठेंअठयेंमेंकरिये॥ कंटकत्रिकोणखचरशुभदअशुभत्रिषटप्रापतभवन। तनुविषमविषमकेअंशमें सुखीरहैरमनी रमन ७ ॥ दोहा ॥ ध्रुवपूषाशुभवारमें कोऊकरतबखान ॥ अवमेमासाधिपकहत प्रगटजानिहैजान ८ सितकुजगुरुसूरजमन्दचंदसुतहोत ॥ गर्भलगनपतिचंद्ररविकहत कविनकेगोत ९ कह्योचंद्रबलपुरुषको सबकरमन केहेत ॥ व्याहसमीसीमंतमें नारिनिहीकोलेत १० लखतलगनसीमंतमें जैलीजैतिथिबार ॥ तैलीजैपुंसवनको कहतसुकविसरदार ११ ॥ अथजातकर्मकेमुहूर्त्त ॥ पुत्रजन्मदिनजोकछू परैआनिअटकाउ ॥ शोधिमुहूरत कीजिये याकोयहैउपाउ १२ रिक्तापंचपर्बपरिहरिकै वारतिथीशुभलीजे। नखतमृदुध्रुवक्षिप्रलीजिये सकलविहितविधिकीजै॥ कैवारहैग्यारहवासर पंडितराजबुलैये। कीजैजातनामदोऊये करमसकलफलपैये १३ गेरह तेरहषोड़शे मासअंतमेंहोत ॥ नामकर्मदुजआदिदै कहतकविनकेगोत १४ ॥ अथस्तनपानकोमुहूर्त्त ॥ विष्टिपात वैधृतितजौ रिक्तामंगलबार ॥ क्षिप्रमृदुध्रुवमेंकहत दुग्ध

पानसरदार १५ ॥ अथसूतीस्नानं ॥ दंडक ॥ रेवतीतुरंगमृग स्वातीकरध्रुव अनुराधासोंसहितयेनखतअवधारिये। सूरजमहीकोसुतसुरगुरुबारलैकै नीकीतिथिनीकोयोग चितुदैसुधारिये ॥ अष्टमविशुद्धलीजैलगनसुखदअति भद्रापंचपखअबलशशिटारिये। वाहियेजोमंगलकहस बजानऐसो सूतीकेअन्हाइबेकोबासरबताइये १६ ॥ दंतो त्पत्तिकोफल ॥ प्रथममहीनामेंविनाशवाहीबालककोदूसर अनुजतीजेभगिनीबखानिये। चौथेमेंजननिजेठोभैया पांचयेंमेंकहि छठेमेंसकलभोगलाभअनुमानिये ॥ सा- तयेंमेंतातसुखआठयेंमेंपुष्टतासु श्रीनवेंदशमसुखमहा मनमानिये। ग्यारहेंमहीनामेंउठेजोदंतबालकके सुखनि कोलाभताकोअतुलितजानिये १७ ॥ अथदोलारोहणम् ॥ छप्पै ॥ दंतभानुधृतिभूपबहूरिदशवासरबीते। ध्रुवमृदुल घुयेलेहुबारशुभमुनिमनबीते ॥ पंचपंचशरपंचसाततदि नकरतेजानहु। चंद्रनखतलोंगनहुभनहुफलजोअनुमान हु ॥ रुजरहितमरणकृशताबहुरिव्याधिसकलसुखजानि यहु। दोलाभुलाइबोशिशुनकहँगुनिगुनिगणकबखानिय हु १८॥ अथनिष्क्रमणम्॥ दोहा ॥ जेईकहतपयानकोलगननखत तिथिबार ॥ तिनहींमेंशिशुनिःक्रमण कहतसुकविसरदार १९ कीतोद्वादशदिवसमें कीतोचौथेमास ॥ विधिसों कीजैदानदै पंडितकहतप्र कास २०॥ अथस्त्रीणांजलपूजनम्

अथ दोला चक्र ॥

५	५	५	५	०
निरोग	मरण	क्षीण	व्याधि	सुख

नरेंद्र॥ चैतपौषमलमासपरिहरोअस्तपुरोधादोऊ। बीतेमा सएकहिमकरगुरुशीतकिरणिसुतसोऊ॥ श्रवणअदिति

युगमूलमृगीकरमित्ररहितरिक्तासोऊ २१॥ अथअन्नप्राशनम् दण्डक॥ नन्दाचौथिनौमीचतुरदशीद्वादशीअमावशादिने शशनिमंगलविहाइकै। जनमकीलगनतेआठई लगन आठयेंकोअंशमीनमेषद्वाइचकबराइकै॥ पुरुषकोअठयें छठेमहीनाकीजियतुनारिनकोपंचमऔसातयेंकोपाइकै। थिरचरमृदुलघुलीजियेनखतअन्नप्राशनप्रथमकीजेदेव नपुजाइकै २२॥ दोहा॥ साधुकोनकंटकसहितत्रिषट्ला भमापाय॥ दशमशुद्धमेंजोकरै सबसुखहोइअमाय २३ छठेआठयेंलगनमेंसाहितनाहिमकरहोइ॥ अन्नपराशनकी जियेबरणतपंडितलोइ २४ जोत्रिकोणव्ययकेंद्रमेंसहित होइअर्कादि॥ताको जोफलबिहितहैसोभाषतगर्गादि २५ कुष्ठीमषकरपित्तरुक ज्ञानीजीवेभूरि॥ भोगीवातीनहिंजु रैअशनपेटभरिधूरि २६ क्षीणचन्द्रमाजोरहैइनहींथान समोइ॥ तौवहबालकजनमभारिबड़ोभिखारीहोइ २७॥ अथभूमिप्रवेशनम्॥ दण्डक॥ पुष्यमृगीअनुराधालघुध्रुवऔ शुभबारजबैकरिपाइये। पांचयेंमासबलीकुजहोहिजोचौ थिचतुर्दशीनौमिबराइये॥ पूजनकोधरणीऔवराहकोभू मिप्रबेशनऐसेकराइये २८॥ दोहा॥ वस्त्रशस्त्रऔलेखनी पुस्तकधरियेआनि। सोनोरूपोजोगहैबालआपनेपा- नि २९ कर्मवृत्तितिहिवस्तुकीतिहिबालककीहोइ॥ यह प्राचीननकीमतोकहतसुकविसबकोइ ३०॥ अथतांबूलभ क्षणम्॥ घनाक्षरी॥ ध्रुवमृदुलघुवसुइंद्रभश्रवणमूलस्वातीशुभ बारदिनकरहूकोलेतहै। मिथुनमकरकन्याकुंभभखल गनमेंसाधुजैपरेंकोनकंटकनिकेतहै॥ पाखएकादशमें दशमतीसरपरेतौमासयेद्वेकहतकबिअर्धसमेतहै। दुंदु-

भीवजाइगौ।रिगणपपुजाइ नृपआनँदसोबालककेवीरीमु खहेतहै ३१ ॥ अथकर्णवेध ॥ कवित्त ॥ श्रवणतेढ्ढेआदितिमृदु लघुबुधगुरुहिमकरुसानायेचारोबारलीजिये। पूसमधुह रिकेशयनमेंजनममास रिकताऔसमुसमापरिहरिदीजे ये ॥ छठेआठेंसातवेंमहीनासिसुजनमतेछोड़िरविसोर हैंदिवसकोपतीजिये।शुद्धमतिगेहशुभकंटकत्रिकोणपाय तीजेछठेग्यारहेंकरणबेधकीजिये३२ ॥ दोहा ॥ वृषभतुला धनमीनलै सितगुरुजोतनहोइ॥ ताराजनमनलीजियेक हतसुकविसबकोइ३३ ॥ अथचूड़ाकर्म ॥ कवित्त ॥ देवशिवथा पनाविवाहनवगृहजानचूड़ानृपतिलकउपनयनगायेहैं । दक्षिणअयनगुरुभृगुअस्तबालक बिरधहूमेंकेतुकेउदय मेंनआयेहैं ॥ गरभतेतीसरीवर्षतेविषमलीजैआदिछठि आठेहरिरिकतानल्यायेहैं। परबनलीजैशुभवारनमेंकीजै क्षोर राजनकेकाजकविराजनबतायेहैं३४ जनमऔराशि कीलगनते लगनआठे छोड़ि आठोगृहशुद्धभृगुबिनाचा हिये । तीजेछठेग्यारहेंअशुभबुधगुरुभृगुकंटकेमपरेतौ मुहूरतसराहिये ॥ क्षीणशशिसूर जअवनिसुतरविसुतकं टकपरेतेफलक्रमतेनिबाहिये । मृतुपुनिशास्त्रतेमरणपंगु तापैज्वरकहियेसुमनमतिसिंधुअवगाहिये३५॥दोहा॥इंद्र भलघुचरमृदुनखतशुभकारकयेहोत॥ याहीतेलीजैइन्हैं कहतकविनकगोत ३६ पंचमासतेअधिकशिशुजननिस गर्भाहोइ ॥ तौमुण्डननहिंकीजिये कहतसुकविसबको इ ३७ पंचवरषतेअधिकजो बालकहोइप्रकाश। यदपि सगर्भाजननिहै होतदोषकोनाश ३८ मातासूतीऋतुव ती भयेनमुण्डनहोत॥ ज्येष्ठपुत्रकोज्येष्ठमें मनेकरतकवि

गोत ३९॥ सवैया ॥ मुण्डनकाजमेंताराबली नतौहोइस कैनासिगरोजगुगावे । पैजोनिशाकरहोइत्रिकोणमें कै शुभमीतकेवर्गहिपावे ॥ कैनिजवर्गकेआपनेउच्चमें शोभ नखेटकीराशिमेंआवे। गोचरमेंबलीक्षौरपयानके दोषन तौवहआशुनशावे ४० ॥ दोहा ॥ दुष्टहोइघरमेंधरनि हर निसुखनिकेसाज॥ पुष्टहोइताकोजुपति तौनहिंआवति बाज ४१ ॥दण्डक॥ क्षौरेतेनौमदिनरिक्तापरबनिशासंध्या जेकहींहैंदोउतिनतेडरतहै । आसनकेऊपरअशनकिये भूषणकेबहुरिअन्हातनमनमेंधरतहै ॥ रणकोचलतऔ पयानकोसमयपाइतेलतनलाइकैनफेरिअचरतहै । जी वोबेहुँकालजेचहतमहीपालतेवे कबहुँनऐसेकालमुण्डन करतहै ४२ ॥ दोहा ॥ यज्ञब्याहसुतकेसमय भयेबन्दिते मुक्त॥ द्विजनृपशासनतेबयन सदाकहतहैयुक्त ४३ सिं धुनान्हतीरथगमन मृतकब्रह्मवनजौन ॥ होइसगर्भानारिजो भूलिकीजियेतौन ४४ कहेउपाँचयेंपाँचयें दाढ़ी मुण्डनकर्म॥ क्षौरनखतातिथिवारमेंयहराजनकोधर्म४५ क्षौरनखततेजोलगन उपजिपरतिहैआइ ॥ तिनलगन नमेंकीजिये क्षौरकहतकविराइ ४६ ॥ सवैया ॥ पंचमघा जिनिमित्रमेंतीनिरुकृत्तिकावारछावारबनाये। सम्बतए कमेंलीकखचाइकहैकविज्योतिषजेपाढ़िआये ॥ रोहिणी मेंबसुवारकहेपुनिआदिकीउत्तराचारिगनाये । होइबिरं-चिसमानतऊतिनयमकेपुरमंदिरछाये४७ ॥ अथअक्षरारंभ॥ विधि ॥ गौरिकोनंदनवाकरमा हरिकोकरिपूजनपांचयेंसालमें। द्वेजतेदैछठिपांचदशेहरिएकादशीशुभबासरजालमें॥ रेवतीओणपुनर्वसुईसबस्वातिऔचित्राकहेलघुहाल

में। मिश्रभउत्तराश्रोणमेंश्रक्षरस्वच्छलिखेतेबढ़ैबुद्धिबाल
में ४८॥ अथगुरुशुक्रबालवृद्धत्वमाह॥ घनाक्षरी॥ प्राचीश्रौप्र
तीचीजबउशनाउद्योतहोततीनिदशबासरलौं बालकब
खानिये। श्रस्तकेरहतदिनपन्द्रहश्रौपांचजबेतहीदुहूंदि
शिमेंविरधश्रनुमानिये॥ पन्द्रहदिवससुरनायकसाचिवहो
तबालकविरधदुहूंदिशनिमेंजानिये। पंडितकहतसुनिली
बोहै उचितयामेंकीबोशुभकाजनकोमनमेंनश्रानिये ४९
दोहा॥ दिशानेमतजिकहतइकबासरदशमुनिराम॥ बाल
वृद्धगुरुशुक्रकोजिन्हैंजरूरतकाम ५० श्ररधसहिततीनै
सदाबासरसहितबिबेक॥ बालवृद्धद्विजराजकोवरणत
पण्डित एक ५१॥ अथविद्यारंभ॥ दंडक॥ मृगकर श्रवणते
तीनितीनिश्रश्विनीलैमूलतीनिउपूरबाभुजंगपुष्यलीजि
ये। रविगुरुबुधभृगुचारिउबारलीजियतु द्वीजतीजपांचे
छठिइनकोपतीजिये॥ दशमीतेतीनिलैशुभदकोणकंटक
मेंश्रानिजबपरैतबश्रतिसुखजीजिये। पूजिगणपतिद्विज
राजनिकोदक्षिणादैविद्याकोरंभहर्षितहियेकीजिये ५२॥
दोहा॥ मित्रबहुरिध्रुवरेवतीएकेकहतउदार॥ येईउड़गण
लीजियेधनुविद्याब्यवहार ५३॥ अथव्रतबंध॥ तीनिकाल
उपनयनकेनित्यकाम्यश्रौगौन॥ तेवेजानतज्योतिषीधर्म
शास्त्रवितजौन ५४ दुजनिश्रादियोनित्यहै श्रष्टईश
श्रौभानु॥ काम्यगर्भजानितेविशिखरसवसुवर्षबखानु५५
षोड़शद्वाविंशतिबरषचतुर्विंशपर्यन्त॥ गौणकहतजानि
गर्भतेजेजगबड़ेमहन्त ५६ इनतेऊरधकालजोसोन
हिंलायकहोत॥ गायत्रीनहिंदीजियेकहतकविनकेगोत
५७॥ दंडक॥ थिरचरमृदुलघुलीजियेनखतवेऊमूल

तीनोपूरवाभुजंगईशगाइये।रविगुरुबितसितहिमकरह्वी
जतीजपंचमीबहुरिदशमीतेतीनिल्याइये ॥ कीजियत
ब्रतबन्धपंचमीलोंकारेपाख शुक्लमेंदशमीतेउत्तमगनाइ
ये ॥ तीसरेपहरमेंनशतहैकहतकवियाहीविचगाणिके
मुहूरतसुनाइये ५८ ॥ दोहा ॥ छठितेदशमीलोंकहत
मध्यमदोऊपच्छ ॥ शेषकालतेअधमहैंबरणतपण्डित
स्वच्छ ५९ ॥ गीतिका ॥ रिपुआठयेंगुरुसोमवितसितम
रणदायककहेसबै । पुनिबारहेंनिशाकरउशनादहीमीचु
परेजबै ॥ तनुगेहपंचमआठयेंगृहपापआनिपरैजबै । दु
खदेतअद्भुतभाँतिभाँतिउपायहूनाहिंकछुफबै६०॥ दोहा ॥
आठौंछठवोंव्ययभवनशुभसोंबार्जितजासु ॥ जोशपायभ
वरिपुसहजहोइसकलसुखतासु६१स्वग्रहउच्चपूरणाशशी
परैदेहकेगेह ॥ देइसकलसुखसम्पदाकरैआपदाखेह६२
गीतिका ॥ उशनाबृहस्पतियेदूवोद्विजराजकेकुलपालहैं ।
पुनिभानुमंगलभूपकेकुलकेबिशालदयालहैं ॥ शशिवै
श्यचंदनिसोमकोसुतशूद्रपालकजानिये । रविसूनुपालत
अन्त्यजातिनभाँतिभाँतिबखानिये ६३ ॥ दोहा ॥ गुरु
भृगुमंगलसोमसुतपण्डितकहतसुदेश॥येऋग्वेदहिआ
दिदैहोतसबैशाखेश ६४ ॥ गीतिका ॥ शाखेशबासरराशि
मेंब्रतबंधउत्तमजानिये । समउच्चगोचरमेंबलीतबकरत
पातकहानिये ॥ दिननाथऔनिशिनाथजीवमहाबलीअ
नुमानिये । भृगुजीवशाखपअबलतौबटुशास्त्रहीनबखानि
ये ६५ जन्ममासनक्षत्रऔतिथिलग्नमेंब्रतजोकरै । होइ
पण्डितराजतौबटुनित्यआनन्दसोंभरै ॥ गर्भद्वैलगविप्र
केकुलक्षत्रबंशद्वितीयते। होतमकालतेयहजानजानतजी

यतें ६६ जनिराशितेधनलाभसप्तमकोणमेंगुरुशुद्धहै। रिपुतीसरे दशलग्नतौ पूजनप्रखानतशुद्धहै॥ सुखअष्टद्वादशहैहितो पूजौकियेकहियेनही।ब रकन्यकाकहँजेपुरातन लोगहैंतिनयौंकही६७ गुरुकर्कऔ धनमीनके

	कुल	धी	षग्रहाः	
द्विज	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	अंत्यज
बृ० शु०	सू० मं०	चन्द्रः	बुध	शनि
ऋग्वेद	यजु०	साम०	अथर्व०	शाखेशाः
बृ०	शु०	मं०	बुध	बाराः

निजमित्रकेघरआवहीं।निजअंशमेंपुनिहोइकेबरगोतमी पदुपावहीं॥ मृतिअंबुयद्यपिबारहों शुभदेतहैफलआइ कै। अरिनीचकेघरजाशुभोफल देतनीचरिसाइकै ६८ कृष्णपक्षप्रदोषमें शनिवारमेंनिशिमेंकरै। प्रातगर्जहिं मेघजो ब्रतबंधमेंबटुमतिहरै॥ हैंगलग्रहजेतिथी तिनमें भूलिहूनहिंकीजिये। चारितेरसितेनयमुनि मुनिबेदबसु कहिदीजिये ६९ रबिआदिकेलवमेंपरैतनु तौकहैफल जानहे। अतिक्रूरऔजडपापमें रतहोतबुद्धिनिधानहै॥ षट्कर्ममेंरतयज्ञकारक होतमूरखहैमहा। अवलोकिग्रंथ नकोमतौ नियनानिकैहमहूंकहा ७० साधुकेलवमेंपरैश शिहोतपंडितबालहै। आपनेलवमेंपरैतबदेतदुःखअपार है॥ जोपुनरबसुश्रवणको शशितौसबैसुखसारहै ७१ रबि आदिकंटकमेंपरैताकेयहैफलजानिये ।क्षितिपालसेवकवै श्यवतिहथियारधारबखानिये ॥ बहुग्रंथपाठकबुद्धिवंत महाधनीअनुमानिये। सेवामलेच्छनकीकरै तिहिताहिकी सुनमानिये ७२॥ दोहा ॥ क्रमतेसितगुरुचंद्रमा रबिकुज मंदसमेत॥ निर्गुणक्रूरनिलज्जपटु परैजुसाधुनिकेत७३

गीतिका॥ निशिनाथजोभृगुअंशमें भृगुजोत्रिकोणगहोइ। सुरनाथकोगुरुजोरहैतनुगेहआनिसमोइ॥ श्रुतिचारिनिजकरतलकरैबटुहोइयज्ञनिधान। रविसूनुकेलवमेंपरैनिरलज्जताहिबखान ७४॥ सवैया॥ ज्येष्ठमेंदुइजअसाढ़में दशेअरुपौषमेंएकादशीजियजानिये। माघमेंद्वादशीपाखउज्यारोकीभूततेतीनितिथीअनुमानिये॥ आठैऔसंक्रमकोदिनजानअनध्ययहोताहियेपहिंचानिये। यज्ञोपवीतऔऔपढ़िबेकोकहैसबबुद्धनिषिद्धबखानिये ७५॥ दोहा॥ तेरसिकोअधरातलोंचौथिपहरलोंराति॥ डेढ़पहरलोंसप्तमीयहप्रहदोषकीभांति ७६ बरुआभोजनहूबिनाहोइकछूउतपात॥ यहौअनध्ययहोतहैशांतिकियेमिटिजात ७७॥ दंडक॥ करतेलौतीनितीनोपूरबाभुजगमिलिमगमूलाशिवऋगवेदनकोगायेहैं। मृगकररेवेअनुराधाआदितियुगथिरजेनखतबजुवेदनकोआयेहैं॥ हयवसुपुष्यकराउत्तराकविनबतायेहैं। रेवेभृगुहयअनुराधाकरपुष्यवसूआदितिअथर्वणकेपाठिनसुनायेहैं ७८॥ छंद॥ नंदीमुखशराधकेपीछेऔरलगननहिंआवे। वटूकीमाइरजोदरशनतेमलिनहोइदुखपावे॥ करियेशांतिबुलाइबिप्रबरबहुतदक्षिणादीजे। मुण्डनब्याहउपनयनतीनोंहियहर्षितह्वैकीजे ७९॥ इतिव्रतबंध॥ गीतिका॥ व्रतबंधकीतिथितारलैबिनभौमवासरलैसबै। पुनिअस्तमंगलकोनहोइप्रशस्तह्वैकरियेतबै॥ जबलौंबिवाहभयोनहोइमुनीशयोंसगरेकहैं॥ छुरिकाबँधावतसुतनकोसबभूपजेमंगलचहैं ८०॥ दोहा॥ कहेनखतजेचौलकेभयेषोड़शीवर्ष॥ करतसमावर्तनसबैतीनोंबरणसहर्ष ८१॥ इति संस्कारप्रकरणम्॥

अथविवाहप्रकरणम् ॥ दोहा ॥ शीलवतीयुवतीनतेहोत
धर्म्मधनकाम । शीलहोतजोव्याहकीलगनबनेअभि
राम १ तातेलगनबिवाहकीहैबिचारिबेचारु ॥ याहीते
लहतींसबैतियापतिब्रतपारु २ ॥ कवित्त ॥ प्रथमयतन
सोंरतनलैगणकपूजिबूझौबरबधूकोबिवाहमनहरिकै ।
बोल्यौतौगणकखलाभतीजेतियसुतचंदपरैजीवलखैलो
चनपरारिकै ॥ कैतौगौकरकतुलालगनसमेतशुभशुभ
औलोकेमैंकहतनिरधारिकै । जातह्नैहैव्याहूमनआनंद
मगनह्नैहौयहौबहुसंपतिबिपतिदहोडारिकै ३ ॥ गीतिका॥
ओजकेलौऔजमेंरतचन्द्रमाभृगुहोइ।औबलीसबभांति
सोंतनुगेहदेखतहोइ ॥ तौलहैबरबरबधूपुनिहोइजोसम
धाम । तौमिलैबरकोबधूसुखदसदाअभिराम ४ प्रश्न
कोतनुतेपरैरिपुआठयेंनिशिनाथ।सातयेंधरणीतनयतनु
सोपरैखलसाथ॥कैशशीतनुजोरहैकुजबामधामसमोइ।
जानियेबसुबरषमें विधवाबधूवहहोइ ५ प्रश्नकीतनुते
परै खलषटेपंचमकोइ। नीचजोनिजराशिहै तामेंबिरा
जतहोइ ॥ ताहिकोरिपुजौनुहै ताकोबिलोकैआय। वह
बधूमृतपुत्रिणी विधवाकहेकबिरायद ॥ दोहा ॥असितपक्ष
कोचंद्रमा जोतनुतेसमठौर॥ तौबिवाहनहिंह्नैसकै कहत
सुकबिशिरमौर ७ छठेआठयेंजोशशी अशुभविलोकैआ
इ॥तऊबिवाहनह्नैसकै कहतसुकबिसमुदाइ ८॥ कवित्त ॥
प्रथमजननकालताकोअवलोकियत बलीकाकेबालिका
केबालाबिधवाकोयोगजोपरै। तौवहकरैसुभगाकोव्रतसुम
नह्वै न्योपसोबुराइचलदलपूजिबोकरै ॥ कैतौहरिमूरति
सोपूरनकलशकेतौ पीपरसोंजाइबिधिवतभौंवरैभरै। दी

जेवाहिब्याहिचिरजीवीजानिपरैताहि दोषनपुनरभूकोऊ
मनमेंधरै ९ ॥ सृग्विनी ॥ ग्रामआव जहांप्रश्नकोठौंवरी।
डावरेगोदमेंकै लियेडावरी ॥ कन्यकाहोइ तौ कन्यका
मानिये। बाल जो होइतौ बालकै जानिये १० ॥ दोहा ॥
वीणादुंदुभिशंखजो बाजिउठैतेहिठौर ॥ तौमंगलअनुमा
निये कहतसुकबिशिरमोर ११ खरवाग्रसकुक्कुरतहां बोलि
उठैजोस्यार ॥ महाअमंगलजानिये कहतसुकबिसरदा
र १२ ॥ अथबरिक्षा को मुहूर्त ॥ नरेंद्र ॥ स्वातीश्रवण पूर्बातीनिउ
ऊषामित्रभवासू। अनलव्याहकेनखतनिहूतें आनिमि
लैयततासू ॥ लशुभतिथीबहुरिशुभवासर बरणबरणकी
जियतयामें। पुनिफलदानमुहूरतगणिकै होतपरमसुख
जामें १३ तीनिपूरवातीनिउत्तराअनलयुगलजलआवै।
लैशुभतिथीबारशुभवंइ जिन्हेंसकलकबिगावै ॥ लैफल
बिप्रभाइदुलहिनिको जाइ बसनबसुलैकै। यथाशक्ति
विप्रनकोदीजिय बरहिपूजिकैदैकै १४ ॥ गीतिका ॥ गुरु
कन्यकाकहँजोबली तबहीशुभमंगलकीजिये। समबर्ष
में पुनिकीजिये रसतेनऊनहिंलीजिये ॥ बरकोबलीजब
होहिसूरज नेकभांतिनआइकै। करियेबिवाहदुहूनको
शशि जोबलीसुखपाइकै १५ घटनक्रगोअलिमेषयुग्म
जबैदिवाकरआवही। करियेबिवाहबिचारितौंबर कन्यका
सुखपावही ॥ पुनि मिथुनकेरबिजोअसाढ़ासित दशैलग
कीजिये। मधुपौषकातिकमेषमेंमृगकीटहूमहलीजिये १६
तिथिजन्ममासभमेकरग्रहमूलिहूनाबिचारिये। जबआदि
दोहदकेसुतासुत जीजबेअबछारिये ॥ इनतेजोदोहद
भिन्नके तबकीजियेकविजनकहै। धन पुत्रपौत्रसमेततौ

सुखसंपदासिगरीलहै १७ ॥ मदिरा ॥ जेठजोद्वैमहँएकहु
होइतौहोइज्येष्ठकेमासमेंमध्यमजानिये । तीनिजोजेठक
हैंसबपण्डिततौनहिंब्याहकेयोगबखानिये ॥ एकैकहैंरवि
कृत्तिकाकेतजिब्याहदुहूँकोत्रिजेठमेंठानिये । होहिसुता
सुतजेठेदुहोतहूनहिंब्याहहियेअनुमानिये १८ पूतको
ब्याहभयेतेछमासलौंभूलिहूकीजैनब्याहसुताको । कीजै
नमुंडनतौफिरिमुंडनदेखियेजोसुनियेकुर्माको ॥ दीजैनद्वै
भगिनीसंगभैयनिब्याहचचाकेभतीजोकहाको । कीजैछ
मासलौंनापितृकाजकहैकबिवैयशजाहिरजाको १९ ॥
चौपाई ॥ होइतीनिपुरुषाकोबीचु । काहूआनिगहैजोमीचु॥
ब्याहमासवातेचितुधरै । सूतकअंतशांतिकोकरै २०
चूड़ाव्रतबिवाहकेअंत । उचितनहींभाषतहैंसंत ॥ जो
व्रतबन्धभयोकुरुमासें । चूड़ाबहुरिहोइनहिंतामें २१ ॥
दोहा ॥ बिदाकीजियेबीचहीअब्दभेदजोहोइ ॥ तौफिरि
दोषनमानियेकहतसुकबिसबकोइ २२ रूपमालजेभुज
गममभयेभुवकामिनीअरुकंत ॥ब्याहहोतहितलहैतिन
कीसुसूतनअंत २३ होहिमूलजेतौसुसूपतिज्येष्ठइंद्रभ
जात ॥ जोद्विदैवतमेंहनैनिजकन्तकोलघुभ्रात २४ आ
दिपादगुणद्वीशकेतिनमेंउपजेनारि ॥ पंडितकहतबिचा
रिकैसोदेवरसुखकारि २५ अंत्यपादजोमूलकोअंत्यसर्प
कोआदि ॥ तामेंहोतसुतासुतौसुकविसराहततहि २६
बरणवश्यताराबहुरियोनिप्रीतिग्रहमित्र ॥ गणभकूटना
ड़ीइतेपंडितकहतबिचित्र २७ ॥ अथवर्णम् ॥ धरणिपाल
विटशूद्रपुनि चौथोबिप्रविचारि ॥ कहतबर्णमेषादिते
तीनवारनिरधारि २८ बनिताबरकेबरणतेउच्चबरणजो

होइ ॥ ताहिनिषिद्धबखानियेकहतसुकविसबकोइ २९ ॥ अथवश्य॥चर्चरी ॥ सिंहछोंड़िमनुष्यकेवश्यहैचतुष्पदजाल ।

वर्णचक्रम्				वश्यचक्रम्			
विप्र	च्छत्री	बैश्य	शूद्र	नर	चतुष्पद	जलचर	कीट
१२	१	६	०	६	१। २	१० । ३०	८
८	५	२	३	०	५ ८	११। १२	४
४	९	१०	११	३	१० ९०		

भक्ष्यहैंजलजंतुबलधुजशरीरविशाल ॥ अलिसर्पयद्यपिभक्षतद्यपिदेतशंकजनाइ । बुधकोदुवोनरऔतुलाहिकबिन्ददेतजनाइ ३०मेषगोधनसिंहऔमृग कोजुपूरबअंस । हैंचतुष्पदयेसबै बरणतसुकविअवतंस ॥ मृगभागउत्तरकुम्भमीनइन्हेंकहेजलजंत । अलिकर्कबृश्चिकजानियेसिगरेबखानतसंत ३१ ॥ अथतारा ॥ चौपाई ॥ बरतेंगनियेनखतसुताको । कन्यातेगनियेभरताको ॥ नवकेभागशेषजेरहैं । गुणमुनिपंचअशुभमुनिकहैं ३२ ॥ अथयोनि ॥ छप्पै ॥ तुरगयोनिहयबरुणहोतकासरसमीर।करिकेहरिबसुअजबरणभरनिपूषाकहिकूंजर ॥ गुभअनलयेमेषश्रवणजलजानोबानर । अभिजितविश्वभनकुलरोहिणीमृगशिरअहिवर ॥ मृगयोनिमित्रइंद्रभकहतश्वानमूलसंकरनखत ३३ ॥ चौपाई ॥ मघायुगलयेमूस

अथ योनिचक्रम् ॥

अश्व	भैंस	सिंह	गज	मेष	बानर	नकुल	सर्प	मृग	श्वान	मार्जार	मू०	[illegible]ाघ	गो	याान	
अ. ध.	ह. स्वा.	ध. पू. ३	भ. रे.	पु. कृ.	श्र. पु.	ऽ.भ· जित् उ३	रो. मृ.	अ. ज्ये.	मू. आ.	श्ले. पु.	म. क.	चि. त्र.	उ. ३ उ. १	न	ह त्र

बखानहु । बाघद्वीशचित्रकोजानहु ॥ अहिरबुध्नअर

ग्रहाणांमित्रामित्रचक्रम् ॥

र०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	ग्रह
मं० चं० बृ०	बु० शु०	सू० चं० बु०	सू० शु०	सू० चं० मं०	श० बु०	शु० बु०	मित्र
बु०	मं० बृ० शु० श०	बु०	श० बृ० मं०	श०	मं० बृ०	बृ०	सम
शु० श०	० ०	शु० श०	चं०	बु० शु०	सू० चं०	सू० चं० ०	शत्रु

यमागहुहै ३४ ॥ दोहा ॥ औरसबैशुभहैंसदाकहीयो नियहजौन ॥ जासोंजासोंबैरहैछोंड़िदीजियेतौन ३५ ॥ अथग्रहाणांमित्रामित्रं ॥ दंडक ॥ सूरजकेमित्रगुरुचन्द्रमाअ वनिसुतबैरीभृगुमन्दसमसोमजगनायोहै।चन्द्रमाकेचंद्र सुतसूरजपरमहितऔरसमसबैबैरी कोऊनकहायोहै ॥ मंगलकेमीताहिमिकरगुरुदिनकर सूकसूकशनिबैरीस मसोमसोमजबतायोहै । समशनिजीवकुजामित्रदिनकर भृगुबुधके सुधाकरअकेलोअनभायोहै ३६ जीवकेदिने शकुजचंद्रमापरमहित बैरीबुधशुक्रसमसूरजकोनंदहै । उशनाकेसोमशशिजशनीचरपरमहित समकुजजीवबैरी रविशशिमंगलअमन्दहै॥जेवेमहाजानजियकरतबखान याकोतेवेदिनदिनदूनौपावतअनंदहै ३७॥ अथगणबिचार ॥ घनाक्षरी ॥ श्रवणपूषास्वातीअनुराधामृगकरहय अदिति युगलयेसकलदेवसकलगणहै । रोहिणीऔभरणीमहे शकोनखततीन्यो पूरबाऔउत्तराकहतइन्हेंजनहै ॥ म घाअहिमूलवसुशक्रभविशाखातक्ष अनलवरुणकाचो अशनअमिषहै । रक्षसअसुरकालिमध्यम अमरनरराक

सनरनदेतदेखतमरनहै ३८ ॥ दोहा ॥ होहिंएकगणमें दुवोमानिनिऔभरतारु ॥ करैसकलसुखकालबहुसंपति सहितअपारु ३९ ॥ अथराशिकूटम् ॥ चर्चरी ॥ जोछठेअरु

गणचक्रम् ॥

देवगण	मनुष्यगण	राक्षसगण
अ० रे० स्वा० ऽनु० मृ० ह० श्र० पुन० पुष्य०	रो० भ० आर्द्रा पूर्वातीन उत्तरा तीन	म० श्ले० मू० ध० ज्ये० वि० चि० कृ० श०

आठदंपतिपररूपरहोत।भूलिब्याहनकीजियेकविजबखा नतमौत ॥ पांचयेंनवमेंपरेतौतबहोतहानिअंत्य ॥ बार हेंधनअधनऔरभलेकहेंकविसत्य ४० ॥ दंडक ॥ खोटो जोभकूटअधिपतिएकैदुहुनकेकैतौमीतदोऊ नाड़ीशुद्धि पुनिपाइये । मानियेनदोषकछूनिपटनिशंकह्वैके कहत सुकविकीजिसेवेमनभाइये ॥ होइछठिआठेंराशिजुदेजु दे ग्रहनकीतवेदोऊमीतकैतौबलीब्यवसाइये । ताराशु द्धिवश्यराशिवशतानहोइतहू कीजैपरिणयनमधुरगीत गाइये ४१ सवैया ॥ राशिपदोऊपरस्परमीत जोतौहठि कैगणदोषनशावै । अंशननायकमीतदुवो सुखदेत महादुखदूरिबहावै ॥ राशिपबैरीदुवोजबहोइँ भकूटसुमी भयकोउपजावै । दुष्टभकूटजोराशिपमीतजोदूरिकरैसु खपंडितगावै ४२ ॥ अथ नाड़ी विचार ॥ दंडक ॥ अश्विनी तेलखियेउरगगतितारेतामों कीजियेबिचारकंतकामि नीकोनमसो । परैआदिनाड़ीमेंनखत आनिदंपतिकेक रताबिवाहदोऊरहतनक्षेमसो ॥ मध्यमेंपरतजबतारेआ निदुहुनके तबहरिलेतयमदुहुनअयेमसो । अंतमेंपरै

तौंकैतौंजुदेजुदेआनिपरे द्वौबिहरहिंगूहूरेगेहपूरेहेमसों ॥
४३ ॥ अथ नक्षत्रकूटसवैया कवित्त ॥ रेवतीतेरसपूरबभागहेईश
तेबारहमध्यबखाने । शक्रभतेनवयेंपरभागहेभाषतपंडि
तराजसयाने ॥ पूरबभागपरेउड़दोऊतौनारिरैहैंपतिको
सुखमाने । मध्यमेंप्रीतिदुहूकेपरैपरपीउरहैप्रियैप्राणसी
जाने ४४ ॥ अथाष्टवर्ग ॥ अकचटतपयसबर्गयेगरुड़औत
मृगराज ॥ श्वानसर्पमूसोमृगामेषकहतकविराज ४५ ॥
दंडक॥राशिएकैदुहुनकीनखतजुदेजोहोइँराशीदेनखतएकै
नारीऔपुरुखको॥तौनाड़ीचक्रकोऔगणकोजादोषकेहो
तसोविलीनपीनहोतुगणसुखको ॥ दुहूंकोनखतएकैहोइ
कैजनमसैमेचरणजुदेजोकरिसकतकुरुखको। दंपतिबेस
पंतिअमितादिनादिनलहे कहेसबपंडितमरोरेमुखदुखको
४६॥अन्यविचार ॥ चाकरकेनखततेनृपकोप्रथमहोतसेवा
कोबिनाशहोतकहतसयानेहैं । ऋणीतेजोधनीकोनखत
होतवाहीविधिधननाशहोतआसुजगजनजानेहैं ॥ नारी
तेजोपुरुष नखतअगमनहोत ताहिबिननायकसकल
अनुमानेहैं । नगरतेनगरकेबासीकोप्रथमपरैरहैसबसुख
कविराजनबखानेहैं ॥ ४७ ॥ अथराशीशाः ॥ सवैया ॥ सिंह
मेंभानुकुलीरमेंचंदअनंदसोबैठेमहीपकहाये । सोमज
शुक्रमहीसुतजीवशनीचरपाँचौतहांसुनिआये । आगेते
राशीदईक्रमतेरबिपीछेतेचंददईसुखपाये । याहीतेद्वैद्वै
भईउनकोइनएकहीएकसोंप्रेमबढ़ाये ॥ ४८ ॥ अथ षट्वर्ग
होरा ॥ दोहा ॥ भीतरपन्द्रहअंशके बिषमराशिग्रहकोइ ॥
सोरविकेहोराबसै अधिकचंदकेहोइ ४९ समकोपंद्रहअं
शलौंहिमकरहोरातौन ॥ अधिकभयेतेकरतहैरविकोहो

रागौन ५० ॥ अथ द्रेष्काण ॥ भीतरजोदशत्र्यंशकेसूनतजै निजचाल ॥ करैपाँचईराशिसोबीसत्र्यंशलौंहाल ५१

ग्रहाणांस्वग्रहादिराशयः ॥

र०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	ग्र०	हाः
सिं	क	मे वृ	क मो	ध मी	वृ तु	म कुं		स्वराशय
म०	बृ०	म०	क०	क०	मी०	तु०		उच्चराशयः
तु०	बृ०	कर्क	मी०	म०	कं०	मे०		नीचराशयः

अथहोराचक्रम् ॥

मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	राका
र	च	र	च	र	च	र	च	र	च	र	च	ग्रहवर्गः
१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	अंश
च	र	च	र	च	र	च	र	च	र	च	र	गृहः
१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	अंश
मे	म	तु	क	मे	म	तु	कर्क	मे	म	तु	कर्क	नवमांशाः

सप्तमांशचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७
४	८	१७	२५	२१	२५	३०
१३	३४	८	२५	२५	४२	०

द्रेष्काणचक्रम्

१	५	९
१०	२०	३०

अथनवमांशचक्रम् ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९
३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३०

१	२	३	४	५	६.	७	८	९	१०	११	१२	द्वादशांशः
२	५	७	१०	१२	१५	१७·	२०·	२२	२५	२७	३०	
३०	:	३०	:	३०	:	३०	:	३०	:	३०	·	

मं०	श०	बु०	बृ०	शु०	ग्रहाः		त्रिंशांशः
५	५	८	७	५	अं	शाः	

खेटआपनीराशितेनवईं करैपयान॥तीसअंशलौं होइजोबरणैंसबैसुजान ५२॥ अथसप्तमांशा ॥ चारिअंशसत्रह कलाविषमराशिकोकोइ ॥ सोनतजैनिजराशिग्रहअधिक दूसरीहोइ ५३ अंशनिउनहींकलानिखेटहोइसमगेह ॥ जो नसातईराशिसोंपरगटकरैसनेह ५४॥ अथ अन्य ॥ चारिअं शसत्रहकलाबैठिऔरग्रहजात॥येहीविधिसबजानियेजि नकीमतिअवदात ५५॥ अथनवमांशाः॥ अजवृषतुलाकुली रयेतीनिवारगुनिलेहु ॥ मेषादिककीआदियेक्रमहींतेक हिदेहु ५६ तीनिअंशविंशतिकलायाविधिकेनवअंस ॥ जाननवारेजानिहैंकहतसुकविअवतंस ५७॥ अथद्वादशांशाः ॥ तीसकलाद्वैअंशलौंतजैनअपनोगेह ॥ अधिकभ येग्रहदूसरीसोमिलिकरतसनेह ५८ पांचअंशतेअधिक जोकोऊखेचरहोइ ॥ दौरितीसरीराशिमेंपरगटरहैसमो इ ५९ एकराशिबढ़िजातहैगयेआठईअंस ॥ याहीविधि सबजानिहैंसुकबिनकेअवतंस ६० ॥ अथत्रिंशांशाः ॥ कुज शनिबुधगुरुशुक्रतांतरधरियेअंक । पंचपंचवसुमुनिवि

शिखक्रमतेकहेनिशंक ६१ विषमराशिकोहोइजोक्रमते गनियेताहि ॥ समकोउलटयोजानियेपंडितकहतसराहि ६२ पुनिअंशनकीरीतिसोंटिकैतासुतरआइ ॥ ताहीग्रह कीराशिसोंसोपरगटह्वैजाइ ६३ विषमराशिकोहोइजो विषमराशिकोलेइ ॥ समकोजोग्रहहोइतौंसमहीमें मनु देइ ६४ ॥ इतिषड्वर्गाः॥ अथगंडांताः ॥ गीतिका ॥ शक्रतारकरेव तीअहिअंतकीदुइजघरी ॥ हयमूलपितृभआदिद्वैगंडांत कीघटिकाखरी ॥ अलिकर्कऔझषअंतमेंपलतीससब पंडितकहै ॥ आदिमेंधनमेषसिंहगंडांतहोतसुभेदहै ६५ दोहा ॥ नंदातिथिकीआदिमेंअंतपूरणामाह ॥ एकघरीगं डांतहैकहतकविनकेनाह ६६ पापग्रहऋतुवारहैवक्री जोधनभाव ॥ ताहिकर्त्तरीमृत्युदाकहतकबिनकेराव ६७ गीतिका॥ जनिराशितेकैलगनतेहैलगनअष्टमजौनि ॥ ता मेंबिवाहनकीजियेयहबातजाहिरऔनि ॥ तिनकोजुराशि पएककैअथवापरस्परभीत॥ मिटिजातदोषअशेषतौसब कहतसंतअभीत ६८ झषकर्कगोअलिमृगसुताजबहो हिंअष्टमआइकै । येपरस्परमित्रतावशहरतदोषउपाइ कै ॥ परिणयनतैंवहकामिनीहियहोतसबसुखभागिनी । धनपुत्रपौत्रसमेतसंपतिकंतसोंअनुरागिनी ६९ मृतिभौ नकोपतिअंशनायकहोइतौतनुगेह । व्ययनाथऔव्यय अंशनायकबारहेंसुमनेह ॥ मृतिभौनकोनसुखैकरैव्यय भौनकोकलहानि । सबतंत्रग्रंथबिलोकिकेइहिकहतपंडि तपांति॥ ७० ॥ बिषघटी॥कवित्त ॥ अदितिअनिलमघारेव तीकेतीसत्रीतेरोहिणीखवेदऔपचासहयकेकहैं । पुष्यभ गचित्रावसुदैवतके बीसअहिरदामित्रवसुश्रुति दशगण

तेरहे । ।शक्रभद्दिदैवस्वातीमृगहूकेचौदहमहेशकरएक बीसबीतेतेकहे ॥ अर्यमाबरुणअजचरणकेआठदशषटसरमूलदंडबीतेविषकोंलहे ॥ ७१ ॥ दोहा ॥ नखतन कीयेविषघटीचारिदंडपरिमान॥ परगटदेइँगनाइकैताहि जानिहैंजान ॥ ७२ ॥ अथ दिनके १५ मुहूर्त्त ॥ मदिरा ॥ ईशभुजंगममित्रऔपित्रभवासवसोमिलियेजेगनाये । अंबुभिजितऔरोहिणीइंद्राद्दिदैवतमूलहिदेतजनाये ॥ बारुण उतराफालगुनीभगयेसिगरेगुणिकेकहिआये । ईशहैंजे इनके दिनकेदशपंचमुहूरतगाये ॥ ७३ ॥ रातिकेमुहूर्त्त ॥ दोहा ॥ ईशभऔअजपादतें अष्टआदितिऔपुष्य ।

अथनक्षत्रनाविषघटी ॥

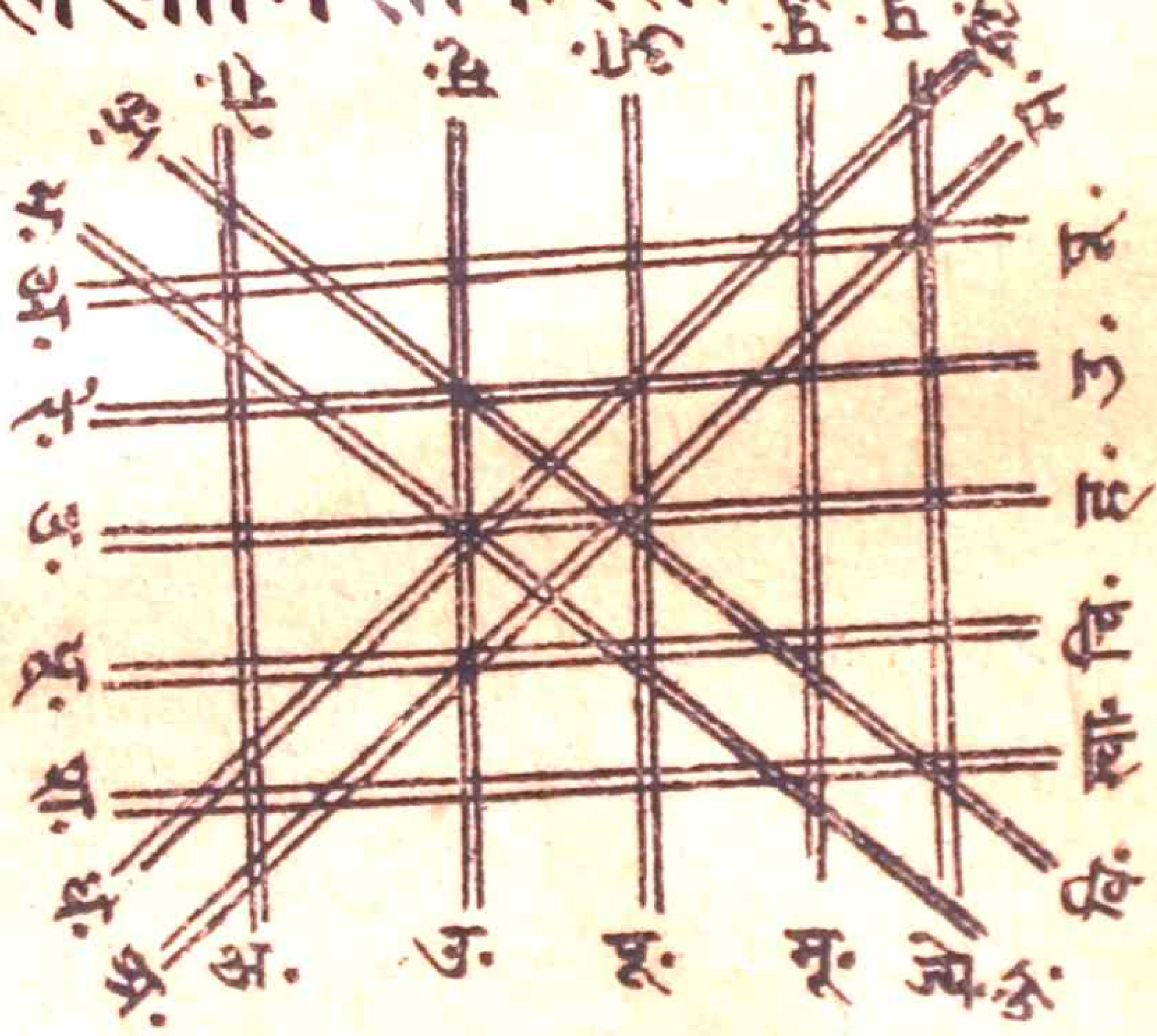
अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	०
५०	२४	३०	४०	१४	२१	३०	२०	३२	३०	२८	१८	१५	२०	०
स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	..	०
१४	१४	१०	२४	५८	२४	२०	१०	१०	१८	१६	२४	३०	..	०

श्रोणाहस्तचित्रामरुत येमुहूर्त्तनिशिमुष्य ७४ सूरज

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	दिनके मुहूर्त्त
शिव	सर्प	मंत्र	पितर	वसु	जल	विश्व	अभिजित	विधाता	इंद्र	अंग्नि	राक्षस	वरुण	अर्यमा	भग	

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	रात्रिके मुहूर्त्त
शिव	अजपा	अहिर्बुध्न्य	पूषा	अश्विनीकुमार	यम	अग्नि	ब्रह्मा	चंद्र	अदिति	जीव	विष्णु	सूर्य	त्वष्टा	वायु	

केदिनअर्यमा ब्रह्मरक्षविधुवार॥ अगिनिपितरकुज बुद्धयह अभिजितकहतउदार ७५ तोपरक्षगुरुशुक्र को ब्रह्मपितरयेदोइ॥ शनिईशभुजंगमें अदितिकहत सबकोइ ७६॥ अथविवाहकेनक्षत्र कबित्त॥ रोहिणीऔमघाउ तरातीनिलै। हस्तस्वातीनुराधाकुरंगीमिलै॥ मूलऔ रेवतीफलसोलीजिये। कीजियेव्याहतौक्षेमसोंजीजिये ७७॥ अथपंचशलाकाचक्रम्॥ सवैया॥ ऊरधारेखाखचाइयेपं चमपांचईचारुतिरीछीखचाइकै। द्वैद्वैखचाइयेकोनन हूनमेंरेखातहांचितभूलबचाइकै॥ कृतिकाआदिलिखौब सुविंशति तारेतहांरचनासोंरचाइकै। सूरजआदिलि खौनवखेचर जाकोहैजोतहांचित्तमेंचाइकै ७८॥ दोहा॥ आगेपीछेकीनिकट पूरणमासीजौन॥ तादिनजोनक्षत्र है लिखौनिशाकरतौन ७९ लातपातयुतबेधकहि या मित्रौयेपांच॥ बुधपंच कएकार्गलौ कहतसुक विबरसांच ८० बहुरिउ पग्रहक्रांतिकहि दग्धा तिथिसुखपाइ॥ येदश दोषमहाबली कहतसु कविसमुदाइ ८१॥ अथ लत्ता॥ कवित्त॥ बारहूनखतदिन करदछमारगते तीसरेकोतरपिहनतमहिपूतहै। छठयेंन खतलातघातसुरगुरुकरै आठयेंकोमंदमारिबेकोमजबू तहै॥ बाईंओरबुधसातौंनौंमनखतयातो पांचयेंकमारि केकोउशनाकेसूतहै। बाइसोनखतचंद्रमारिबेकोतकैयह सोइगणिसकैजोगणकपुरुहूतहै ८२॥ अथपात॥दोहा॥ व्यती



पातहरषणबहुरिशूलसाध्यऔगण्ड।बैधृतिअन्तभजोप
रैलागतपातअखण्ड ८३ ॥ कबित्त ॥ काहेज्ञानवारेजिहि
तारेकेतरनिताते लिखौरिजुरेखावसुविंशतिबिचारिकै।
चित्रमित्ररेवतीश्रवणअहिमघापूट परेआनिजहाँतहाँटे
ढ़ैअवधारिकै॥ अश्विनीतेगानियेलगननखतओर होइ
फलजैसोतैसोकहियेबिचारिकै। सीधीमेंपरैतौहैतौदोषु
णरतीकऐम टेढ़ीमेंपरैतौपातलागतप्रचारिकै ८४ ॥
अथयुति ॥ गीतिका ॥ सूरजादिकसोशशीयुत होइफलसज्ज
नकहै। होतदारिदमरणऔशुभसौख्यगणादिनदिनल
है ॥ होतसौतिसमेतनारिबखानियेवैरागिनी। पायदेयु
तिहोइतौ तियहोइयमपुरभागिनी ८५ ॥ अथवेध त्रोटक ॥
जेहिरेखमेंब्याहुनक्षत्रबसै। तिहिरेखमेंखेचरकोउलसै ॥
तौलागतबेधनिषेधमहा॥सिगरेकबिराजनजानिकहा॥८६
दोहा ॥ खेचरचौथेचरणको कैतीजेकोहोइ॥ प्रथमदूसरो
नखतको डारतचरणबिगोइ ८७ ॥ अभिजित ॥ अन्त्यउ
त्तराषाढ़को चरणएकुजोआहि ॥ चारिदण्डलैश्रवणके
अभिजितकहियेताहि ८८ ॥ अथसप्तशलाकाचक्रम् ॥ दोहा ॥
ऊरधरेखासातकै करौतिरीछीसात ॥ सप्तशलाकाताहि
को कहतसुकबिअवदात ८९ तहाँकृत्तिकहिआदिदै क
रहुसबनकोन्यास॥ ताहूमेंयहबेधको प्रगटविचार्योव्या
स ९० छूटैक्रूरतेनखतकै क्रूरसहितकैकोइ॥ जौलौंचन्द
नभोगवे तौलौंदूषितहोइ ९१ ॥ अथयामित्रम् ॥ ब्याहनख
ततेचौदहें परैजुखेचरआनि॥ जोशुभतौशुभजानियेपा
पहोतदुखदानि ९२ ॥ अथबुधपंचकम् ॥ दण्डक ॥ रसरामश
शीवसुवेदालिखौगत संक्रमकेदिनतामेंमिलाइये। भाग

हरैंतिहिमेंनवको जोपाँचरहैंतबहींफलगाइये॥ आदिमें रोगद्वितीयमेंआगि महाभयतीसरेभूपतेपाइये। चौथेमें चोरनकीभयहोत मरैंबरुपांचयेंबाँचिसुनाइये६३॥ दोहा॥ जबजान्योपंचकलग्यो शेषअंकसबजोरि॥ बहुरितहाँन वभागकोतामेंहरौंबहोरि ६४ पंचशेषजोफिरिरहैंकहतस कलकबिधीर॥सोशशल्यहैलगतहीहियेबढ़ावतपीर ६५ दंडक ॥ चौरगदयामिनीकोदिनकोमहीपभयआगिनिस दाहीमीचुसंध्यामेंकहतहैं । रबिदिनरोगचौरआगिनि महासुतको शनिकोनृपतिमीचुबुधकोलहतहैं ॥ रोग उपनयनआगिनिगेहगोपनमें सेवाकेनृपतिचौरजानमें गहतहैं। छोंड़ियेबिचारिस्मृतिपंचकबिवाहहूमें कहतगण कजेवेगणतरहतहैं ६६ ॥ अथअन्यमत ॥ गीतिका॥ जातजा तिथिलग्नतामहँ देहुलैकरजोरि। अंकुसोअवधारिकै न वभागलेहुबहोरि ॥ नागलोचनवेदअंगशशीरहैंजबशे ष। रोगअग्निमहीपचौर बिनाशहोतअशेष ६७॥ दो० ॥ वानजानिजियलेहुयहबरणतपंडितवेश॥ इहाँनकोऊग णतहैं जाहिरदक्षिणदेश ६८॥ अथएकार्गल ॥ गीतिका ॥ व्याघातऔव्यतिपातबैधृतिगंडऔअतिगंड। बज्रशूल समेतऔपरिघौजुआहिअखंड ॥ होहिंजादिनयोगये तबहींएकार्गलहोत। भानुतेविषमर्क्षजो शशिकहतपंडि तगोत ६९॥ अथान्यखर्जूर ॥ दंडक॥ तेरहतिरीछीएकऊरध खचाइरेखा योगजेनखततामेंदीजियेबिचारिकै। लगन कोयोगजोबिषमहोइतामेंएक जोरिकैअरधकीजैसुमति सुधारिकै॥ जोसमअरधकीजैतामेंमनुजोरिदीजै लीजि येनखतअश्विनीतेअवधारिकै । सूरजऔसोमएकरेखा

भेंपरैं तौंव्याहकीजियेनसुजनकहतानिरधारिकै १०० ॥

खर्जूरचक्रम्

०

अथउपग्रहः॥दोहा ॥ शरमनुबसुदिकशक्रातिथि धृतिअतिधृतिसुखपाइ॥एकविंशतेतत्वलौं दीनेअंकगनाइ १ भानुनखतमेशशिनखत इनठौरनि जोहोइ ॥ तहाँउपग्रहदोषहै कहत सुकबिसबकोइ २ ॥अथक्रांतिसाम्य॥सवैया॥ ऊरध रेखाखचाइयेतीनि तहाँपुनितीनौतिरीछीखै चैये । ऊरधमध्यकीरेखातेमीनहिं आदिदै बारहौतामेंबनैये ॥ सूरशशी जिहिराशिके होहिंतहाँलिखैजोइकरेखमेंपैये। सालभरेमा त्रिनापति बाललहैदुखजालउतालसुनैये३॥ अथदग्धातिथिघनाक्षरी ॥ मकरतुलाकेरबिहोतहीदुआसिअलि केशरीमेंदशमीनिहारिअतिछीनमें। छठीमेंमिथुनमेंजरति आठेनिशिदिन छठिदेखीकरकऔमेषमेंमलीनमें।वृषभ औ कलशकी राशि में जरति चौथिभाष तसुकविहै द्वि तीयाधनमीन मेंइन्हैंपरिहरे काजमंगलके करेजे वेतेवेन रपरेतुषसंपातिनदीनमें४॥अथदशयोगचक्रम्॥अश्विनीतेसूरश शिनखतलौंगनगनिएकैकरिभागमुनिलोचनकोठानिये। शेषजोखचंद्रवेदरसदसएकदस तिथिधृतिअतिधृति नख

क्रांतिसाम्यचक्रम्

११ १२ १

१० २

९ ३

८ ४

७ ६ ५

दग्धातिथिः

२	४	६	८	१०	१२
६ १२	२ ११ ०	१ ४	३ ६ ध:	५ ८ [illegible]	७ १० [illegible]

तरहेजानिये॥१।४।६।१०।११।१५।१८।१६। २० मरुत
जलद शिखिभूपतिसकरम्रतिरोगवज्रकलहबहुरिकहिहा
निये। यहदशयोगचक्रकहतसुकबिबर व्याहकीलगन
मध्यभूलेहूनआनिये ५॥ अथदोषपरिहार० ॥ रूपमाल ॥ लात
मालवदेशमेंकुरुखेतवाह्लिकपात। एकार्गलोकशमीरमेंक
बिकहतमतिअवदात॥वेधहैचहुँओरवर्ज्जितहैंजहांलागि
देश।कीजियेनबिवाहयामहँदेतदीहकलेश ६ लातउपग्र
हकर्तरीएकार्गलोकहियोन। दोषजोयामित्रहैपुनिपात
घातकुतौन॥ लग्नसूरजओसुधाधरजोबलीइकहोइ।
दोषत्योंमिटिजातज्योंरबिकेउदैनिशिखोइ ७॥अथग्रहाणांदृ
ष्टिः॥ घनाक्षरी॥ तीसरेओदशमसकलदेखरविसुतऔरन
कीएकहीचरणअनुमानिहै। देखतसुरेशगुरुपंचमनवम
पूरीऔरनकीअरधजगतजियजानिहै॥ चौथेऔरआ
ठयेंबिलोकेकुजपूरीडीठि औरनकीत्रियदनजरिकरिमानि
है। पूरणसकलग्रहसातयेंविलोकतहैं राजनकेकाजकवि
राजनबखानिहै ८॥ अथ तत्कालबिचार॥ रूपमाल॥ मृतिभौ
नकोपतिअंशनायकबारहेंमृतिगेह। व्ययनायओव्यय
अंशनायकबारहेंसुसनेह॥ मृतिभौनकोनसुखैकरै व्यय
भौनकोकलहाति। गणितज्ञजेजगमेंकहावततेकहेंइहि
भांति ६॥ दण्डक॥ लगनकोपतिकैतौलगनको अंशपति
होहितनुगेहकैतौदोऊऔलोकही। ऐसोयोगपरैतौअ
खिलसुखकरैपतिविपतिकेवृन्दउरमंदिरतेमोकही॥मद
नकोपतिऔमदनअंशपतिदोऊ मदनमेंहोहिंदेखैज्योति
षिनयोंकही।तबवहकामिनीबिवाहहोतादिनदिन लहैसुख
असमनसमकरिसोकही १०॥ रूपमाल॥ लवनाथजोल

धर्मपरै तनुनाथजोतनुगेह। तिनहूनसोंपुनिजोपरस्पर डीठिहोहिसनेह॥ तौहोतमोदअनंतकंतहि संतभाषत जानि। जोवधूनकेपतिहोहिंयाविधिनारिकोसुखदानि ११॥ अथ सूर्य्यादिसंक्रमणघटीजबरहेतबको बिचार। दोहा॥चेवह्रच्यं करसनागवसुषट्नृपछठीजिआहि॥ अर्कादिकसंक्रम नमें बरजतपंडिततहि १२ होतसंक्रमणसबनको मृषा नमानैकोइ॥ सूरजकोपरसिद्धहै सोनिषिद्धअतिहोइ १३ अथ पंगुअंधादिलग्नानि॥ रूपमाल॥ अंधयेदिनकोसदाकहि मेषगोमृगराज। युग्मकर्कटकन्यका निशिकोकहेकबि राज॥ दिनकोतुलाअलिबधिरहै नक्रधनयनिपाइ। घ टमीनयामिनिमेंबधिर इमिकहतज्योतिषराइ १४॥ चंद्र मासोंयुक्तग्रह ताकोफलम्॥ चौपाई॥ दारिदमरणप्रजाकोनास। सहितअभागसौतिसँगबास॥ होइप्रव्रज्याजोअर्कादि। होइचंद्रयुतकहिगर्गादि १५ बुधगुरुचंद्रएकघरहोइ। दोषनमानतपंडितकोइ॥ प्रथमदूसरेरिपुमृतिगेह। चं द्रहिमिलैसाधुकरिनेह १६ तौवहपुरुषबिदेशीहोइ। क हतसुकबिपंडितसबकोइ॥ दारिदबधिरलगनमेंहोइ। दिवसअंधबिधवाकहिलोइ॥ निशाअंधमेंबालकना सै। पंगुनिधनहैदिनदिनत्रासै १७॥दोहा॥व्याहुयुग्मघटचा पतिय मीनअंशमेंहोइ॥ कन्याहोइपतिव्रता कहैसुक बिसबकोइ १८॥ चौपाई॥ अंत्यनवांशामाहँबिवाह। क हतनहींकाबितिनकेनाह॥ जोनवयेंबरगोतमपरै। तौसु खसोंबिवाहसबकरै १९ जोचरमेंचरकोलवआवे। किये बिवाहनतौसुखपावे॥ तुलामकरकोजोशशिहोइ। दोष नमानतपंडितकोइ २०॥ बिजया॥ बारहेंमंदपरेदशयेंकुज

तीसरशुक्रजोबैठकसाजै ।जोतनुगेहसोंराखेसनेहनिशा करकैखलआनिसमाजै ॥ अंगपशुक्रऔचंद्रछठेमातिअं गपशुक्रपैसाधुविराजै। आठयेंभौमसबैगृहसातयेंदीबेको दुःखनआवतबाजै २१॥ दंडक॥ तीजैलाभबसुषटरविकेतु राहुशनितीजेछठेलाभगेहमंगलगनेपरै । लाभधनतीज भौनचंद्रमापरैजोआनिकहै जानजानिखानिसुखनकीसो हरै॥मंदव्ययअष्टयेंशशिजगुरुजोपरैतौकेतौबरबधूकेतौ व्याहहोतहीमरै। तीजेबसुषट्घुनबारहेंपरैजोसितदंपति कोदुःखनकोजालजगमेंकरै२२ कर्तरीकेकारककहेजेपाय खेटतेवेनीचरिपुगेहीअस्तहोइतौनमानिये। याहीविधिशु क्रजोछठेभवनपरैभौमआठयेंभवनदोषमनमेंनआनिये॥ नीचराशिनीचकेनवांशामेंनिशाकरजो छठेव्ययआठयेंन दोषअनुमानिये। लोगनसोंचोपसोंविलो।किमतग्रंथनको व्याहकोलगनऐसेगनिकैबखानिये २३ ॥ दोहा ॥ वरष अयनऋतुमासऔपक्षऋक्षतिथिदोष ॥ दग्धबधिरका णादिजेकरतआनिकैरोष २४ सोमजसुरगुरु शुक्रजोकेंद्र कोणमेंहोइ॥ सप्तमतजियेदोषगणडारतक्षणमेंखोइ २५ छोंड़िसप्तमकेंद्रमेंनवपांचयेंगुरुहोइ ॥ जोदिवाकरऊरहै पुनिलाभगेहसमोइ २६ चंद्रजोवरगोत्तमीननुधामबैठहि आइ॥ दीहदोषनकेकदम्बनदेतआशुनशाइ २७॥ दोहा॥ जोएकादशगेहमेंरजनीनायकहोइ। तऊअशेषनिदोषजे क्षणमेंदेतबिगोइ २८ ॥ बिजया ॥ सातयेंछोंड़िकेकंटक कोणमेंदोषहरैशतजोबुधआवै। शुक्रजोआनिपरैइनठौर नितौशतद्वैगनिदोषनशावै॥लक्षहरैगुरुजो।लवअंगपग्या रहेंकंटकबैठनपावै। दोषसमूहनिक्षारकरैजिमिबाड़वतूल

कोजूहजरावे २९ ॥ अथविस्वा ॥ चौपाई ॥ साढ़ेतीनिभाग सूरजके । द्वैद्वैकेहेशुक्रसोमजके ॥ गुरुकेतीनिपंचश शिधरके । डेढुमंदकुजारिपुशशिधरके ३० ॥ दोहा ॥ ससुरदिवाकरसासुभृगु लगनजानियेदेह ॥ सप्तमपति भर्त्ताशशी मनुकविकहतसनेह ३१ जौनहोइइनमेंबली तातेअतिसुखहोत ॥ करतबिचारबिवाहमें सकलकवि नकेगोत ३२ ॥ अथसंकीर्णजातीनांबिवाह बिचार ॥ दोहा ॥ लै कैनखतबिवाहके कृष्णपक्षकेकोइ ॥ ब्याहैरबिकुजमन्द में सदासुखीवहहोइ ३३ ॥ नरेन्द्र ॥ प्राजापत्यब्रह्मदेव ऋषि कह्योचहुँनकोऐसो । लीजैवहैमुहूरतविधिसों क ह्योब्याहकोजैसो ॥ असुरविचारगन्धरबराक्षस उचित कहेउसबकाल । करिपरिणायचैननाहिंपावै बरणतगुणी रसाल ३४ ॥ दोहा ॥ वेदनेमगुणरूपभुवि वेदअंगगुण एक ॥ गुणसूरजकेनखतते शशिलौंकरौविवेक ३५ जा निलेहुफलअशुभशुभ कीजैबहुरिबिवाह ॥ याविचारअ तिगूढ़है कहतकविनकेनाह ३६ ॥ चौपाई ॥ जबकछुदि नबिवाहकेरहैं । तबकीविधिपण्डितयहकहैं ॥ ब्याहनख ततिथिलीजैवार । लीजैबहुरिचन्द्रकोसार ३७ येसबब्र लीहोहिंजाहीदिन । कण्डनदलनकरहुताहीदिन ॥ राज बोलायसदनबनवैये । देखतजाहिबड़ीछबिपैये ३८ पुनि बोलाइयेचतुरचितेरे । तहँलिखाइयेचित्रघनेरे ॥ रचौ चारुवेदीअंगनमें । गृहकीबामओरगुणिमनमें ३९ कीजै बहुरिवेदिकालोनी । चारिहाथसुन्दरचौकोनी ॥ ऊँची एकहाथकीहोइ । तामेंखम्भदोइओदोइ ४० कीजैखरे वसनसोंछैये । सुमनगूँथिचहुँओरबँधैये ॥ जोघरहोइ

कीजियेवोती। शक्तिसमानपोतिगजमोती ४१ सुघरसु
न्दरीमंगलगावैं। सूमौंसुनिउदारतापावैं॥ त्रिषट्नन्द
दिनरहेब्याहके। तौनकीजियेमतवराहके ४२॥ दोहा॥ मु
निदिकशरादिकवाणमुनि मुनिशरशरशरवान॥ मुनिमुनि
वासरब्याहके रहेसोतिल विधान ४३ वरकीबटकीबामकी
राशिरीतितेजानि॥ मेषादिककेअंकये साधुनकहेबखा
नि४४॥ चौपाई॥ भानुतुलातियहरिकेहोइ। खम्भईशादिशि
थापतलोइ॥ अलिधनमकरराशिकेआवे। बाईंदिशा
तौखम्भबनावे ४५ मीनमेषघटकेजबजानौं। तौगुणिरा
क्षसदिशाबखानौं॥ मिथुनकर्कवृषजोयेपैये। अगिनिको
णमेंखम्भबनैये ४६॥ दण्डक॥ नखततिथिकरणलगन
औबारदोषभूलेहुनयाकोकछुमनहींमेंआनिये। मुहूर्त्तन
वलवयोगमातिदगेहदोष यामित्रकेऔगुणनहींमें अनुमा
निये॥ औरजेकहेहैंमृत्युकण्टकादितिनरुमेंदोषनकीशं
काजीमेंनेकहूनजानिये। बड़ेबड़ेपण्डितविचारिकैकहत
ये जूयेतेर्दाहदोषधेनुधूलिमेंनमानिये ४७॥ रूपमाल॥ अ
स्तकोसमिटेदिवाकर जानियेजिहिकाल। हेमंतकीऋ
तुमेंसदा गोधूलिहोतविशाल॥ अरधअस्तनिदादिमें
अतिअस्तप्राविटमाह। गोधूलिकोयहकालबरणत सक
लपण्डितनाह ४८॥ अन्य॥ चौपाई॥ अस्तजातजबहोहिं
दिवाकर। तौगुरुदिनगोधूलिशुभाकर॥ पूरुवविनाती
निदिशिजैये। तौअशेषतूरणधनपैये ४९ विद्यमानजब
सूरजरहैं। शनिकेदिनपण्डितशुभकहैं॥ तहँततकालल
गनतेहिमकर। होइआठयेंकैरिपुकेघर ५० कन्यानाश
करैतत्काल। जोधनसहजदेइसुखहाल॥ तनातियहोइमृ

तुधरणीसुत। तौंवरुहोइमीचुसोंसंयुत ५१ जेउतपात होतआकाश। पातक्रांतिजेकहेप्रकाश॥ ब्यतीपातदग्धा तिथिजौन। शशिगुरुअस्तशुक्रहैतौन ५२ तिथिक्षयवृद्धिविष्टिसैंकरौंति। बहुरिगँडांतकहेबहुभाँति॥ लग्नअंशपतिकोजोअस्त। येकबहूंनहिंहोहिंप्रशस्त ५३ छठेआठयें चंद्रलगनपति। येईजोथलवर्गकरेरति॥ लगनअंशपतिक्रूरसमेत। सतयेंखेटकरैजोहेत ५४ खार्जूरचंडायुध कहे। औदशयोगजौनशुभदहे॥ लताबेधबहुरिजामित्र। बुधपंचकजोकहेविचित्र ५५ बहुरिउपग्रहकहतकर्त्तरी। इनसोंदूषितहैजोघरी॥ तिथिनक्षत्रवारतेयोग। उपजत दुष्टकहैंकविलोग ५६ बारदोषकुलिकादिकजौन। ग्रहनक्षत्रकहतहैतौन॥ जोनक्षत्रक्रूरग्रहतजै। जायोचहैजौनमेंभजै ५७ तिहिनक्षत्रहोतउतपात। जामेंकेतुउदयहोइजात॥ संध्याउदयकरतहैजौन। जामेंखेटयुद्धकहितौन ५८ जेतत्काललगनग्रहदोष। येसबकरतब्याहमेंरोष॥ इन्हैं विचारिकरतजेब्याह। तिनकेहोतसदाउतसाह ५९॥ दोहा॥ येसबदोषबचाइकै जेनरकरतबिवाह। धनसंतान समेतह्वै जीवतनारीनाह १६०॥

इतिश्रीमहाराजकुमारअचलसिंहाज्ञयामुहूर्त्तकल्पद्रुमे शंभुनाथकृतेबिवाहप्रकरणम् ६॥

अथ बधूप्रवेशप्रकरणम् ॥

दो०॥कामिनिश्रौभरतारको भयेबिबाहसुदेश॥ तौसो रहदिनलौंकहे कविबरबधूप्रबेश १ सोरहवेंदिनआठसम विषमआठईहोत॥ विषमनमेंशरनगनवो कहतकबिनके गोत२दशमछोंड़िकैसमनमेंद्योसलीजियेसात॥ कहतसु कविया भाँतिसों जिनकीमतिश्रवदात३ जोयहबिधिनहिं ह्वैसकैताकोकहाउपाइ॥ विषमबर्षदिनमासमेंकीजनहैसु-खपाइ ४ बरषदोइउपरान्तजो बधूरहैपितुगेह ॥ तौयह नमनकीजिये पण्डितकहैंसनेह ५ ॥ रूपमाल ॥ ध्रुवक्षिप्र औमृदुमूलवासर श्रवणस्वातिसमेत। औमवापुनिली जिये कवितासबैकहिदेत ॥ रिक्तानलीजैभूलिहू रबिभौ मऔबुधबार। तौबधूसबसुखलहै निजसंगलैभरतार ६ दोहा ॥ जोरहिजाइविवाहते तातसदनमेंनारि ॥ बहुरिच लैजोजेठमेंजेठहिहनैबिचारि७॥अथद्विरागमन ॥घनाक्षरीकबित्त॥ बिषमबरषमेंघटालिमेषसूरजमें शुक्रपीछेबामदिशिकरि जबपाइये। तुलावृषकन्यकामिथुनमीनलगनमें शुभति थिबारयोगलोगनबताइये ॥ लघुध्रुवचरमृदुलमलसौस मेतलीजै दीजैदानदीननकोमोदउपजाइये। पूजिगणप तिकोद्विरागमनकीजियेजू मंगलकेगीतजेपुनीत आछेगा इये ८ ॥ रूपमाल ॥ शुक्रसन्मुखदाहिनीदिशि आनिकेज बहोइ। बालानवोढ़ागर्भिणीपतिपूरणगोनहिंकोइ ॥ बा लाविपत्तिलहैमहाबंध्यानवोढ़हिजानु । गर्भिणीबिनग र्भजानहुकहतबातप्रमानु ९ एकगांवबसैउपद्रवकेभये अरुब्याह। देवतीरथजानमेंरिसभरिउठेनरनाह ॥ जा

हिजोपतिगेहयद्यपिनौबधूवहकोइ । शुक्रसन्मुखदाहि
नोनहिंदोषमानतकोइ १० तातमंदिरवासकोकुचपुष्प
सम्भवजोभयो । दोषजोभृगुनन्दको सिगरोतहाँमिटि
सोगयो ॥ अंगिराभृगुवत्सकश्यपऔवशिष्ठऋषीनके ।
वंशजातककोनपातकबैनमानप्रवीनके ११॥इतिद्विरागमनम्॥
अथअग्निस्थापनम् ॥ मत्तगयन्द ॥ चन्द्रमहीसुतऔभृगुनन्दबृ
हस्पतिनीचकीराशिनआवे । अस्तमेंहोहिनहीनबली
पुनिजोअरिमंदिरकोनसिधावे॥रेवतीपुष्यकुरंगिनिशक्र
भमिश्रधुवोरविउत्तरगावे । लीजैतिथीरिकताबिन और
करैसिखिथापनोतेसुखपावे १२ ॥ चौपाई ॥ लगननवांशा
मेंकबिगावे । कर्कनक्रभ्रूषकुंभनआवे ॥ लगनत्रिकोण
भौनमेंचंद । नहिंत्रिकोणरविगुरुभृगुनंद १३ त्रिषट्ग्या
रेंहूकंटकगेह । येईग्रहसबहोहिंसनेह ॥ त्रिषट्लाभदश
येंग्रहआन । अष्टमशुद्धकहेसबजान १४ ॥ दोहा ॥ अ
जकोकुजमंगलजअंवर मदनसधनजीवतनधाम॥ त्रिष
टग्यारहेंचंद्ररवि बैठेकरैंअराम १५ अगिनिथापनाजो
करै ऐसेयोगसुजान॥ तौसंपतिसुखसर्वदा पावैपुण्यअ
मान १६॥अथराज्याभिषेक ॥ घनाक्षरीकवित्त ॥ उत्तरअयनरवि
हिमकरगुरुशुक्र सबलअकाशमेंउदिततीन्योपाइये। मं
गलदिनेशऔलगनपतिदशापति जननकीराशिपतिस
बलबताइये ॥ रविशशिबुधजीवभृगुसुतबारलीजै रिक
तानिशामेंमलमासमेंनगाइये । शक्रभश्रवणक्षिप्रध्रुवमृ
दुनखतलै राजनकोअभिषेकसुखसोंसुनाइये १७ सिंह
कन्यातुलाअलिकुंभऔमिथुनपरै लाभतीजेखरिपुशुभ
लगनलीजैजू । पापषटतीसरेऔलाभकेसदनपरैं कंटक

त्रिकोणधनसाधनकोदीजैजू ॥ पापजोलगनरोगआठय
विनाशपुत्र पीड़ासुतभौनधनगेहधनछीजैजू। दारिद्र्य
यभवनआलसकरमचौथे सातयेंपरेतेराजछूटैसोनकीजे
जू १८ लगनात्रिकोणमेंपरैंजोसुरगुरु छठें धरणिकोपूत
भृगुकरमकेगेहमें। संपतितनुजभूमिभोगवेमनुजपति क
बहूनरोगसोगआवेनिजदेहमें ॥ तीजेशनिलाभरबिबंधु
दशयेंमें गुरु रहैबहुकालभूपअवनिसनेहमें। गनतजोब
नैअभिषेकतौअनेकरिपु छारहोहिंक्षनमेंतरणिताकेतेह
में १९ ॥ अथयात्राप्रकरणम् ॥ दोहा ॥ जानेजिहिनरनाथको
जनमसमैगणकेश ॥ मंजुमुहूरतशोधिकें ताहिदेवउपदे
श १ जाकोजानतुहैनहीं गणकजनमकोकाल ॥ ताहि
प्रश्नसोंबोधिये लगनशोधिततकाल २ जन्मराशिके
जन्मतनु वहैप्रश्नमेंहोइ ॥ विजैकहततिहिभूपकी कबि
पण्डितसबकोइ ३ जनमराशितनुनाथजो परैलगन
मेंआइ ॥ तऊकहतजयभूपकी सुकबिनकेसमुदाइ ४
जन्मराशितनुजोपरै रिपुखलारिभगुणगेह ॥ तऊबिजै
नरनाथकी सज्जनकहतसनेह ५ शत्रुजन्मकीराशि
तनु परैप्रश्नमेंआइ ॥ हिबुकभौनकोधूनमें बिजैकहतसु
खपाइ ६ जन्मराशितनुशत्रुकी ताकेअधिपतिजौन ॥
हिबुकसातयेंजोपरै तहाँपराजयकौन ७ शत्रुराशितनुते
कहौ जोउपचयकोगेह ॥ हिबुकसातयेंजोपरै तौजयबिन
संदेह ८ ॥ घनाक्षरी ॥ गणकहिपूंछतरुचिरभूमिहोइकैतौ
मंगलकीसाजदेखौनैननिसुनेश्रवन।लैकैकरवसुबड़ेआ-
दरसोंपूंछेतब कहियेसकलसुखजाइकैकरौगवन ॥ होइ
ताहीसमयचरलगनसुभटजो देखेकैसहितताकोफलमेंक

हौंकवन । पावैंबड़ीसम्पतिसुदशादिशियशछावे आवे निजविरदसुनतआपनेभवन ९ ॥ दोहा ॥ चंद्रभौमयुतलगनमें शनिसोंलखियतहोइ ॥ प्रश्नकालमें नृपतिकोआशुहीडारैखोइ १० होइसातसेआठयें चंद्रलगनमेंभानु ॥ योगपरैषट्प्रश्नमेंभंगआशुहीजानु ११ होइचंद्रमा लगनमें सप्तमअष्टमभानु ॥ प्रश्नकरनवारोनृपति यम पुरकरैपयान १२ हिबुकनिधनतनुसातयें पापग्रहणको बास ॥ प्रश्नसमयतिहिभूपको कहियेआशुबिनास १३ चौपाई ॥ कुजतेजोत्रिकोणमेंहोइ । मंदशुक्रबुधगुरुमेंकोइ ॥ अथवाजोरविशशितेपरै । तौमहीपफिरिआवैघरै ॥ १४ जोपुनिबलीहोइवहखेट। ताकोगुणसुनिलेहुअमेट॥ गमनदिशाकोदेइबराइ । अपनीदिशैखैंचिलैजाइ १५ ॥ दोहा ॥ गमनदिशाकोखेटजो तातेपंचमजौन॥ खेटबली दिशिआपनी कोलैगौनततौन १६ ॥ चौपाई ॥ धनमृग राजमेषकेभानु । तामेंउत्तमकह्योपयानु ॥ शनिबुधशुक्र राशिजबआवें । ताहिसबैकबिमध्यमगावें १७ कर्कमीन अलिकेरबिहोइ । नीचपयानकहैसबकोइ ॥ जनमतीसरोपंचमतारा । सातोंदेतसोविपतिअपारा १८ छठिआठे दुवासिऔराका। सितपरिवादिनबहुरिअमाका॥रिक्तातिथिनभूलिहूलीजै।तबपयानकोदिनकहिदीजै १९ ॥ दोहा॥ तुरगपुनर्वसुमृगशिरा पुष्यरेवतीश्रौन । अनुराधाकरवसुनखत करतमहीपतिगौन २० ॥ दंडक ॥ सोमशनिप्रतिपदनवइन्द्रनखतमें पूरवगयेतेफेरिमंदिरनआयेहैं । तेराशिऔपांचयेंगुरुबारतीजी पूर्वामें दक्षिणकेगामीयामापदकोसिधायेहैं॥ चौदशिऔछठिरविकुजभृगुनंदनमें

रोहिणीमेंगयेतिनदुखउपजायेहैं । रविकुजबुधदशद्वैज आदिउत्तरामें उतरगयेताकोउतरनआयेहैं २१ ॥ छप्पय॥ पूर्वाह्लध्रुवमिश्रनखतमेंगौननकीजै । तीक्षणवासरमध्यमें क्षिप्रअपराह्लनलीजै ॥ मैत्रनखतजबहोइगौनकीजैननि

दिग्शूल

पू०	द०	प०	उ०
चं० श० ११ ८। ज्ये०	बृ० ५ १३। पुर्व भा०	र० मं० शु० ६ १४ रो०	र० मं० बु० २ १० उ० फाल्गुनी

शामुख । मध्यरात्रिमेंचलतउग्रउददेतदेहदुख ॥ चरनखतकहतनिशिअंतमेंगमनकियेतनदहत । करपुष्यश्रवणमृगशिरसदासुखदायकपंडितकहत २२ ॥ दोहा ॥ प्रथमपूरबाकृत्तिकामघाभरणिकेदंड ॥ भूपसर्गशिवमुनिसदाहैंसुखदानिअखंड २३ स्वातिविशाखाइंद्रआहिघटीचतुर्दशजान । हैसदोषकविवरकहैं करौनभूलिपयान२४ मघाकृत्तिकास्वातिको पूरबअरधजुआहि ॥ हैनिषिद्ध

समयदूषितनक्षत्राः

पूर्वाह्ण	दिन म०	अपराह्ण	निशामुख	मध्यरात्रि	अंतरात्रि	सर्वदानि	म
उ०तीनों	मू०	ह०	मृ०	पू० पू०	अ०	ह०	
रोहिणी	आ० ज्ये०	पुष्य	वि०	पू०	ध०	पुष्य	
कृ०	श्ले०	ऽभिजित	अनु० चि०	म०	पुन०	अ०	
वि०		अश्विनी		भरणी	स्वा०	मृ०	
पू १	कृ०	म०	म०	स्वा०	वि०	इंद्र	श्ले
१६	२१	११	०	१४	१४	१४	०४

डितकहैंभूलिनलीजैताहि २५ भुजगभरणिचित्रानखत
नकीउत्तरजौन ॥ सबपंडितवरणतसदागरलतुल्यहै
तौन २६ स्वातिमघासबछोंड़ियेशुक्रमतोयहआहि ॥
ग्रन्थदेखिहमहूंलिखाछोंड़िदीजियेताहि २७ ॥ अथजीव
पक्षमृतपक्ष ॥ राहुछोंड़िआवेजिन्हैंतेहैंतेरहजीव ॥ भोग
कियोचाहतजिन्हैंतेमृतजानिअतीव २८ राहुहोइजि
हिनखतकोकहतकर्त्तरीताहि ॥ तातेपन्द्रहवौंनखतग्रस्त
नामवहआहि २९ येदोऊहैंकालसमदीजैदूरिबहाइ ॥
जीवपक्षमेंगवनियेकहतसुकविसमुदाइ ३० मारतण्डमृ
तपक्षमेंजीवपक्षमेंचंद ॥ होहिंकीजियेगवनतौदिनदिन
बढ़ैअनंद ३१ जीवपक्षमेंभानुजोचंदहोइमृतपक्ष ॥ हो
इपराजयभूपकीयदपिसहाईलक्ष ३२ जीवपक्षमेंजोदो
ऊहिमकरवासरनाथ ॥ तौसिगरेरिपुजीतिकैकरैमहीनि
जहाथ ३३ ग्रस्तभलोमृतपक्षतेकहतकर्त्तरीजौन ॥ स
दाभलीवहग्रस्ततेसोसुनिलीजैश्रौन ३४ ॥ अथकुलाकुल ॥
विचार ॥ छप्पै ॥ स्वातीभरणिकरभुजगामित्रध्रुववासवरेवे।
रविशशिशनि गुरुबारअकुलविषमातिथिजेवे ॥ मूल
ईशशतभिषाबहुरिअभिजितबुधवारे। द्वीजबहुरिछठिद
शैकुलाकुलइन्हैंविचारै ॥ मृगमघापूर्वाश्रवणहैपुष्यकृ
त्तिकाद्वीशपुनि। चित्राइन्द्रभृगुभौमहरिचौथिअष्टकुल
कहतमुनि ३५ ॥ दोहा ॥ स्थायीजीतेसुकुलमेंजायीअकुल
बताइ ॥ सन्धिकुलाकुलमेंकहतसुकबिनकेसमुदाइ ३६
अथपथिराहु ॥ धर्मअर्थअरुकामपुनिमोक्षकहतयेचारि ॥
अश्विन्यादिकसर्प गतिलिखियेचक्रविचारि ३७ धर्म
नखतमेंभानुजो वित्तमुकुतिमेंचन्द ॥ गमनाकियेमहि

पथिराहु चक्रम् ॥

धर्म	अर्थ	काम	मोक्ष
अ०	भ०	कृ०	रो०
पु०	पु०	आ०	मृ०
श्ले०	म०	पू०	उ०
वि०	स्वा०	चि०	ह०
अ०	ज्ये०	मू०	पू०
ध०	श्र०	श्र०	उ०
श०	पू०	उ०	रे०

पालको दिनदिनबढैआनन्द ३८ अ
पाँतिमें भानुजोधर्ममुक्तिशशिहोइ॥
मनकियेसुखपाइये कहतसुकविसब्रको
इ ३९ होहिंकामदिननाथजोमोक्षधर्म
मेंचन्द ॥ धरणिलहैमहिपालसोजाति
अरिनकेवृन्द ४० नलिनीनायकमोक्ष
मेंधर्मधामनिशिनाथ ॥ क्षणहीमेंरिपु
लक्ष्मीहोइआपनेहाथ ४१ ॥ अथतिथि

पौषादि तिथि चक्रम् ॥

पौ	मा	फा	चै	बै	ज्ये	आ	श्रा	भा	कु	का	मा				
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	द्रव्य
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	निःस्व	निःस्व	मित्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	द्रव्यक्ले०	दुःख	द्रव्य	अर्थ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	मंगल	वित्त
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	धन	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	अर्थ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	द्रव्य	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	का०सि०	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	का०सि०	अर्थ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	द्रव्यना-	शून्य
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्य	सौख्य	मृत्यु	अफल

चक्रम् ॥ चौपाई ॥ पौषआदिजेबारहमास। प्रतिपदादि
तिथिकहतप्रकास॥ दुवादशीलौंकविकहिदेत। गमन
पूरबादिककेहोत ४२ ॥ दोहा ॥ तीजचौथिऔपंचमी
इनकोहैफलजौन ॥ तेरसिबहुरिचतुरदशी पंचदशीमें
तौन४३ सुखकलेशबहुधनमिलै शून्यअधनधनहानि ॥
कहतबहुरिकविमिश्रफल ग्रन्थनकोमतजानि ४४ वइ
कलेशसुखअतिमधुर मिलैबहुरिधनवृन्द॥ लाभसौख्य
मंगलबहुरि वित्तलाभस्वच्छन्द ४५ लाभलाभधनसौ
ख्यअति भीतिलाभमृतिअर्थ ॥ लाभकष्टबहुधनमिलै
बहुसुखमिलैअनर्थ ४६ कष्टसौख्यअतिकष्टपुनि सुखस
मूहजियजानि॥ सौख्यलाभनिजकाजकी सिद्धिकष्टअ
नुमानि ४७ शून्यसौख्यमृतिकष्टअति कहतगणकशिर
ताज ॥ याहिविचारेहोतहै सफलआपनोकाज ४८ ॥
अथसर्वांकविचार ॥ पद्धरी ॥ यकठौरकरौतिथिनखतबार। ध
रितीनिठौरकीजैविचार॥ नगनागअगिनिसोंतष्टताहि।
फलदेतशेषजेअंकआहि ४९ जोप्रथमशून्यअतिदुःख
जानि। मधिशून्यरहैधनक्षयबखानि ॥ जबअन्तशून्य
तबमरणलोइ। सर्वांकरहैतबविजयहोइ ५० ॥ अथअडल ॥
रबिकेनक्षत्रतेशशिनक्षत्र । नगगूँथिकरौसिगरेयकत्र ॥
पुनिदेहुसातसोंतष्टताहि। फलशेषरहैकहियेसराहि ५१
तबअडलहोतमुनिनैनशेष । जोकष्टदेतमगमेंअशेष ॥
जबरहैंशेषषटतीनिअंक। तबभ्रमणहोइभूमेंसशंक ५२
जबशेषरहैंशशिवेदबान। फलकहतसुकविताकोप्रमान॥
तनकुशलक्षेमधनलाभहोइ।मगमध्यदुष्टपूछैनकोइ ५३
अद्धोवर ॥ रबिकेनक्षत्रतेशशिनक्षत्र। तिथिवारजोरिकीजै

यकत्र ॥ तामेंनिशंकनगभागलेहु । जेशेषरहेफलबाँचि देहु ५४ जेहिद्योसमाहँनगरहेशेष । सोसुखदहोतबासरअशेष ॥ यहमतोऋषिनकोगूढ़आहि । सोगमनसमयलीजैसराहि ५५ ॥ अथघातविचार ॥ भूपञ्चअंकभुजरसबखानु । दशगुणतुरंगश्रुतिनागजानु ॥ शिवभानुप्रमितकहिघातचन्द । मेषादिजौनहैराशिवृन्द ५६ शुभकर्म्मऔरजेहैंजहान । तिनमेंनदोषसबकहतजान ५७ छप्पै ॥ नन्दासूरजमघामेषमेषहिकोजानो । वृषशनिकरपूरणावृ

मे०	बृ०	मि०	क०	सिं०	क०	तु०	बृ०	ध०	म०	कुं०	मी०	राशी
१	५	८	२	६	१०	३	७	४	९	११	१२	घातचंद्र
१ ६ ११	५ १० १५	२ १२ ७	२ ७ १२	३ ९ १३	५ १० १५	४ ९ १४	१ ६ ११	३ ८ १३	४ ९ १४	३ ८ १३	५ १० १५	तिथिघात
सू०	श०	चं०	बु०	श०	श०	बृ०	शु०	शु०	मं०	बृ०	शु०	वारघात
म०	ह०	स्वा०	अनु०	मू०	श्र०	श०	रे०	भ०	रो०	आ०	श्ले	नक्षत्रघात
मे०	बृ०	क०	तु०	म०	मी०	क०	बृ०	ध०	कुं०	मि०	सिं०	लग्नघात

षभकोघातबखानो ॥ भद्रास्वातीचन्द्रकर्कमिथुनहिंदुखदायक। भद्रामित्रभबुद्धतुलाकरकटकोघायक॥ शनिजयामूलमृगसिंहकोसदाहननकीनोचहत । झषमंदश्रवणतिथिपूरणायुवतिराशिकोकविकहत ५८ रिक्ताशताभिषजीवकन्यकाजूकहिघातक । नंदारेवेशुक्रकीटहिउतपातक ॥ जयाभरणिसितचापचापकोघातककहिये । रिक्तारोहिणिभौमकुंभमकराहिकोचहिये ॥ पुनिजयारुद्रगुरुमिथुनकाहिकुंभराशिकोकहतमुनि । भृगुभुजगपूरणमीनकहघा

तकहतकविसिंहपुनि ५९ ॥ अथ योगिनी ॥ दोहा ॥ पूऊआ

अथयोगिनी चक्रम् ॥

पू०	आ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०
१	३	५	४	६	७	२	८
९	११	१३	१४	१४	१५	१०	३०

नदपवाइदिशि कहतसुकवि करिप्रीति॥ प्रतिपदादितिथि योगिनीभ्रमति सदायहिरीति ६० अनहितसन्मुखबामादिशि पृष्ठदक्षशुभ जानि। गमनसमयअरुसमरमें पंडितकहतबखानि ६१ ॥ अथ कालवास ॥ पद्धरी ॥ ऊत्तरदिशितेविपरीतजानु । यहकालवासरवितेबखानु॥ जिहिदिशाहोतहैकालबास।तिहिदिशासामुहेरतसुपास ६२ निशिसमयसुयहविपरीतजानु । पीछेदक्षिणशुभकरबखानु॥ जोगमनसमरमेंबलीहोइ । धनमिलैअरिनकोदेइखोइ ६३ ॥ अथपरिघ ॥ दिशिपूर्वकृत्तिकाआदिसात । दक्षिणमघादिकहिमातिउदाति ॥ नगमैत्रआदिपश्चिमहिजानि । बसुआदिसप्तउत्तरबखानि ६४

काल चक्रम् ॥

ई०	पू०चा०	शु०आ
उ० र०	श्री	द० सू०
चं वा०	मं प०	बु० नै०

दोहा ॥ बायबदिशितेअगिनिलौंपरिघकालकोहोत ॥ सोननाँघियेगमनमें कहतकबिनकेगोत ६५॥ चौपाई ॥ जेपूरबकोनखतबखाने। आगिनेयतिनकरतपयाने ॥ जेनक्षत्रदक्षिणकोभाषे। तेनैऋत्यको सब अभिलाषे ६६ पश्चिमकोबरणतउड़ जेहैं।बायबकोभाषतकबितेहैं॥ उत्तरकोबरणतजेतारक । ईशदिशाकोतेशुभकारक ६७ ॥ दोहा ॥ जोजरूरजायोचहैताको

परिघ दंड चक्रम् ॥

कृ: रो मृ आ पु पु श्ले
भ म
अ पू
रे उ
उ ह
पू चि
श स्वा
ध श्र अ उ पू मू ज्ये अनु वि

यहैउपाइ॥ तारबारकोशूलताजिशुभदिकतनमेंजाइ ६८ बक्रखिचरलगनमेंपरेतुताकोबारु॥ तामेंगमननकीजिये कहतबिबुधमतिचारु ६९॥ अथअयनशूलघनाक्षरी॥ उत्तर अयनरबिहिमकरहोहितब प्राचीऔउदीचीकोमहीपस बजातहैं। दक्षिणअयनजबहोतदोऊदक्षिणको पश्चिम दिशाकोपुनिजातनसकातहैं॥ भिन्नअयनजिहिअयनकी दिनेशहोहिंताहीदिशिगयेदिनमोदसरसातहैं। हिमकर अयनजिहिताहिदिशिजैये निशिकहतसुकविजेवेमतिअ वदातहैं ७०॥ दोहा॥ पूरबपश्चिमजानियेउत्तरदक्षिण माह॥ नाशहोतउलटोभयेकहतकविनकेनाह ७१॥ अथ भृगुविचार॥ पद्धरिका॥ जेहिदिशाहोइभृगुनन्दथानु। तेहिदि शाहिजातनाहिंनृपसयानु॥ जिहिदिशागोलबसतेजुहोइ। तिहिदिशहिजातनाहिंभूलिकोइ७२पुनिकृत्तिकादिगुणिये प्रकास। चहुँदिशनिमध्यजहँहोइवास॥ उहिदिशानजै येकहतजान। हरिलेतशुक्रयहआशुप्रान ७३ जबबक्र अस्तभृगुनीचहोइ। तबगमनकरतनरपतिनकोइ॥ जोकरैगमनहठिबचनमेटि। तिहिधरैशत्रुरणमेंसमेटि ७४ भृगुअस्तसमैबुधपीठिओर। नृपकरैअरिवरपर जुदोर॥ अरिपकरिबंदिमंदिरहिदेइ। जिमिपकरिबटेर निबाजुलेइ ७५ बुधहोइसामुहेचलतजासु। तबहो इपराजयआशुतासु॥ नरप्रथमगमनकोयहविचार। नृपसमरसमययहसेतसार ७६॥ अथअंधशुक्रविचार॥ पद्धरी॥ पूषादिकृत्तिकाप्रथमपाद। दृगहीनजानिभृगुनिर्विवाद॥ यदपिसन्मुखहै अतिसरोष। तदपिनृपनकोनाहिंकरत७७ जोअर्द्धमार्गभृगुअस्तहोइ। टिकिरहैभूपतबकहतलोइ॥

जबउदैहोइतबकरैगौन । सामुहेतदपिभृगुदोषकौन ७८ ॥ दोहा ॥ मीनराशिकेमीनकोअंशहोइतत्काल ॥ वक्रगमनतबजानियेवरणतगुणीरसाल ७९ जन्मराशिकोलगनपति परैलगनमेंआइ ॥ देतबड़ोसुखअशुभदिन कहतसबैकबिराइ ८० कुम्भकुम्भकेअंशमेंकोऊ करैपयान ॥ पैगपैगपरअरथको नाशकहतकबिजान ८१ ॥ नरेंद्र ॥ जन्मराशिकेजन्मलग्नतेलगनआठईजो है । निजरिपुराशिलगनतेजोतनु छठभवनमेंसोहै ॥ परैआनितत्काललगनमें तिनकेनायकजेहैं । करैपयानयासमयजेनर तेयममंदिरगेहैं ८२ जोवरगोत्तम होइलगनशशि करैगमनमहिनायक । तौमनबांछित काजआपने होतपरमसुखदायक ॥ कुंभमीनपरअरधमकरके अंशलगनमेंआवैं । जेचढ़िनावजाईं परदेशहि तेमहीपसुखपावैं ८३ जेदिगद्वारलगनमें नरपतिकरैंगमनरिपुऊपर । तिनकोहोतबिजयधनसंचयकरतअमलसबभूपर ॥ जेप्रतिलोमलगनमेंगवनतअरिपरभूपअयाने । तिनकोकहतभूरिभयदिनदिनरहतविपतिसौंसाने ८४ ॥ दोहा ॥ जनमराशिजिहिभूपकीशुभसोंहोइसमेत ॥ सोईजोतनुमेंपरैतौअनेकसुखदेत ८५ शत्रुराशिकीजोलगनतातेअष्टमजौन ॥ परैलगनमेंभूपको जयकोअचरजकौन ८६ जनमसमैजिहिराशिमेंसाहित होहिदिननाथ ॥ तातेदूजोतनपरैतौजीतेनरनाथ ८७ राजयोगवरणेकविनजेजातकमेंजानि ॥ परैंआनितेगमनमेंदेहिंसुखनकीखानि ८८ ॥ अथदिगीशाः ॥ रविसितभूसुतराहुशनिशशिबुधगुरुयेआठ ॥ आहिंदिशनकेईशये

करतसुबुधजनपाठ ८९ यदपिकेन्द्रदिगईशजोहोइल लाटीयोग॥ तौजाइयेवहि दिशौवरणतहैं मुनिलोग ९० ॥ अथ

दिशापति

पू	आ	द	नै	प	वा	उ	ई
सू	शु	मं	रा	श	च	बु	बृ

ललाटीयोग॥ घनाक्षरी ॥ सुतरिपुचन्द्रमाअवनिसूनुअम्बरमें करहिकमाललनीसनेहगेहतनको। चन्द्रमाकोचौथेभौनमें विराजैगुरुदूसरेसहजभौनदेहिनिजमनको॥ बारहेंजोउशनामदनमन्द सिंहीसुत जाइकरौत्रासमृतिनवमसदनको। होतुहैललाटीयह ग्रन्थनकीपरिपाटी टाटीदेतखेटसवआपनी दिशनको ९१ अथस्थानविधि ॥ चौपाई ॥ मृगशिरामहँकरैप्रस्थान। बसैस्थानन्नृपतिसुजान॥ चलैपुनर्बसुसेनासाजि। देखततहिजाहिंरिपुभाजि ९२ जोप्रस्थानमैत्रमेंकरै। इन्द्रभमेंटारेनहिंटरै॥ चलैमूलमेंजोअवनीश। करैशत्रुकीसेनाखीश ९३ प्रस्थितहोइहस्तमेंराज। चित्रास्वातिबसैतजिकाज॥ चलैविशाखामेंनिरशंक॥ डारैमेटिशत्रुकोअंक ९४ पुष्यधनिष्ठारेवेमाह। रहैनगरबाहरनरनाह॥ होतबिहानगमनजोकरै। सोनबहुरिआवेनिजघरै ९५॥ दोहा ॥ बिनपूरवप्रत्यूषमें पश्चिमबिनगोधूलि॥ अर्द्धरात्रिउत्तरबिना जातनकोऊभूलि ९६ दुपहरमेंदक्षिणदिशि बिनाकहोकहूंनयान॥ ज्योतिषमतअवलोकिकैसिगरेवरणतजान ९७

जौनेजौनेभौनजो क्रूरग्रहहोइ ॥ पीड़ात्यहित्यहिभावकी
कहतसुकविसबकोइ ९८ ॥ नरेंद्र ॥ खेचरसाधुकोणकंकटमें
त्रिषटलाभदशक्रूर। कीजैजोपयानमेंनवांछिततौफलपैये
पूर ॥ लगनबारहेंमृत्युभवनमेंपरैचंद्रमाआइ।देतअशुभ
फलभांतिभांतिसोकहतसुकविसमुदाइ ९९ जोशनिदश
मशुक्रसतयेंघरनिपटअशुभयेकहिये । पुनिलगनेशमद
नव्ययरिपुमृतिपरैअमितदुखलहिये॥ करतयोगबलभूप
गमनकोविप्रनखतबलपाये १०० सहजदिवाकरहिमकर
दशयेंशनिमंगलरिपुराजे॥ करैगवनइहियोगमहीपतितौ
अनेकसुखपावे । जीतैसकलअरिनकीसैनासुयशसहित
सुखघरआवे १ तीजेमंदनंदअवनीकोशत्रुसदनमेंसोहै।
जोतनभावअमरपतिकोगुरुलाभकमलपतिजोहै॥जोअ
नुकूलहोइँनिशिचरगुरुयोगचलैइहिराजा । शत्रुलक्षनि
जकरकरिआवेघरहिबजावतबाजा २॥ दोहा ॥लगनजीवर
विरिपुभवनचन्द्रआठयेंहोइ॥जोगवनेनृपशत्रुकीसेनाडा
रैखोइ ३ लग्नवृहस्पतिलाभधनमंदरविखेचरहोइँऔर ॥
गमनहारकीजैकहेसकलसुकविशिरमौर ४ चंदमदनरवि
लगनगुरुहिबुकशुक्रधनधाम॥चलैभूपजोयासमैजीतैअ
रिसंग्राम ५॥ पद्धरी॥ भृगुलगनहोइबुधवित्तगेह। दिननाथ
तीसरेजोसनेह॥जोचलैनृपतिसोदीपतुल्य।रिपुकीटआइ
परिजरहिंकुल्य ६ ॥ तोमर ॥ रविहोहिंजोतनुगेह । शनि
शत्रुधामसनेह॥ दशयेंनिशाकरहोइ । तिहिसोंनजीतै
कोइ ७ ॥ नरेंद्र ॥ जोकुजमन्दहोहिंतनमन्दिरदशमगेह
रविराजे । इँद्रसमलाभकेगेहआनिबुध बैठिसकलसुख
साजे ॥ कैभृगुदशमग्यारहेंमन्दिरपरेनृपतिजोगवनै ।

अरिवरनिकरपकरिलैआवे आशुआपनेभवनै ८॥दोहा॥
त्रिषट्लाभशनिभूमिसुतबहुरिशुक्रबुधजीव॥ बलीहोहिं
गवनेनृपतितौजयहोइअतीव ९॥ पद्धरी ॥ तनधामहोहिं
गुरुमदनमंद। सुखभौनहोहिंभृगुनंदचंद॥ खखचरहोहिं
जोसहजधाम। जातेसुभूपअरिनिकरग्राम १० तनगेह
जीवशशिमदनधाम। रविकरहिलाभमंदिरअराम॥ बु
धशुक्रदुवोयेकरमगेह। शनिभौमसहजआवैसनेह ११
जोचलहिभूपइहियोगपाइ। सेनासमेतदुन्दुभिबजाइ॥
अरिवृंदद्विरदसेनाप्रचारि।मृगराजरीतिसोंलेहिमारि १२
तनगेहजीवकैचंदहोइ। दिननाथरहेरिपुग्रहमसोइ॥ सु
तभौनचंद्रसुतदशममंद। भृगुकरेसुहृदगृहमेंअनंद १३
बुधबलीलगनमेंकरहिंथान। गुरुकेंद्रभौनबैठेसमान॥
व्ययसहजशत्रुपुनिभाग्यभौन। इनघरनहोइशशिक्षी
णजोन १४॥ नरेंद्र ॥ मदननिधनपुनिभाग्यभौनताजि
अन्यसदनखलसोहैं। परैंआनिपुनिहिबुकसहोदरलाभ
सदनकरवेजोहैं॥ कंटकजीवलखेतिहिशुक्रहि गमनकरैं
नृपकोऊ। होइक्योंनअमरेशतुल्यरिपु शरणगहैपुनि
सोऊ १५ ॥ पद्धरी ॥ रिपुसदनहिबुकबुधपरैआनि।
तिहिलख्योसाधुहितडीठिमानि॥ व्ययलगनमानिव्यय
लगनमदनतजिऔरगेह। तहँपापखेटबैठेसनेह १६
जोइहियोग। गवनेलोग॥ अरिपुरजारि। करहिउ-
जारि १७ तनगेहआनि गुरुकरहिथान। पुनिलाभ
कर्मगृहपापवान॥ इहियोगचलैनरनाथकोइ। निज
शत्रुदेशकोभूपहोइ १८ तियगेहशुक्रऔचन्दनन्द।
पुनिहिबुकभौनमेंहोयचंद॥ इहियोगचलैनरनाहकोइ।

निजशत्रुदेशकोभूपहोइ १९॥ दोहा ॥ छठेशुक्रगुरुलग्न
में निधनचंद्रमाहोइ ॥ जीतैसोरिपुप्रबलचलैमहीपति
कोइ २० बुधभृगुसुतसुखगेहमेंमदनसदननिशिनाथ ॥
चलैभूपइहियोगजोकरैशत्रुनिजहाथ २१ बुधभृगुकेअं
तरबसैचंद्रसुखसदनमाह ॥ करैगमननिजशत्रुपरजीतै
सोनरनाह २२॥ पद्धरी ॥ तनगेहशुक्रभृगुसदनगेह ।
रिपुभौनभूमिसुतजोसनेह ॥ सुखभौनबुधशनिसहजधा
म । नृपचलैसुजीतैशत्रुधाम २३ ॥ नरेंद्र ॥ रिपुघरभा
नुतीसरेहिमकरभूसुतकरमसदनमें । छठेचंदसुतजीवल
गनमेंभृगुसुतमित्रभवनमें ॥ लाभसदनमेंजोरविनंदन
चलैनृपतिगुरुकेदिन।क्षणमेंवानेछीनिअरिनकोकरैधरा
धनधनविन २४ ॥ दोहा ॥ तीजेभृगुकुजआठयेंमदनस
दनबुधपाइ॥ रविरिपुतनगुरुजोचलैजीतैशत्रुबजाइ २५
गुरुसितरविसुखतीसरेछठेमन्दभूनन्द ॥ चलैयोगइहि
जोनृपतिसोजीतैअरिवृन्द २६॥ अथयोगअधियोगयोगाधियोगाः।
कवित्त ॥ जीवबुधउशनामेंएकैजोत्रिकोणभौनकंटकपरैतौ
ताहिकहितयोगहै । द्वैपरैंतौहोतअधियोगतीन्यो आनि
परैयोगअधियोगताकोवरणतलोगहै ॥ कुशलसोंगमन
योगमेंआगमन होत जयअधियोगमेंसुयशभूरिभोगहै ।
योगअधियोगमेंचलतनरपतितवेजीतिभूमंडलअरिनदे
तसोगहै २७॥ अथ भाग्ययोग॥ दोहा ॥ बुधपंचमरविरिपुभवन
जोनवयेंगुरुहोइ ॥ भाग्ययोगयाकोकहैंदेतअरिनकोखो
इ २८॥ अथ कल्याणयोग॥ गुरुत्रिकोणकंटकपरैलाभकर्मर
विजासु ॥ कहतयोगकल्याणयहदेतसुमंगलआसु २९॥
विजययोग ॥ जोदिगीशलगनेशसोहियेमिताईहोइ॥ विजय

योगयाकोकहैंकविपंडितसब्बकोइ ३० ॥ अथचिंतामणियोग॥
सहजभौनभूसुतपरैनवमगेहगुरु आइ॥ चिंतामणियाको
सुकविकहेगणकसमुदाइ३१॥ सिंहयोग ॥ तनमेंभृगुशशि
सुखसदनजीवकर्मकेधाम॥ सिंहयोगयाकोकहेंदेतसकल
मनकाम३२॥ मृत्युंजययोग ॥ तनमंगलगुरुआठयेंछठेंदिवा
करहोइ॥ मृत्युंजययाकोकहेदेतअरिनकोखोइ३३ ॥ अथकें
द्रयोग॥ आपोक्लिमग्रहमेंशशीसुरगुरुकंटकधाम॥ केंद्रयोग
याकोकहेदेतसकलमनकाम ३४ पारावत योग ॥ तनमेंशशि
गुरुसातयेंकेतनमंदिरआइ॥ परैयोगयहहोतहे पारावत
सुखदाइ३५॥ पिनाक योग ॥ छठेभानुभृगुआठयेंसहजधरणि
कोनंद॥ याकोकहतपिनाककैदिनदिनहोतअनंद ३६॥
मृत्यु योग ॥ भानुगेहमेंशुक्रजोशुक्रगेहमेंभानु ॥ एकयोग
मेंजोदुवो मृत्युयोगातिहिजानु ३७॥ जीवन योग॥ उच्चरा
शिकोचंद्रमा बलीजीवऔभानु॥ संजीवनयहमीचुको ह
रतसानुजियजानु३८॥ भयंकरयोग॥ होहिंपरस्परसातयेंकेए
कैग्रहमाहिं॥ देतमहाभययोगहै नामभयंकरआहिं ३९॥
अभययोग॥ मूलत्रिकोणीउच्चकैहोइँभारगवजीव ॥ अभय
योगयाकोकहे नाशतभीतिअतीव ४०॥ अथ विदारकयोग॥
सप्तमेशव्ययभौनमें नीचराशिकोहोइ ॥ पंचमशनितिय
नाशकरयोगविदारकहोइ ४१॥ कुटुम्बहर योग॥ शशिस
तयेंतातेपरै क्रूरसातयेंधाम ॥ हैयहयोगकुटुम्बहरहरत
आशुहीबाम ४२ ॥ पापकंचुकीयोग॥ मारगेशग्रहक्षीणजो
पापमध्यमेंवास ॥ पापकंचुकीयोगयह करतआशुति
यनास ४३॥ विदारक योग॥ मारगेशतेसातयेंरविपँचयेंग्र
हपाप॥ याहिविदारकयोगयह करतप्रियापरदाप ४४॥

आनंदार्णवयोग॥ मूलत्रिकोणीसाधुजो सोच्चसदनबिनकूर॥ हैयहआनंदार्णव जयदायकपरिपूर ४५ तनरिपुअंबरगेहमें रविशनिजोशशिहोइ॥ मृगनहनतमृगराजज्यों देतदोषत्योंखोइ ४६ बुधभृगुदोऊसातयें चंद्रहोइसुखधाम॥अरिभाजतज्योंअनिलते उड़ततूलकेग्राम४७तनमेंभृगुबुधदूसरेसहजभौनमेंभानु ॥ चलैयोगयहिनृपति जोदेइअरिनभयदानु ४८ जीवलगनखलकर्मकेलाभगेहमेंपाइ॥चलैजुनृपनिजअरिनकोरणमेंदेइभगाइ४९लाभशत्रुदशयेंभवनहोइमन्दभूनंद॥ बलीशुक्रबुधजीवतौ देइअरिनदुखदंद ५० ॥ नरेन्द्र ॥ लाभतीसरेमित्रभवनमें जोभृगुनन्दनआवे। कंटकभौनबैठकैसुरगुरुताको डीठिचलावे॥ जायामृतिभवगेहपापविन भूपअरिनपर धावे। सोरिपुवामनैनजलधारनि अमरषआगिबुझावे ५१ जीवभानुभूनंदमंदयेस्वगृहउच्चनिजकोऊ। परैलगनपुनिहोहिस्वमंदिरचंदकहतयेदोऊ॥ऐसेयोगचलैजो नरपतिनाशहोहिरिपुताके। होतभंगज्योंवंशभेदते भूप बड़ीप्रभुताके ५२ चंद्रसातयेंलगनवृहस्पतिकरम शुक्र बुधजाके। लाभदिनेशमंदऔमंगल सहजभौनमेंछाके॥ जाकेहोहिंसकलअरिवरवश चलैयोगनृपऐसे। सेवतप्रभुहिमोलकेत्योंहूदासआशवशजैसे ५३॥ दोहा॥ सोच्चलगनजोजीवहैचंद्रलाभआवास॥चलैस्वजीतैरिपु गिरिशत्रिपुरकरेज्योंनास५४जोभृगुकंटककोणमें लगन चन्द्रकैभानु॥ चलैसोजीतैशत्रुज्यों मृगनसिंहबलवानु ५५ ॥ नरेन्द्र ॥ तीजेपापखेटसबजाके बुधभृगुमित्रभवनमें।जोसुरेशगुरुलगनविराजै हिमकरमदनसदनमें। करै

महीपगमनजोकोऊ ऐसेयोगहिपाइ। आपुसमेंकरिकल
हशत्रुसबक्षणमेंजाहिंनशाइ ५६ तनमेंशुक्रमदनमेंसुरगु
रु छठेभवनकुजआवे। चौथेवुधतीसरेरविसुतबैठिसक
लसुखपावे॥करैगमनयहयोगजानिकै तानृपकीरिपुनारी॥
बनबनफिरैंअशनाविनादिनदिनदेतपतिनकोगारी ५७॥
दोहा॥ कहेनहैंयाग्रंथमेंयेसबयोगविचारि॥औरग्रंथमतदे
खिकैमैंवरणेनिरधारि ५८॥नरेंद्र॥ कुवारमासकीदशैउज्या
रीश्रवणसहितजोपैये। ताहिविजैदशमीकहिवरणतअति
अदोषयहहैये॥ यामेंकियेगमनरघुनंदन औरनयोग
विचार्यो। अतिबलवंतअंतनहिंजाको त्यहिदशकन्ध
हिमार्यो ५९॥ अथयात्रासमयअंगादि स्फुरणशकुनानि॥ जे
शुभअंगकहेतेफरकहिं सगुनहोहिंपुनिवेसे। लगनवली
मनुहोइविमलतौजातभूपपरदेसे॥यदपिलगनबलीनाहिं
गवनतजोनसगुनगुणपैये। बलीसबैपुनिजोनविमलमन
तौविदेशनहिंजैये ६०॥ पद्धरी॥ व्रतबंधदेवथापनाविवा
ह। सूतकहोलादिककेउछाह॥ तड़िताग गनगर्जनतु
हिनपात। दिनगयेसाततौंनृपनजात ६१ जेहिपुरहिजाइ
आवेस्वधाम। दिनएकमध्यकरिकाजकाम॥ तिथिवारयो
गिनीगनुनताहि। यहमतोऋषिनको गूढ़आहि ६२॥
अथप्रवेशनिर्गमविचार॥ नरेंद्र॥ जेहितिथिबारनखतमेंगनिकै
नरपतिकरतप्रवेश। तातेनवमजोनहैतामें निर्गमहैन
सुदेश॥ जिहितिथिवारनखतमेंनिर्गम तिनतेनवयेंजेहैं।
तिनमेंकियेप्रवेशदेशपति तनदुखपावततेहैं ६३॥अथयात्रा
विधि॥ दंडक॥ होमकरिप्रथमबहुरिनिजदेवताके पूजतच
रणजेवेदेतसुखजालहैं। पूजिदिगपतिकोमहीसुरचरण

पूजि पूजिसबसंतनजेपरमकृपालहैं ॥ पूजिगजवाजिगु
रुजनसोंत्र्शशीशलेत देतसनमानसेनापतिनविशालहैं।
गानसुनितियानकोकरतनिशानधुनि दानदैकैविप्रनच
लतमहिपालहैं ६४॥ अथनक्षत्रदोहद ॥ कुरथीतिलचोरी
औमाष। दधिघृतदूधहरिणकोमास॥ हरिणारुधिरकही
पुनिपायस। चाषमांसकीकीजैत्र्शयस ६५ मृगकोमांस
शशाकोकहिपुनि। सांठीबहुरिकहतकविवरगुनि॥ बहु
रि प्रियंगुपूपभोजनकहि। चित्रपक्षिपुनि आँबभोजन
हि ६६ कूरममांससारिकाहूको। गोधाजौनमांसताहूको॥
स्याहीमांसहविष्यखीचरी। मूंगभातुयवभातुमच्छरी ६७
चित्रितभातुबहुरिदधिकही। येसुकविनगातिराखेसही॥
अश्विन्यादिनखतजेआही॥ करतपयानभूपसबखाहीं ६८

नक्षत्रदोहदचक्रम् ॥

अ०	भ०	कृ०	रो०	मृ०	आ०	पु०	पु०	श्ले०	म०	पू०	उ०	हृ०	चि०
कुरथी	तिल चोरी	उरद	दधि	घृत	दूध	मृग मांस	मृग रुधिर	पायस	चाष मांस	शशा मांस	मृग मांस	साठी	प्रियंगु
स्वा०	वि०	ऽनु०	ज्ये०	मू०	पू०	उ०	अभि०	श्र०	ध०	श०	पू०	उ०	रे०
पूप	चित्र पक्षी मांस	आंब	कछुआ मांस	सारिका मांस	गोह मांस	स्याही मांस	हविष्य	खिचरी	मूंग भातु	यव भातु	मछरी	चित्रित भातु	दधि

दोहा ॥ तेप्रसन्नह्वैखाइये जिनकोकहियतभक्ष्य ॥ उनको
दरशनकीजिये जिनकोकहतअभक्ष्य ६९॥ अथदिशादोहद॥
पूरवकोघृतखाइये दक्षिणतिलऔभातु ॥ मीनपश्चिमैं
उत्तरै पायसभषिनृपजातु ७०॥ अथतिथिदोहद॥ चौपाई॥
अर्कपत्रतंडुलकोचारि। घ्योमुनिराबकहीनिरधारि॥ पु

निहविष्यसुवरणजलधोइ।पियैकहतपंडितसबकोइ ७१
पुवाजँभीरीपियैसलिलपुनि।धेनुमूत्रयवपायसगुड़गुनि॥
रुधिरमूंगअरुभातुहिखाई । प्रतिपदादिमेंजोनृपजा
ई ७२॥ दोहा॥ सिखरनिपायसकाँजिका पाकदूधदधि
खाइ ॥ काचदूधतिल
भातुजेरव्यादिकमें जाइ
७३ प्रथमदाहिनेपायँसों
चलियेचौंतिसपैग॥ पुनि
गजादिआरोहिये दैस-
बहीकोनेग ७४ ताम्रपात्रतिलघ्योभरैं तामेंसहितसु-

वारदोहदचक्रम्॥

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
सखर नि	पाय स	कां जी	पाक दूध	दधि	काच दूध	तिल भातु

तिथिदोहदचक्रम्॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अर्क पत्र	तंडुल जल	घृत	राब	हविष्य	सुवर्ण धोइपियै	पुवा	जंभीरी	जल	गोमूत्र	यव	पायस	गुड़	रुधिर	मूंग भातु

वर्ण॥ लैदीजैगणकहिसाहित उरगवेलिकैपर्ण ७५ पूर
वगयहयवारुणीरथचढ़िदक्षिणओर॥ दिशिउत्तरसुख
पालमेंजातनृपतिशिरमोर ७६॥ अथ प्रस्थान स्थल॥नरेंद्र॥
सुरगुरुसदनशयनमंदिरते नरपतिकरतपयाने। कैनिज
परमभावतीगृहते बरणतसुकविसयाने॥ पुनिद्विजवैन
मानिसुनिमंगल देखतपरमसुमनसो। तेभुवजीतिनीति
बलआवतसुयशसहितबहुधनसो ७७ जोकुछहोइविलं
बकाजमेंतौप्रस्थानकरैये। द्विजउपवीतहथ्यारभूपको वि
टकोमधुरधरैये॥ लैकैनारिकेरसूदनको पठहिमहीसुर
आगे। पावनठौरजाइलैधरिये तौफलपैयेआगे ७८
निजगृहछोंड़औरगृहधरिये सुमतिगरगमुनिभाष्यो॥

जहँलोचलैवानुतहँधरिये भरद्वाजकहिदीनो । कहतब
शिष्ठनगरकेबाहेर कियोसुयशतिनलीनो ७९ ॥ चौपाई ॥
एकैनिजमन्दिरतेकहै । धनुषपचासैपैनृपरहै ॥ द्वैसैपर
एकैमुनिभाषत । एकैधनुषदशैअभिलाषत ८० चारि
हाथकोधनुषप्रमान।जौमैंजानिकहतहैजान॥जौनीदिशा
विजयकोजैये।वाहीदिशिप्रस्थानधरैये८१॥नरेंद्र॥जिनको
कहतभूपदशबासर तेनिवसतप्रस्थाने । जोसामंतआ
हितिनको पुनिबासरसातबखाने ॥ यजनऔरपांच
दिनतिनको कबिवरकहतसयाने । शुभदिनजानिप्रात
करिमज्जन सज्जनकरतपयाने८२ गमनद्योसतेरहेसात
दिन मैथुनकरमनकीजे । जोबहुकामीहोइमहीपति एक
द्योसकहिदीजै ॥ रहेतीनिदिनदूधनपीवे छारेपांचादिन
कहिये । तैलमधुरतजिगवनदिवसमें जोमंगलनिजुच
हिये८३॥दोहा॥तैलमांसगुड़लवणजेखातगमनकेकाल॥
तेरोगीह्वैनिजभवन आवतपुहुमीपाल ८४ द्विजकोकै
निजनारिको चलतकरतअपमान ॥ देशदेशभरमतफि
रततेनरमरतनिदान ८५ ॥ नरेंद्र ॥ पौषआदिजेचारिमा
सहैं तिनमेंजोघनबरसै । ताहिअकालवृष्टिसबभाषत
गमनसमयदुखसरसै ॥ जोनरपशुनचरणसोंअंकित भू
मिगमननहिंकीजे । थोरेबुंदहोहिंतोजैये कहतसुकविसु
निलीजे ८६ ॥ दोहा ॥ अल्पवृष्टिसोअल्पमं देखबखा
नतजान ॥ बड़ीवृष्टिमेंदोषबहु कीजेतौनपयान ८७
गरजैकैबरषैजलद गमनसमयानियराय ॥ सोनेको
रविचन्द्रमा दीजैद्विजहिबुलाय ८८ जाकोअसगु
नगमनमें परैनजरिमेंआइ ॥ घिवसुवर्णकोदानदै पुनि

चलियेसुखपाइ ८९ ॥ अथशकुनानि ॥ घनाक्षरी ॥ विप्रवर तुरगदुरदफलअन्नपय धेनुसरषपकौलसुबरणदेखिये। वारबधूदुंदुभीकोशबदनकुलचाख वाधोपशुमांसुऔअछतऊखपेखिये ॥ सुवचनसुन्कुमसजलघटसन्मुखछत्र माटीरतनकुमारीअवरेखिये। शिरकोबसनसेतवृषभुअवद्धमदु गमनदेखैंतौसगुनशुभलेखिये ९० अगिनिकी ज्वालऔसपुत्ररूपवतीनारि दरपणकज्जलसहितकोऊ आवई । लीन्हेधोयेबसनरजकआनिआगेमिलै मीन धृतलखिछागहियोसुखपावई ॥ रोदनरहितसबपीछेसिंहासनमधु धनुषपताकाधनुरोचनसुहावई । भरदासुखासननिगमधुनिसगुनये गमनमेंमंगलकेगीतकोऊगावई ९१ ॥ दोहा ॥ जाकेपीछेसलिलबिनकलशमिलैजोआइ। बड़ोसगुनयहजानिये कहतसुकविसमुदाइ ९२ ॥ अथलग्नेशनुशकुनम् ॥ दोहा ॥ लगनवृहस्पतिशुक्रजो गमनकरै नृपकोइ ॥ तीनिविप्रमगमेंमिलैं बड़ोसगुनयहहोइ ९३ बुधउशनाकंटकभवन मिलैसबत्सागाइ ॥ यहोसगुनशुभजानिये कहतसुकविसमुदाइ ९४ जोदशयेंरविचन्द्रमा मिलैसुमनऔदीप ॥ दर्पणरजकसबस्त्रपुनि करतपयानमहीप ९५ बुधपंचमगूढ़ोवृषभ मिलैसामुहेआइ ॥ गुरुशशितीजेबामदिशि मिलैश्वानसुखपाइ ९६ नवयें दशयेंग्यारहें परेसबैग्रहजासु ॥ नकुलचाषभरदामिलै बामओरमेंतासु ९७ रविरविसुतस्वर्भानुजो होइतीसरे गेह ॥ सुभगाप्रौढ़ाकन्यका मगमोमिलैसनेह ९८ लाभकर्मरिपुतीसरे परैअवनिकोनन्द। मदिराऔरवरांगना मिलैचलतसानन्द९९ सप्तमअष्टमपांचयें जीवबुधौजो

होइ॥ कुसुमसुरापल्लदर्पनी सन्मुखल्यावेकोइ २०० भौ
मराहुशनितीसरे पैगमनमेंजाहि॥ दगमगगोमयको
नकर मगमेंआवेताहि १॥ अथ अशकुनमाह॥ दंडक॥ बंध्या
बूसीचरमउरगहाड़लोनुअरु ईंधनअंगारुतेलऔषध
नदेखौजू। बसाभतवारेरिपुरोगीऔजटिलतृण संन्या
सीनगिनक्षुधापीड़ितनपेखौजू॥ तेलजोलगायेबिनना
ककोकलंकीगुड़ रुधिरस्वगहैदाहमतिअवरेखौजू। पुष्प
वतीसरठाबिलारिनकोयुद्धछींक गमनकेसमैअसगुनए
तेलेखौजू २ कीचतक्रगेरुसोंबसनरँगेजाकेनिजकुरुमामें
कलहकुबिजलखिडरिये। बिधवाअसितअन्नमहिषसमर
क्रोधीमुंडितगरभवतीआवेननजरिये॥ आँधरेबधिरदुर
वचनबसनभीजैखररवदाहिनेश्रवणमेंनकरिये। गोधाको
लशशकउरगकोहैनामशुभ देखिकैऔबोलिबोअशुभप
रिहरिये ३॥ दोहा॥ नदीतरतभयसमरमें बस्तुहिरानीहो
इ॥ इनमेंअसगुनहैभलो सगुनभलोनहिंकोइ ४ पिकप
ल्लीकोलीरला स्यारछछूंदरिआइ॥ बहुरिपिंगलाबाम
दिशि सदाकहेसुखदाइ ५ सिकरावासाचाखमृगचातक
वानरिश्वानि॥ कवईरीछिनिदाहिने होतसदासुखदानि ६
वोजहरिनखगदाहिने सदाहोतसुखदानि॥ खररवबाईं
ओरपुनि जानकहतहैजानि ७ पहिलोअसगुनहोइजो
गेरहप्राणायाम॥ कीनेपुनिचलिहूजिये पैयेअमितअ
राम ८ दूजेमेंषोड़शकहै तीजेगमननहोत॥ ग्रंथनको
मतजानिकै कहतकविनकेगोत ९॥ अथ प्रवेशनिर्गम॥ दोहा॥
जोबिदेशतेआइये ध्रुवमृदुमेंगृहजाउ॥ पुनिचलियेतौक्षि
प्रमेंचरमेंइहैउपाउ १०॥ नरेन्द्र॥ करैप्रवेशहीसमेंनरपतितौ

ताकीतियनासै। गेहवासुपुनिकहतअनलमेंदारुणसुत हितरासै॥ करतप्रवेशउग्रमोजेवेतिनकोमरनबखानों। हैं येवचनऋषिनकेभाषेसुनतसांचुकैमानों ११॥ अथयात्रासमयेदोषवर्णनम्॥ नरेंद्रश्री॥ अपनादोषनक्षत्रमासतिथि कालवासपुनि। बारशूलसंमुखमितज्ञादिक ईसकहतमुनि॥ बक्रतादिभृगुपरिघदंड तियअसुभदोषजो। सूतकऔमृतपक्षरिक्तछठि भानुरोषजो॥ भुवनंदमंदरविदोषविधु वामपृष्ठपुनिअडलकहि। यमदिशहिजानपंचकभिजित मनेकरतकाबिवरनृपहि १२ जन्मराशितनुतेजुआठईं लगननआवे। छठेनरिपुकीराशितासुपतिलगननपावे॥ कुंभमीनलवसहित दोषएकपरिहरिये। पृष्ठोदयशनि दशम सातयेंभृगुसोंडरिये॥ कंटकप्रतीपगृहदोषजो अरुबिवाहवासरकहत। वरणातसुजाननृपनरनसे गणितविचारतजेरहत १३॥

इतिश्रीशंभुनाथकृतेमुहूर्त्तकल्पद्रुमेयात्राप्रकरणम्॥

अथगृहारंभः॥ दंडक॥ नवमदशमअरुग्यारेंहेंभवनदूजे आपनीजोराशिते नगरराशिआवई। तामेंकरैवास तोउदासतानताकोकछु पूतनातीसंपतिअनेकसुखपावई॥ कीजैपुनिआपनोबरगाद्विगुणितआनि तामेंगानिगूंथि परबरगमिलावई। लीजैभागआठकोअधिकअंकजाके रहैं सोईसुखदेतधनुदेतसबगावई १॥ अथद्वाराविधि॥ चौपाई॥ कर्कमीनवृश्चिकमेंद्वार। कीजैपूरबकहतउदार॥ कन्या मकरवृषभदक्षिणमें। मिथुनतुलाघटपश्चिमइनमें २ मेषसिंहधनउत्तरकीजै। कहतसुकविसिगरेसुखलीजै॥ गोहरिमकरमिथुनेयरासी। मध्यनगरमेंहोतनवासी३ अ

लिभ्रूषजुवतिकर्मधनजानी। तुलामेषछठब्रहुरिब्रखानी॥ पूरबादिक्रमतेनहिंबसै। बासकरैसोनृपत्रसै४॥ दोहा॥ अकचटतपयसवर्गये कविनकहेसबजानि॥ शत्रुवर्गमेंजो

	पू० ४ ८। १२		ई० ११ अशुभ	पू० ८ अशुभ	१२ आ० अशुभ
१। उ० ५। ९	नर राशि ते जान।	द० ६। १०। २	उ० १ अशुभ	७। ५। ११ ३ अशुभ	द० ६ अशुभ
	प०११। ७ ३		वा० ७ अशुभ	प० ९ अशुभ	अशुभ ४ नै०

बसे ताहिहोतदुखदानि५॥ अथध्वजादिअष्टआपण॥चौपाई॥ दौरछताग्रहकीजोकीजै। सोचकराईसोंगुणिदीजै॥ ताको कहतक्षेत्रफलनाम। सोसब ठौरनआवेकाम ६॥ दोहा॥ जोनकहातवक्षेत्रफलअष्टभागऔशेषु॥ अष्टआपध्वज आदिदैजानिलेहुकरिशेषु ७ ध्वजऔ धूमरसिंहश्वागोखर

ई० स०	पूर्व अ०	आ० क०
उ० य०	स्ववर्गतेपंच मअशुभ	दक्षिण च०
प वा	प० त	ट० नै०

गजऔकाक॥ कहतनामयेगणितमें जेपंडितपरिपाक८ ध्वजहरिगोगजचारिये आवतहैंग्रहकाज॥ शेषरहेतेअशुभहैकहतसबैकविराज ९॥ अन्यप्रकार॥ व्याहनषतजो भूपको तामेंएकघटाइ॥ तासोंगुणियेनेनतिथि कहतसबैकविराइ १० आठआपमेंजोनहै तामेंएकघटाइ॥ तासोंगुणियेइंदुगज दीजैताहिमिलाइ ११ लैपुनिसत्रहजोरियेभूपनेनसोंभाज॥ शेषरहैसोक्षेत्रफल कहतजोहैक

विराज १२ लैभूफलमेंभाजिये जैकरकरैअगार ॥ जोक छुभाजेपाइये ताहिकहतविस्तार १३ ॥ अध्वलादिमुख। नरेंद ॥ जोध्वजुचहूंदिशामुखकरिये हरिकोकहतसयाने। पूरबदक्षिणउत्तरहूमें कहतसुमुनिसुखमाने ॥ वृषकोकेवलदेवदिशामें सदनुबदनगणिभाषे ॥ पूरबदक्षिणदिशा दुरदको सदासुकविअभिलाषे १४ ॥ अन्यप्रकार ॥ गोगो अंगनागगुण वसुवसु वेदनागहमभाष्यो। इनसोंगुणहु क्षेत्रफल क्रमतेइहै मुनिनअभिलाष्यो॥वसुमुनिअंक

ध्वजादीनांमुखचक्रम्।

ध्वज	सिंह	वृष	गज
अष्टदिशा मुख	पूर्वदक्षिण उत्तर	पूरब दिशा	पर्व दक्षिण

भानुगजउडातिथि उडषभानुअवरेखौ। आपवारअंशक धनारिनउडातिथिपतिआवहिलेखौ १५॥दोहा॥ जोगृहका नक्षत्रहै बसुसोभजियेताहि ॥ शेषरहैवेजानिये सतक विकहतसराहि १६॥ दोहा ॥ जेध्रुवादिशालाव्रण व्यय

६	६	६	८	३	८	८	४	८	गुणाक
८	७	६	१२	८	२७	१५	८७	१२०	भाजकफलम्

मेंदेहुमिलाइ ॥ बहुरिक्षेत्रफलजोरिये कहतसुकविसमुदाइ १७ भागलीजियेतीनिको बाकीअंशकजानि ॥ इंद्र बहुरियमभूपकहि अंतकअशुभबखानि १८ ॥ अथध्रुवादि शाला ॥ दोहा ॥ पूर्वादिदिशिचारिमें जहँजहँशालाहोइ ॥ तिनकेअंकबखानिये कहतसुनौसबकोइ १९ एकदोइयुगआठपुनि तामेंएकमिलाइ ॥ गृहध्रुवादिगनिलीजिये

कहतसुकविसमुदाइ २० ध्रुवौधान्यजयनंदषर कांतम नोरमश्रौर ॥ सुमुखौदुर्मुखउग्रकहि श्रहितसुकबिशिर मौर २१ धनदनाशश्राक्रंदपुनि विपुलविजयमनमा

ध्रुवादिचक्रम् ॥

ध्रुव	धान्य	जय	नन्द	पर	कान्त	मनोरम	सुमुख
२	२	२	२	२	२	४	३
दुर्मुख	उग्र	श्राहि	ध - द	नाश	श्राक्रंद	विपुल	विजय
३	२	३	३	२	३	३	३

नि ॥ सोरहशालासदनमें जानकहतसबजानि २२ ॥ श्रथमासभेनंगृहद्वार ॥ चौपाई ॥ फागुनहोहिंकुंभमेंभानु । पूरब परगृहबदनबखानु॥ श्रावणसिंहकर्ककेश्रावै। पूरबपश्चि मबदनबनावै २३ मृगकेपौषमासमेंहोइ ॥ पूरबपरभा षतसबकोइ । श्रजवृषमाधौमेंजबसुनो । द्वारउदीची दक्षिणगुनो २४ मारगमासतुलाश्रलिकेरवि। उत्तरदक्षि णबदनकहतकवि ॥ ध्रुवमृदुवरुणस्वातिबसुकरमें । पु ष्यसमेतदेतसुखघरमें २५ सूतीगेहबनायोचहो । नषत पुनर्वसुहीमेंकही ॥ श्रभिजितश्रवणबहुरिजबश्रावे । दे हीमेंप्रवेशसबगावे २६ जबरविचैतमेषकेहोइ ॥ गृहारं

द्वारविधिचक्रम् ॥

फाल्गुण	श्रावण	पौष	बैशाख	मार्ग	मास
११	४ । ५	१०	१ । २	० । ८	राशी
पूर्व पश्चिम	पूर्व पश्चिम	पूर्व पश्चिम	उत्तर दक्षिण	उत्तर दक्षिण	दिशा:

भभाषतहैंकोइ॥ वृषकेज्येष्ठमासमेंआवे। कर्कटकेअषाढ़मेंगावे २७ सिंहराशिकेभादौंमास। तुलाक्कांरमेंकहतप्रकास॥ अलिकेकातिकमाहँबखानत। पौषमासमृगकेजियजानत २८॥ दोहा॥ करियेमंदिरमाघमें मकर कुंभकेहोइ॥ आपनमतअवलोकिकैं बरणतपंडितकोइ २९॥ श्रीपति॥ शोकधान्यमृतिधनतिथिहोइ। द्रव्यबिनाशयुद्धकहिकोइ॥ मृत्युनाशधनलक्ष्मीगुनी। अगिनिलक्षिभाषतहैमुनी ३०॥ दोहा॥ चैतआदिजे मासहैं तिनकोफलयहजानि॥ यहैमतौउतकृषहै कहत सुकविगुणखानि ३१॥ अथतिथिपक्षवशेनगृहमुखं॥ परिवाते

चैत्रादिमासफलम्॥

चै	बै	ज्ये	आ	श्रा	भा	क्का	का	अ	पो	मा	फा	मासा
शोक	धान्य	मृति	धननाश	धनवृद्धि	विनाश	युद्ध	मृत्युदोष	धन	लक्ष्मी	अग्निभय	लक्ष्म्या	फलानि

आठेलोघरको। कृष्णपक्षपूरबमुखहरको॥ नवम्यषटपाखअँध्यारे॥ उत्तरमुखमतिकरौदुवारे ३२ आमातेआठेलोगने। शुक्लपक्षमुखपश्चिममने॥ पुनिनवमीतेचौदशिअंत। सितमेंदक्षिणबरजतसंत ३३॥ दंडका॥

तिथिवसेनद्वारचक्रम्॥

कृष्ण		कृष्ण		शुक्ल		शुक्ल	
१	५	९	१३	३०	४	९	१२
२	६	१०	१४	१	५	१०	१३
३	७	११		२	६	११	१४
४	८	१२		३	७		
					८		
पूर्व अशुभ		उत्तर मुख अशुभ		पश्चिम अशुभ		दक्षिण अशुभ	

अथवृषचक्रम् ॥ दण्डक ॥ तीनिशिरपरेतेअगिनिदाहहोत चारिअगिलेचरणउदवसरहियतुहै । चारिपीछेपाइथि रपीठिमेंपरेतेतीनिलक्षिदक्षिकुक्षाचारिबसुलहियतुहै ॥ तीनिपुच्छस्वामीकोबिनाशवेदवामऔर दोरतीनिमुख परैपीड़ासहियतुहै । सूरजकेनखततेलैदिनकोनखतग

वृषचक्रम् ॥

३	४	४	३	४	३	४	३
अग्निदाह	उद्वास	स्थिरत	लक्ष्मी	धन	स्वामिनाश	भ्रमण	पीड़ा

निमंदिरकोचारुयोंविचारुकरियतुहै ३४ ॥ चौपाई ॥ सूरनखततेशशिलौंगनै । सातअशुभगेरहशुभभनै पुनिदशअशुभताहितजि

गृहारम्भचक्रम् ॥

८	११	१०
अशुभ	शुभ	अशुभ

देउ । गृहारम्भकोदिनकहिदेउ ३५ ॥ नरेंद्र ॥ अबलअ स्तपुनिनीचराशिमें रविशशिबुधभृगुचारयो । क्रमते गृहपतियुवतिपुत्रधनमुनिनविनाशविचारयो ॥ शशि कोनखतसदनहूकोपुनि पृष्ठसामुहेंआवै । उदवसरहै सदनमुनिवरणतनिशिकोचोरसतावै ३६ ॥ दोहा ॥ स्वा मीकोअरुगेहको नखतजुएकैहोइ ॥ तौविनाशगृहना थको कहतसुकविसबकोइ ३७ ॥ अथ दिशिदिशिनक्षत्र॥ कृ त्तिकादिअभिजितसहितकहतकविनकेनाह॥सातसात ताराबसैं पूरबादिदिशिमाह ३८ ॥ नरेंद्र ॥ रिक्तातिथिऔ अमाप्रतिपदाइनमेंगेहनकरिये। बुधपंचकचरलगनछो ड़िके रविमंगलपरिहरिये ॥ साधुमृत्युव्ययभौनछोड़िकै औरहितैकरिमानो। छठेग्यारहेंशत्रुभवनमेंपापखेटशुभ जानो ३९ ॥ राहुमुखजानुम् ॥ चौपाई ॥ मीनमेषवृषकेरविआ

वै। तबशिवदिशाराहुमुखगावै ॥ मिथुनकर्कहरिबाइव भाषे। तियघटअलिनैर्ऋतअभिलाषे ४० धनमृगकुंभअगिनिदिशिरहै। राहुबदनासिगरेजगकहै ॥ जौनेदिनसुरगरहानिअभेरे ॥ पीठिऔरतमकोमुखकरे ४१ नरवरसदनसिंहतेगनिये। करतकूपसरमृगतेभनिये ॥ तीन्योतीनिराशिभरिरहै। उलटीऔरविदिशिपुनिगहै ४२॥ दोहा ॥ देवसदननरवरसदन औरजलाशयकाज ॥ पीठिदियेतमकोवदन होतसकलसुखसाज ४३ ईशादिशा

राशि० १२। १२। ५। ६। ७। १०। ११। १२	देव नर जल	आग्नेय ६।१०।११। दे ८। ३। ४। नर ७। ८। ६। ज	ई० पुष्टि	पू० राज्यप्राप्ति	आ० पुत्रनाश
वा० ८ उ	१२ देव नृ ५ मनुष्य १०जला		उ० सौख्य	म० द्रव्यनाश	द० स्त्रीनाश
वायव्य ३। ४। ५ द ८। ६। १० न १। २। ३ ज	नैर्ऋत्य ६। ७। ८ देव ११। १२। १ न ४। ५। ६। ज		वायव्य शत्रुतेपीड़ा	प० संपति	नै० मृत्यु

ई० देवपूजा सर्ववस्तु औषध	पू० तक्र स्नान	अ० रसोई
उ० खजाना	शालाचक्रम्	सोइबो द० सेतखानो
मैथुन अन्न वा०	प० भोजन	हथियार पैठब नै

जोराहुमुख निजमुखकरिआगिनेउ ॥ जोबाइबतौरक्षादिशिसन्मुखह्वैनियदेउ ४४ ॥ अथ कूप विचार ॥ पूरबपश्चिमउत्तरै ईशदिशामेंकूप॥ कीन्हेंमंदिरतेलहे सकलसम्पदाभूप ४५॥ अथशाला विधि॥ चौपाई ॥ पूरबदिशिअन्हान

कोधाम। कियेहोतसिगरेमनकाम॥आगिनेयदिशिकरौर
सोई। दक्षिणदिशारहौपरिसोई ४६ नैऋतदिशाहथ्या
रधरैये। पश्चिमदिशाबैठिकैखैये ॥ बायबदिशाअन्नअ
भिलाखो। उत्तरदिशाखजानाराखो ४७ देवदिशादैवत
गृहकरो। जाहिपूजितनमनदुखहरो ॥ पूरबआगिनेयके
अंतर। तक्रभवनकविकहतनिरंतर ४८ आगिनेयदक्षि
णकीसंध्य। घिवघटभरिधरियेमुखबंध्य॥ दक्षिणनैऋत
केमधिआनि। करतसेतखानोनृपजानि ४९ नैऋतवरु
णमध्यजोआला। तहांकरौपढ़िबेकीशाला ॥ पश्चिम
औबायबकेभीतर। रोदनयोगकहतसबमुनिवर ५० बा
यबउत्तरकोमधिजौन। हैसंभोगयोगगृहतौन ॥ उत्तरई
शादिशामधिजोहै। औषधधरनयोगथलजोहै ५१ ईश
पुरंदरअंतरमाह। सकलबस्तुराखतनरनाह ॥ षोडशगे
हकविनयेभाषे। जोसुनिमुनिजनहूंअभिलाषे ५२ ॥अथ
तत्कालविचार॥ तनमेंगुरुरिपुभानुसातयें बुधचौथेभृगुपैये।
तीजेशनिजोगृहअरंभकरि तौसबबरषबितैये॥तनुमेंभृगु
रविसहजछठेकुज गुरुपंचमगृहलहिये। तौद्वैशतबरषे
गृहजोवो जाननृपनसोकहिये ५३ तनुमेंभृगुजसोमसुत
अंबर लाभदिवाकरआवे। कंटकजीवरहेशतवरषे सद
नसुकबिसबगावे ॥ चौथेजीवदशमशशिप्रापति धरणि
तनयअरुमन्द। तौवहरहैअसीवरषनभरिसदनसदाआ
नन्द ५४ शुक्रलगनमेंमीनराशिको कैगुरुकरकटहीके।
होइतुलाकोलगनपरेशनि कहतसुकविअवनीके ॥ ऐसे
सदनरहैजोगृहपति सुखअनेकतबपावे। तामेंरहैबासल
क्ष्मीको प्रगटसकलजगगावे ५५ जोगृहपरनबासमेंए

कौ दशमसातयेंआवे। परहथजाइगृहजाको तौनजाइ परकरमें॥ यहमतसमुभिबूभिकेभाषत जेआतिवरक विवरमें ५६ ध्रुवमृगपुष्यश्रवणजलपतिअहि इनहींमे गुरुपैये। गुरुहीकेदिनकरैसदनतिहि राजपुत्रफलहैये॥ वसुशिवअश्विनिवरुणविशाखा तक्षसहितभृगुजानो। भृगुकेवारअन्नधनपूरण मंदिररहैबखानो ५७ मघारेवती मूलपूरवाषाढ़पुष्यकरइनमें। भौमहोइमंगलमेंकरिये स दनभौमकेदिनमें॥ जोनरकरैयोगएसेमेंताहिहोइसुतपीड़ा॥सिद्धभयेपरकहतसुकविवर जरेआगिनिसोंनीड़ा ५८

बृ०	भृ०	मं०	बु०	श०
उ० उ० उ० रो० म० पु० श्र० पू० षा० श्ले० बृ०	ध० आ० अश्वि० श० विशा० चि० भृ०	म० रे० मू० पू० फा० पु० ह० भौम०	अश्वि० उ० रो० चि० ह० बु०	उ० म० पू० भा० स्वा० भ० ज्ये० अनु० श०
राज्यपुत्र	अन्नधन पूरण	पुत्रपीड़ा अग्नि भय	महासुख	प्रेतवैठे

अश्विनिप्रथमउत्तरारोहिणि चित्राकरजबआवे। इनहीं मेंबुधहोइबुद्धदिन कियेसदनसुखपावे॥ शनिसोकियेश निबासर भूतभौनमेंनाचे ५९ ॥ अथचौकठिबैठारिबेकोमुहूर्त्त ॥

२ उद्वसन	४ ६ लक्ष्मी	२ उद्वसन
४ सौख्य	सौख्य ४	सौख्य ४
उद्वसन २	मृत्यु ६	उद्वसन २

सूरजनखत ते लैदीजियेन खतचारि लक्ष्मीकोशिरमें विचारिपाइयतुहै। कोननि मेंआठपुनिकहिये उपाठगे हुआठपरै बाजुनमेंसुखदा इयतुहै॥ देहलीमेंतीनिजो

परैतौग्रहनायककेश्रोननिमें शंकामीचुकीसुनाइयतुहै ॥ परैमध्यवेदतौश्रखेदहोतग्रहपति संपतिसमेतसुखभौन छाइयतुहै ६० ॥ इतिश्रीत्रिपाठिशंभुनाथकृतेमुहूर्त्तकल्पद्रुमेगृहारंभप्रकरणम्।

अथगृहप्रवेशप्रकरणम् ॥

नरेंद्र ॥ माधवज्येष्ठमाघजेंये ॥ ध्रुवमृदुनखतलीजियेर विकुजइन्हेंनभूलिसुनैये ॥ थिरद्विदेहद्वैभांतिलगनलैश्र शुभतिथीपरिहरिये॥देवलिदिशाश्राठहूविधिसोंहवनदा नबहुकरिये १॥दोहा॥जनमलगनश्रौराशिजोउपचयमंदि रश्राइ।परैप्रगटनूतनसदनगमनकहतकविराइ २ ॥नरेंद्र॥ जरैगेहकैजलसोंबूड़ैछूटिजाइनृपडरते। श्रथवाहोइपुरा नोमंदिरछुटयोहोइनिजधरते ॥ तामेंश्रावणमासकारति कमारगहूमेंजैंये। सुदिनबूझिलीजैद्विजमुखतेतौश्रनेक सुखपैये३॥दोहा॥पुष्यधनिष्ठाशतभिषा स्वातिनखतजब होइ। तबप्रवेशकोकीजियेश्रस्तनमानतकोइ४मूलमृदु ध्रुवाक्षिप्रचरइननखतनकोपाइ॥सदनपूजिकैभूतबलिदी जतुहैसुखपाइ ५ ॥नरेन्द्र॥कंटककोनग्यारहेंदूजेसहजसाधु ग्रहलीजै।त्रिषटग्यारहेंजेश्रसाधुग्रहतिनकोबैठकदीजै ॥ श्रंबुश्राठयेंसदनशुद्धपुनि जन्मराशितनुजोहै ॥ तातेजो श्रष्टमसोकबहूंतनुमंदिरमतिसोहै६॥ दोहा॥श्रागेद्विजपूर णकलशसुहृदलीजियेसाथ॥ भृगुनंदनकोपीठिदैवामश्रो रदिननाथ ७ नूतनगृहमेंजेकरें याहीविधिपरवेश॥ पावें तेसुखसंपदा वरणतसुकविनरेश ८ ॥ चौपाई ॥ जोपूरव मुखहोहिदुवार ॥ ताकोमैंकरिकहतविचार ॥ जौनीलग नमुहूरतपावै ॥ तातेजोश्राठईकहावै ९ तातेपांचठौ रजोभानु। वामसूरवाहीकोजानु ॥ दक्षिणमुखपँचईते

जानौं। पश्चिममुखदूसरोबखानौं १० उत्तरवदनगेहको होइ। ग्यरहेंहेततजानवसोइ ॥ यहिविधिवामभानुकी कही। हैअतिसुखदमानवीसही ११ ॥ दोहा ॥ पूरवमुख कोपूर्णा नंदादक्षिणलेहु ॥ भद्रावरुणकुवेरादिशि जयाव रुणकहिदेहु १२ ॥ दंडक ॥ पूरवदिशामेंनोसदनकोबद नलीजै आठईलगनकोगणततकालमैंताते। पञ्चरा शिलौंजोहोहिदिनकरताहि वामरविकहतसुनीमेंकविजा लते ॥ पांचईतेदक्षिणप्रतीचीमुखदुसरीते ग्यारहींतेउ तरबदनगानिहालते। पूरवादिपूरणासुनन्दाभदाजया माहँ पाइयेअनेकसुख भूपतिविशालते १३ ॥ सूर

वामरविचक्रम्

पूर्व्वम्	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
लग्नेरवि ८	लग्नेरवि ५	लग्नेरवि २	लग्ने रवि
९	६	३	१२
१०	७	८	१
११	८	५	२
१२	९	६	३
पूर्वम्	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
५।१० १५	२।६ ११	२।७ १२	३।८।१३

कुम्भ चक्रम्

ह्र ४ उद्वसन
१
३ स्थिरता
अग्निदाह
उत्तर मध्यम दक्षिण
४ कलह ४ धिनाश लाभ ४
पश्चिम
४
श्री
पदा
३ स्थिरता

जनखततेकलशमुखदीजैएक तातेगेहअगिनिकीज्वाल सोंजरतुहै। चारिचारिनखतविचारिचहुंदिशनिमें दीजे फलताकोजानपरेनटरतुहै ॥ उद्वसलाभलक्षिकलहबहु रिमध्यवेदमें परेतेआशुप्राणनिहरतुहै। तीनिपरेंपेदीमें अनेकधनपावेतीनि कंठमेंपरैतौगेहथिरताकरतुहै १४ ॥

अथगृहप्रवेशविधि ॥ घनाक्षरी ॥ तीनियेवितानमुकतनिसोंसमेतगान मंगलकेकाननसुधासीपीजियतुहै। वेदधुनिसुनतनगरसुरपूजिगुरुजनपुरजनसोंअशीशलीजियतुहै ॥ गनकचितेरे औरलोगजेघनेरे नेरेजोहितपुरोहितनदानदीजियतुहै ॥ विहसतवदनसुमनद्विरदनचढ़िनूतनसदनकोगमनकीजियतुहै १५ ॥

इतिश्रीमन्महाराजकुमारअचलसिंहाज्ञयात्रिपाठीशम्भुनाथकृते मुहूर्त्तकल्पद्रुमेगृहप्रवेशप्रकरणम् ॥

समाप्तंशुभमस्तु ॥

जैसीप्रतिपाईहती तैसीलईउतार।
भूलचूकजोहोयतोलीजोमित्रसुधार॥

श्रीराधाकृष्णजू अथाशीर्वाद घनाक्षरी ॥

जौलौंकोलनायककलानिधिकलपतरुकमठकी पीठिमेंनिवासजौलौंशेशको । देवमुनिमनुजदनुजगन्धर्वजौलौं मखनमेंअग्रभालपूजतगणेशको ॥ जौलौंहिमगिरिपरगिरिजासमेतशंभु जौलौंअमरावतीमेंसत्ताअमरेशको ॥ मानसरवरजलप्रफुलितकोलौंजौलौंतौलौंराजुराजैराजवंशीअचलेशको १ ॥

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने लखनऊ में छपी ॥
फ़रवरी सन् १८९२ई० ॥

दानों का विचार, वस्तु क्रय विक्रय विचार, सेवाधर्म विचार, राजसम्बन्धी गूढ़संवित समय संकेतों के व्यतिक्रमका विचार, वेतन, मजूरी, किराया आदि विषयक झगड़ोंका विचार, जुवारी आदि दुराचारियोंका विचार, गाली-गलौज तथा मार-पीटका विचार, चोर,डाकू, लुटेरे आदिकोंका विचार और नाना अपराधों और कुकर्मों तथा राजाश्रय नानाव्यवहारोंका अतिविस्तार पूर्वक बर्णनहै ॥

"प्रायश्चित्तकांड,, में जलदानप्रकार व अशौचसूतक दिनावधि कथन व सद्यः शौच व्यवस्था जगदुत्पत्ति प्रपंच विस्तार व बुद्ध्यादि समवाय व प्रायश्चित्त करणदोष व नरकादि नाम स्वरूप व अतिपातक और पातकादि लक्षणभेद व सकाम सुरापानादि महापातक प्रायश्चित्तकथन व स्वर्णापहारादि प्रायश्चित्त व अवकृष्टवध प्रायश्चित्त कथन और प्रत्येक बातोंकेस्वरूप व नियमादि वर्णनकियेगये हैं परन्तु यह विस्तृतग्रन्थ संस्कृतमें होनेके कारण सर्व साधारण के देखने में न आताथा इसकारण भारतवासी पुरुषोंके उपकारार्थ यन्त्रालयाध्यक्ष श्रीमान् मुन्शिनवलकिशोरने बहुतसाधन पारितोषिक की रीतिपर देकर आगरा निवासी मर्यादाप्रिय पण्डित दुर्गाप्रसाद शुक्लसे सरल साधारण भाषामें अनुवाद कराय स्वयन्त्रालय में मुद्रितकराया आशा है कि जो कोई मर्य्यादाप्रिय पुरुष इसको दृष्टिगोचरकरैंगे वे प्रसन्नहोकर इसको ग्रहण करैंगे और यन्त्रालयाध्यक्षको धन्यवाददेंगे—

मनुस्मृतिसटीकका विज्ञापन ॥

सम्पूर्ण धर्मशास्त्रों का अग्रणी व सकल धर्मानुरागियों से पूजित यह मनुस्मृतिग्रन्थ जिसकी मान्यता व मर्यादाका विस्तार अच्छेप्रकार संसारमें है—यद्यपि इसग्रन्थ के बहुतसे अनुवाद ब्रज, यामिन्यादि भाषाओं में कियेगये हैं परंतु उनमेंसे कोई भी ऐसा नहीं है जिससे प्रत्येक वार्ताओं का समाधान सब कोई सुगमता से समझकर उसके तात्पर्य्यको जानलेवै इसकारण सम्पूर्ण धर्म कर्मानुरागियों व विद्यारस विलासियोंके उपकारार्थ व अली-

गढ़की भाषा संवर्द्धिनी सभाकी सहायतार्थ सकलकर्म धर्म धुरीण मर्य्यादा लवलीन पुण्यपीन गुणिगणप्रवीन सर्वैश्वर्य्य भूषित दोषादूषित उत्तमवंशी दुष्टाशयध्वंशी श्रीमान् मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) ने बहुतसीद्रव्य व्ययकरके धर्मशास्त्राग्रगण्य सकलगुणिगण मण्डली मण्डन महामहोपाध्याय श्रीपण्डित मिहिरचन्दजीसे अन्यधर्मशास्त्रग्रंथों के तात्पर्य्यों से संबलित व सारोंसे मिश्रित और सकलटीकाओंके रहस्यों से युक्त उक्तग्रंथ का पदच्छेद अन्वय तात्पर्य्य व भावार्थ से भूषित अच्छे प्रकार देशभाषामें विवरणकराय मन्वर्थभास्करनाम तिलक मूलश्लोकों सहित लक्ष्मणपुरस्थ स्वयन्त्रालयमें मुद्रितकर प्रकाशितकिया—संसारमें यावत् कर्म धर्म चतुर्बर्ण अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, व चतुराश्रम अर्थात् ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ व संन्यासादिके हैं सविस्तार इसमें वर्णन कियेगये हैं—इसके सिवाय और भी सारे जगत्का वृत्त अर्थात् जगदुत्पत्ति स्वर्ग भूम्यादि सृष्टि वर्णन देवगणादिकोंकी सृष्टि धर्माधर्म बिबेक मनुजीकी उत्पत्ति व यक्षगन्धर्वादिकों की उत्पत्ति व मेघ, पशु, पक्षी, कृमि, कीट, जरायुज, अण्डज, स्वेदज, उद्भिज, वनस्पति, गुल्मलता वृक्षादिकों की उत्पत्ति, दिनरात्रि प्रमाण व युगोंका प्रमाण ब्रतादिकों के करनेका नियम व फल, देशोंका कथन मनुष्योंके जातकर्म व नामकरण व चूड़ाकरण यज्ञोपवीतादिकी क्रिया कथन वेदके अध्ययन करनेका ढंग व नियम व इन्द्रियोंके संयमोंके उपायोंका कथन आचार्य उपाध्याय व गुरुआदिका वर्णन पितृकर्ममें श्राद्धादि करनेका नियम निषेध व प्रायश्चित्तादि वार्त्तायें सब इसमें उत्तम रीति से सविस्तर बर्णन कीगई हैं—आशाहै कि जो विद्वद्वर धर्मशास्त्र व मर्यादाप्रिय महाशय इसको अवलोकन करेंगे वे परमानन्दितहो कृपाकटाक्ष से ग्रंथकर्त्ता व यंत्रालयाध्यक्षको आशीर्वाददेंगे और कदाचित् ऐसे वृहद् ग्रन्थके मुद्रण करनेमें कोई अशुद्धि रहगईहो तो उसका अपराध क्षमाकरेंगे ॥
